सरस भारती

भाग-1

छठी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

अनिरुद्ध राय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मार्च 1997 : फाल्गुन 1918

PD 275T SD

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी टी रोड सुखचर
नई दिल्ली 110016	बैंगलूर 560085	अहमदाबाद 380014	24 परगना 743179

रु. 20.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शैसिव्ध (दि लेजर पीपुल्स) सी 34, डी डी ए शैड, ओखला फेज-I, नई दिल्ली 110 020 द्वारा लेजर टाइपसैट होकर, क्वालिटी इन्टरप्राइजेज, 8246, नई अनाज मंडी, दिल्ली 110 006 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के साथ ही ऐसी शिक्षण-सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा जो इस नई शिक्षा नीति के उद्देश्यो की प्राप्ति में सहायक हो। इस नीति के अनुसार ऐसी शिक्षा की सकल्पना की गई है जो बाल केंद्रित हो और जिसमें बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाए। साथ ही इस शिक्षा-नीति मे भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों को केद्रित शिक्षाक्रम के रूप मे स्थान दिया गया है। यह एक दूरगामी नीति है जिसके प्रभावी क्रियान्वयन से भारत के नव निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान मिल सकेगा।

मातृभाषा की शिक्षा के द्वारा उपर्युक्त उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए छठी कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक किशोर भारती भाग-I सन् 1987 मे तैयार की गई थी। पिछले वर्ष यह सोचा गया कि उक्त पुस्तक के मूल्यांकन और सशोधन के लिए विभिन्न विद्यालयो (केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, दिल्ली प्रशासन के विद्यालय, पब्लिक स्कूल आदि) मे इस पुस्तक का प्रयोग करने वाले शिक्षकों से सुझाव माँगे जाएँ। इस दृष्टि से विभाग ने एक प्रश्नावली तैयार की। प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन शिक्षकों से प्राप्त सुझावो को ध्यान में रखकर किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है :

(क) पाठ्यसामग्री का चुनाव छात्रों की बौद्धिक क्षमता, रुचि तथा उनके लिए उपयोगिता को दृष्टि मे रखकर किया गया है। साथ ही पाठों के चयन मे केंद्रिक शिक्षाक्रम में सम्मिलित विषयो पर विशेष ध्यान रखा गया है।

(ख) विविधता और रोचकता की दृष्टि से पुस्तक मे वर्णनात्मक तथा विचारात्मक निबंध, कहानी, यात्रा वृत्तांत, जीवनी, संस्मरण, एकाकी आदि गद्य की विभिन्न विधाओ के नमूने सम्मिलित किए गए है। साथ ही प्रकृति-सौदर्य, देश-प्रेम, नीति तथा कर्तव्य-भावना से परिपूर्ण कविताएँ भी दी गई है।

(ग) पाठ की अपेक्षाओ को पूरी तरह उभारने की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के अत मे विस्तृत 'प्रश्न-अभ्यास' दिए गए है। इसमें 'बोध और विचार' स्तभ के प्रश्न छात्रो मे पठित वस्तु को समझने और उस पर विचार करने की योग्यता उत्पन्न करने मे सहायक होगे। 'भाषा-अध्ययन' मे दिए गए प्रश्न और अभ्यास छात्रो को पाठ्यवस्तु को समझने और भाषा का प्रभावी प्रयोग करने मे सहायता देगे। साथ ही उनसे उच्चारण, वर्तनी प्रयोग तथा वाक्यविन्यास सबंधी अशुद्धियॉ भी दूर हो सकेगी। 'योग्यता-विस्तार' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए क्रियात्मक अभ्यास से छात्रों के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यताओ का विकास हो सकेगा। अंत मे 'शब्दार्थ और टिप्पणी' के अतर्गत पाठ में आए कठिन शब्दों के प्रसगगत अर्थ बताए गए है और टिप्पणी में उन प्रसगो, व्यक्तियो, अतर्कथाओ आदि को स्पष्ट किया गया है जो विशेष परिचय की अपेक्षा रखते है।

(घ) पुस्तक के अत मे एक 'शब्द-कोश' दिया गया है जिससे छात्रों मे हिदी का शब्द-कोश देखने की कुशलता विकसित हो सके। इस शब्द-कोश में 'शब्दार्थ' के अंतर्गत लिए गए कठिन और अपरिचित शब्दो को अकारादि क्रम मे रखा गया है। अर्थ देते समय शब्द के केवल प्रसगगत अर्थ को ही लिया गया है। आवश्यक स्थानों पर अनेक समानार्थी शब्द दिए गए है जिनसे छात्र मिलते-जुलते अर्थवाले शब्दो मे अतर करना और उनमें से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना सीख सकेगे। कोश मे शब्द-रचना की प्रक्रिया को समझाने का प्रयत्न भी किया गया है, जिससे छात्र इसका उपयोग शुद्ध वर्तनी और रचना आदि का अभ्यास करने के लिए कर सकेंगे।

इस पुस्तक का निर्माण सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग के डॉ. अनिरुद्ध राय ने किया है, इसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, अनुभवी अध्यापको तथा भाषाशास्त्रियों का सहयोग मिला है, इसके लिए मैं उन्हे हृदय से धन्यवाद देता हूँ। जिन लेखको ने हमे अपनी रचनाएँ इस पुस्तक मे सम्मिलित करने की अनुमति दी है उनके प्रति हम आभार प्रकट करते है।

इस पुस्तक के विषय में अध्यापको और विद्यार्थियो की प्रतिक्रिया और सुझाव प्राप्त कर हमे प्रसन्नता होगी।

अशोक कुमार शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्

विद्यार्थियों से

सरस भारती का पहला भाग आपके हाथ मे है। यह मातृभाषा हिंदी की पाठ्यपुस्तक है। इस पुस्तक मे ऐसी कहानियॉ, कविताऍ, एकाकी, निबध आदि रखे गए है जो आप को रुचिकर लगेगे। पाठ्यपुस्तक में सकलित पाठो को पढने मे आप को आनद आएगा और आप की भाषा धीरे-धीरे विकसित होगी।

इस पुस्तक के पठन-पाठन मे आपके अध्यापक तो सहायता करेंगे ही पर इसमे ऐसे अनेक अश है जिन्हे आप अपने आप पढकर अच्छी तरह समझ सकते है। आपकी सहायता के लिए हम कुछ बाते नीचे दे रहे है। इन बातो पर ध्यान देकर आप इस पुस्तक से अधिक-से-अधिक लाभ उठा सकेगे

(क) भाषा का मूल रूप मौखिक है। जीवन के हर क्षेत्र में बोलने की आवश्यकता पड़ती है और हम अपने अधिकतर कार्य मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही पूर्ण करते है। बोलना एक कौशल है और उचित अभ्यास से ही इसका विकास होता है। अत इस पुस्तक के पाठो को घर पर बोलकर पढने का अभ्यास कीजिए। इससे न केवल आप के बोलने का ढग सुधरेगा अपितु आपको पाठो के विचारो को समझने मे भी सहायता मिलेगी और आपकी पठनशक्ति बढेगी। बोलने के कौशल के विकास के लिए अपने उच्चारण पर ध्यान दीजिए। आप का उच्चारण न केवल शुद्ध होना चाहिए बल्कि स्पष्ट, सुश्रव्य, भावानुकूल भी होना चाहिए।

(ख) आप पाठो को अच्छे ढंग से बोलकर पढने के साथ-साथ उनका मौन पठन भी कीजिए। इस प्रकार पढते हुए न तो आप के मुँह से आवाज निकलनी चाहिए और न ही होठ हिलने चाहिए। मौन पठन करने से आप अधिक गति से पढ सकेगे और पाठ के विचार भी आपकी समझ मे जल्दी और अधिक अच्छी तरह आते जाऍगे।

(ग) भाषा शब्दो से बनती है। आप अब तक हिंदी के हजारो शब्द जान गए है। इस पुस्तक मे कुछ नए शब्द आए है, जिनका अर्थ आप शायद नहीं जानते होंगे। आपकी सुविधा के लिए पुस्तक के प्रत्येक पाठ के अत में शब्दार्थ और टिप्पणी दी गई है। साथ ही पुस्तक के अत मे शब्द-कोश भी दिया गया है, जिसमे नए शब्दो के अर्थ दिए गए है। अध्यापक आपको इस शब्द-कोश का उपयोग करना सिखाएँगे। इस कोश से अधिक से अधिक लाभ उठाइए। यदि छठी कक्षा पास करते-करते आप इस शब्द-कोश के हर शब्द का अर्थ अच्छी तरह जान लेगे, उन्हे सही-सही लिख सकेगे और उन शब्दो का अपनी भाषा मे प्रयोग कर सकेगे तो आपकी भाषा की योग्यता सचमुच बढ़ जाएगी और आपको आगे की कक्षाओ में पढ़ने मे बडी सुगमता होगी।

(घ) भाषा यद्यपि शब्दों से बनती है पर शब्दो पर ही समाप्त नहीं हो जाती है। शब्दो का अर्थ जान लेना ही भाषा-ज्ञान नहीं है। शब्दों के परस्पर संबध से वाक्य बनते है और वाक्यो से अनुच्छेद। आपको मालूम होना चाहिए कि कोई शब्द या शब्दो का समूह वाक्य में क्या काम कर रहा है। इसके लिए भाषा का विश्लेषण अर्थात् भाषा के विभिन्न पक्षो को अलग-अलग समझना भी जरूरी है। हमने इसके लिए प्रत्येक पाठ के अत मे भाषा-अध्ययन, शीर्षक से कुछ अभ्यास दिए है। उन अभ्यासों को भली-भाँति समझकर पूरा करने से आपकी भाषा सुधरेगी और आप अपनी बात को अधिक प्रभावशाली ढग से कह सकेंगे और लिख सकेंगे।

(ड) लेखक या कवि शब्दो के द्वारा कुछ कहना चाहता है। उसके विचारो और भावो को समझने की कोशिश कीजिए। इसके लिए शब्दों में निहित विचारो तक जाने की आवश्यकता है। पढते हुए सोचने का काम जारी रखिए। बिना समझे रटने की कोशिश मत कीजिए। लेखक या कवि की बात को भली प्रकार समझकर उस पर अपने ढंग से विचार कीजिए।

(च) प्रत्येक पाठ के अत मे 'योग्यता-विस्तार' शीर्षक से कुछ अभ्यास दिए गए है। इस प्रकार के अभ्यास पाठो से मिली आपकी जानकारी को और समृद्ध और विस्तृत करेगे। साथ ही ये आपको अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए भी प्रेरित करेगे। इन अभ्यासो मे कई जगह आपसे पाठ के विषय से सबधित कोई पुस्तक या उसका कोई अश विशेष पढने के लिए कहा गया है। भाषा-योग्यता बढाने का सबसे अच्छा मंत्र है पढना, पढना और पढना। इसलिए आप पढ़े, खूब पढे। आपके विद्यालय मे पुस्तकालय अवश्य होगा। यदि किसी विषय पर कोई पुस्तक विद्यालय के पुस्तकालय मे नही है या किसी कारण से वह आपको मिल नहीं सकती तो उसके लिए अपने अध्यापक, पुस्तकालयाध्यक्ष या प्रधानाचार्य से प्रार्थना कीजिए। वे अवश्य ही आपकी मॉग पूरी करने का यत्न करेगे।

कुछ अभ्यासो मे लेखन-कार्य पर बल दिया गया है। इनके माध्यम से आप अपनी लिखित अभिव्यक्ति को विकसित कर सकेगे।

(छ) भाषा किसी एक व्यक्ति की सपत्ति नहीं है, वह समाज की उपज है। भाषा पढते समय हमारे अदर अच्छे सामाजिक गुणो का भी विकास होना चाहिए। इन गुणो में सबसे प्रमुख है सहयोग की भावना। इसलिए सबके साथ मिलजुलकर सीखिए। आप अकेले जितना सीखेगे उससे कहीं अधिक औरो के साथ काम करके सीख सकेगे। किसी पुस्तक मे अच्छी बात पढने पर उसके बारे मे अपने साथियो को बताना न भूले। इसी प्रकार अपनी कठिनाइयॉ बिना झिझक के औरो के सामने रखिए और दूसरों के अनुभव से सीखिए।

भाषा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान और आनंद की प्राप्ति है। हमे विश्वास है कि आप इस पुस्तक के सभी पाठो को लगन से पढेगे ताकि हिंदी के अध्ययन से आपको ज्ञान भी मिले और उल्लास भी।

आभार

इस पुस्तक के निर्माण मे कृपापूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् निम्नलिखित विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है :

श्री निरजन कुमार सिह, डॉ आनंद प्रकाश व्यास, प्रोफेसर माणिक गोविंद चतुर्वेदी, प्रोफेसर कैलाशचद्र भाटिया, डॉ श्यामबिहारी राय, डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, डॉ मानसिह वर्मा, श्रीमती सयुक्ता लूदरा, श्री प्रभाकर द्विवेदी, डॉ इंद्रसेन शर्मा, डॉ जयपाल सिह तरंग, डॉ कमल सत्यार्थी, डॉ सुरेश पत, डॉ देवराज पथिक, डॉ (श्रीमती) सुधा सक्सेना, श्री राजकुमार, कुमारी इंद्रा सक्सेना, डॉ (श्रीमती) पुष्पलता श्रीवास्तव और डॉ (कु) नीरा नारग।

पाठ सूची

1. एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश

एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश,
इस झंडे के नीचे निश्चित एक अमिट उद्देश्य।
देखा जागृति के प्रभात में एक स्वतंत्र प्रकाश,
फैला है सब ओर एक-सा एक अतुल उल्लास।
कोटि-कोटि कंठों में कूजित एक विजय-विश्वास,
मुक्त पवन में उड़ उठने का एक अमर अभिलाष !
सबका सुहित, सुमंगल सबका, नहीं वैर-विद्वेष,
एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश।
कितने वीरों ने कर-करके प्राणों का बलिदान,
मरते-मरते भी गाया है इस झंडे का गान।
रक्खेंगे ऊँचे उठ हम भी अक्षय इसकी आन,
चक्खेंगे इसकी छाया में रस-विष एक समान !
एक हमारी सुख-सुविधा है, एक हमारा क्लेश,
एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश।
मातृभूमि की मानवता का जाग्रत जयजयकार,
फहर उठे ऊँचे से ऊँचे यह अविरोध, उदार।
साहस, अभय और पौरुष का यह सजीव संचार,
लहर उठे जन-जन के मन में सत्य अहिंसा प्यार !

अगणित धाराओ का संगम, मिलन तीर्थ-सदेश,
एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश।

— सियारामशरण गुप्त

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1. कवि ने इस कविता में 'एक' शब्द को बार-बार क्यो दोहराया है?
2 'कोटि-कोटि कंठो में कूजित एक विजय-विश्वास' पक्ति मे क्या शब्द सौदर्य है?
3. 'चक्खेंगे इसकी छाया मे रस-विष एक समान' पक्ति से मिलते-जुलते भाव वाली अन्य पक्ति इस कविता में कौन-सी है?
4 कविता की किन पक्तियो का आशय है
(क) हमारे राष्ट्र का उद्देश्य सबका हित-चिंतन और सबके कल्याण की भावना है।
(ख) कवि अभिलाषा करता है कि जन-जन के मन मे सत्य और अहिंसा के प्रति प्रेम भाव बढे।
5. 'मातृभूमि की मानवता का जाग्रत जयजयकार' पक्ति का अर्थ है
(क) मातृभूमि के मानवीय गुणो का जयघोष।
(ख) मातृभूमि का जयजयकार करके मानवता को जगाना।
(ग) मातृभूमि की विजय पर हर्ष-उल्लास व्यक्त करना।
(घ) मातृभूमि मे मानवता का प्रचार करना।
6 भाव स्पष्ट कीजिए
(क) रक्खेंगे ऊँचे उठ हम भी अक्षय इसकी आन।

(ख) एक हमारी सुख सुविधा है, एक हमारा क्लेश।

(ग) अगणित धाराओ का संगम, मिलन तीर्थ-सदेश।

योग्यता-विस्तार

1 देश की मान रक्षा के लिए अपने प्राणो का बलिदान करने वाले कुछ शहीदो के कुछ वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन कीजिए।

2 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झडा ऊँचा रहे हमारा।' स्वतत्रता प्राप्ति से पूर्व लिखा गया एक प्रसिद्ध झडा-गीत है जिसके रचयिता श्यामलाल पार्षद थे। पूरा गीत एक चार्ट पेपर पर लिखकर कक्षा मे लगाइए।

3 राष्ट्रीय भावनाओ की कुछ कविताओ का संकलन कीजिए।

4 हमारे राष्ट्रीय झडे के विकास की कहानी लिखिए। इस संबंध मे अपने शिक्षक तथा पुस्तकालय से आवश्यक जानकारी प्राप्त कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अमिट – न मिटने वाला

कोटि-कोटि कठो मे कूजित – करोडो स्वरो मे गूँजता हुआ

मुक्त पवन – आजाद देश की हवा

अभिलाष – अभिलाषा

सुहित – भलाई

सुमंगल – कल्याण

अक्षय – कभी नष्ट न होने वाला

आन – मर्यादा, गौरव

रस-विष – अमृत और विष, सुख और दु ख

कलेश – दु ख-दर्द

अविरोध – अड़चन के बिना, बिना विरोध के

सजीव सचार – जीता-जागता, प्रवाह

अगणित धाराओं का सगम – एकाधिक धाराओ का जिस स्थान पर मिलन होता है उसे संगम कहते है एव उसे तीर्थ के रूप मे पूजते है

मिलन तीर्थ – भारत मे अनेक सस्कृतियों, जातियो, धर्मों और भाषाओ का सगम हुआ है। इसीलिए उसे अगणित धाराओं का सगम, मिलन तीर्थ कहा गया है

2. अहिंसा की विजय

एक बार महात्मा बुद्ध मगध की राजधानी राजगृह से चलकर श्रावस्ती पहुँचे। श्रावस्ती कोसल की राजधानी थी। वर्तमान अयोध्या के आसपास का प्रदेश उस समय कोसल कहलाता था। वहाँ का राजा प्रसेनजित महात्मा बुद्ध का शिष्य था।

श्रावस्ती पहुँचने पर महात्मा बुद्ध ने राजा को बड़ा व्याकुल पाया। पूछने पर राजा ने कहा, "भगवन्, अंगुलिमाल डाकू से मेरी प्रजा बड़ी त्रस्त है। इसी से मै बहुत चिंतित हूँ। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।"

महात्मा बुद्ध ने राजा को धीरज बँधाया और कहा कि मै तुम्हारी चिंता दूर करूँगा।

अंगुलिमाल बड़ा भयंकर डाकू था। उसके अत्याचार से प्रसेनजित की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। उसने हज़ार आदमियों की हत्या करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। परंतु वह कितने आदमी मार चुका, इसका हिसाब रखना उसके लिए कठिन था। इसके लिए उसने एक युक्ति निकाली। वह जब किसी का वध करता तो उसकी एक अंगुली काट लेता। इस प्रकार उसके पास अंगुलियों की एक माला-सी बनती जा रही थी, जिसे वह गले में डाले रहता। इसी कारण उसका नाम अंगुलिमाल पड गया था।

अंगुलिमाल का नाम सुनकर लोग काँप उठते थे। वह जिधर निकल जाता, चीख-पुकार मच जाती। उसकी क्रूरता की कहानियाँ दूर-दूर के प्रदेशों

मे भी फैल गई थी।

प्रसेनजित से विदा लेकर महात्मा बुद्‌ध उस जंगल की ओर चल पड़े जिसमें अंगुलिमाल रहता था। जहाँ जंगल शुरू होता था, वहाँ राजा की ओर से पहरेदार तैनात था, जो उधर जानेवालों को सावधान कर देता और उन्हें रोक देता। महात्मा बुद्‌ध भी जब उस ओर से चले तो पहरेदार उनके पास पहुँचा। वह जानता था कि बुद्‌ध जैसे महात्मा का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता परंतु वह अपना कर्तव्य समझकर बुद्‌ध के चरण पकड़कर बोला, "महाराज, उधर भयंकर डाकू अंगुलिमाल रहता है। उससे प्राणों को खतरा है। कृपया उधर न जाएँ।"



महात्मा बुद्‌ध हँसे और उन्होंने पहरेदार के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "मेरे लिए किसी प्रकार की चिंता न करो।" फिर वे आगे बढ़ गए।

दोपहर का समय था। महात्मा बुद्‌ध कुछ थक-से रहे थे, पर वे रुके नहीं, आगे बढ़ते गए।

आदमी आदमी को मारता क्यों है? जीव जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नहीं होता ? इन्हीं बातों पर विचार करते हुए महात्मा बुद्‌ध जंगल की राह पर बढ़े जा रहे थे कि अचानक उन्हें किसी की कठोर और भारी आवाज़ सुनाई दी, "ठहर जा !"

महात्मा बुद्‌ध आगे बढ़ते गए। थोड़ी देर में ही वे शब्द फिर सुनाई पड़े, "ठहर जा!"

महात्मा बुद्‌ध रुक गए। तुरंत ही घनी झाड़ियाँ चीरती हुई एक विकराल मूर्ति आ खड़ी हुई। ऊँचा कद, काला शरीर, भयानक चेहरा, लाल आँखें, बिखरे बाल, बड़ी-बड़ी मूँछे, लंबी मज़बूत भुजाएँ, चौड़ा सीना, हाथ में कटार। निश्चय ही यह मनुष्य नहीं, कोई दैत्य था। उसके गले में अंगुलियों की माला देखकर बुद्‌ध को पहचानते देर न लगी कि यही अंगुलिमाल डाकू है।

महात्मा बुद्‌ध ने उस पर अपनी दृष्टि डाली। उनकी नजर मे भय न था, प्यार था। उन्होंने प्रेमपूर्वक उस भयानक डाकू से कहा, " मै तो ठहर गया, तू कब ठहरेगा?

अंगुलिमाल चकित हो उठा। उसके सामने आनेवालों की हमेशा भय से घिग्घी बँध जाया करती थी। आज तक उसे कोई ऐसा आदमी न मिला था जिसने उससे आँख से आँख मिलाकर बात की हो। यह कौन है, जो डरना तो दूर रहा, शांतिपूर्वक मुसकरा रहा है?

महात्मा बुद्‌ध फिर बोले, "बोल, कब ठहरेगा तू?"

अंगुलिमाल पर जादू का-सा असर हुआ। वह विनीत स्वर मे बोला, "महात्मन्, मैं आपकी बात नहीं समझ सका।"

बुद्‌ध बोले, "अरे, जीवन मे तो जन्म से मरण तक वैसे ही बहुत दुख है। तू उसे अपनी क्रूरता के कारनामों से और क्यों बढ़ा रहा है? मै ज्ञान प्राप्त कर बंधन से छूट गया पर तू मार-काट का काम अभी भी करता जा रहा है, इनसे कब छुट्टी लेगा? बोल, कब ठहरेगा तू?"



वह डाकू जिसने डर कभी न जाना था, जिससे सारी दुनिया काँपती थी, आज एक निरस्त्र महात्मा के तेज से काँप रहा था। सहसा वह बुद्‌ध के चरणों में गिर पड़ा और बोला, " महात्मन्, मुझे राह दिखाएँ, मेरे सामने अँधेरा-ही-अँधेरा है।"

बुद्‌ध ने उसको शांति, दया और प्रेम का उपदेश दिया। अंगुलिमाल

की आँखें खुल गई। उसके मन का अधकार दूर हो गया। उसने अगुलियो की माला तोड डाली और कटार दूर फेंक दी।

अगुलिमाल ने हिसा का जीवन सदा के लिए त्याग दिया और वह भगवान् बुद्ध का शिष्य बन गया।

— भगवतशरण उपाध्याय

प्रश्न–अभ्यास

बोध और विचार

1 राजा प्रसेनजित की चिता का क्या कारण था?

2 डाकू का नाम अगुलिमाल क्यो पडा?

3 जगल जाते समय भगवान् बुद्ध के मन मे क्या-क्या प्रश्न उठ रहे थे?

4. लेखक ने अगुलिमाल की विकराल मूर्ति का चित्र किन शब्दों मे खींचा है?

5 'मै तो ठहर गया, तू कब ठहरेगा?' इस वाक्य से महात्मा बुद्ध क्या कहना चाहते थे?

6 महात्मा बुद्ध ने अगुलिमाल को हिंसा के रास्ते से हटाने के लिए क्या समझाया?

7. अगुलिमाल का हृदय-परिवर्तन किस प्रकार हुआ?

8. इस कहानी का उद्देश्य है .

(क) डाकू-समस्या का हल प्रस्तुत करना।

(ख) पाप से पापी को बडा बताना।

(ग) क्रूरता पर प्रेम का प्रभाव दिखाना।

(घ) बौद्ध धर्म का प्रचार करना।

भाषा-अध्ययन

1 नीचे लिखे शब्दो को बोलकर पढिए

प्रसेनजित, प्रतिज्ञा, प्रदेश, प्राण, प्रकार, प्रसन्न, प्रेम

ध्यान दीजिए

'प्र' मे 'प्' + 'र' का योग है। इसमे 'प्' का उच्चारण बिना स्वर के और उसके तुरंत बाद 'र' का उच्चारण स्वर सहित होगा, जैसे प्रजा, प्राचीन, प्रिय, प्रीति, प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रौढ। संयुक्त ध्वनियो वाले निम्नलिखित शब्दो का शुद्ध उच्चारण कीजिए

व्याकुल, ध्यान, बुद्ध, क्रूरता, त्याग।

2 निम्नलिखित वाक्य को ध्यानपूर्वक पढिए ·

तुरत ही घनी झाडियॉ चीरती हुई एक विकराल मूर्ति आ खडी हुई। ऊँचा कद, काला शरीर, भयानक चेहरा, लाल ऑखे, बिखरे बाल, बडी-बडी मूँछे, लबी मजबूत भुजाएँ, चौडा सीना, हाथ मे कटार। इस वाक्य में प्रभावशाली विशेषणों के प्रयोग से हमारे मन मे अगुलिमाल का सजीव चित्र खिच जाता है।

इस अश में आए विशेषण और संज्ञा शब्द (विशेष्य) छॉट कर लिखिए

विशेषण	संज्ञा
1	1
2	2
3	3
4	4
5	5

3. नीचे लिखे वाक्यो को ध्यान से पढिए और रेखाकित शब्दो के अर्थ का अतर अपने शब्दो मे लिखिए

- अचानक उन्हे किसी की कठोर और भारी आवाज सुनाई दी, "ठहर जा!"
- उन्होने प्रेमपूर्वक उस भयानक डाकू से कहा, "मै तो ठहर गया, तू कब ठहरेगा?"

4 नीचे लिखे पहले दो वाक्यो मे पुनरुक्त (एक शब्द की आवृत्ति) शब्दो के बीच जिन्हे रेखाकित किया गया है, योजक चिह्न (हाइफन) का प्रयोग किया गया है, जबकि तीसरे और चौथे वाक्यो में ऐसे ही पुनरुक्त शब्दो के बीच ऐसा कोई चिह्न नहीं है। इस अतर को स्पष्ट कीजिए

(क) उसके अत्याचार से प्रसेनजित की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी।

(ख) उसकी क्रूरता की कहानियॉ दूर-दूर के प्रदेशों मे भी फैल गई थीं।

(ग) आदमी आदमी को क्यों मारता है?

(घ) जीव जीव को देखकर प्रसन्न क्यों नही होता?

5 नीचे लिखे मुहावरो के अर्थ लिखकर इनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए

कॉप उठना, घिग्घी बँध जाना, ऑखें खुलना, ऑख से ऑख मिलाना।

योग्यता-विस्तार

इस कहानी में लेखक ने कुछ शब्दो द्वारा अंगुलिमाल के रूप का चित्र खीचा है। उसकी तुलना मे महात्मा बुद्ध के रूप का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

त्रस्त – डरा हुआ

विकराल – भयकर, भीषण

क्रूरता – निर्दयता

कारनामा – करतूत

निरस्त्र – बिना हथियार के, निहत्था

त्राहि-त्राहि करना – बेबस होकर रक्षा के लिए पुकारना

घिग्घी बँध जाना – भयभीत होने पर मुँह से ठीक प्रकार से शब्द न निकलना

मेरे पड़ोस में दो बच्चे रहते है– प्रदीप और भुवन। प्रदीप जब कभी मेरे पास आता है, पहले हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, फिर 'चाचा जी' कहकर मुझसे बात करता है। बड़े ही मृदुल और शांत स्वर में वह बोलता है। किंतु भुवन दूसरी ही तरह से बात करता है। दूर से ही चिल्लाता हुआ आता है, "मुन्नी के बाबूजी, आपको मेरे बाबूजी बुला रहे हैं।"

आसपास के सभी लोग प्रदीप की प्रशंसा करते नही थकते और भुवन के व्यवहार पर सबको हँसी आ जाती है। यों भुवन पढ़ने मे तेज़ है और प्रदीप की अपेक्षा उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है, फिर भी लोगों की प्रशंसा का पात्र प्रदीप ही है। इसका कारण यह है कि प्रदीप का बोल-व्यवहार लोगो का मन लुभा लेता है। दूसरे शब्दों में यो कहें कि प्रदीप का व्यवहार शिष्ट है जबकि भुवन का अशिष्ट।

समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए शिष्टाचार के नियम अवश्य जानने चाहिए और उन्हे अपनी आदत में सम्मिलित कर लेना चाहिए। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अलग-अलग समाजों में शिष्टाचार के नियम भिन्न-भिन्न हैं, यद्यपि उनके आधार प्राय. समान ही है।

शिष्टाचार का सबसे पहला गुण है, विनम्रता। हमारी वाणी में, हमारे व्यवहार मे विनम्रता घुली होनी चाहिए। इसीलिए किसी बडे के बुलाने पर 'हाँ,' 'अच्छा', 'क्या' न कहकर 'जी हाँ' या 'जी नहीं' कहना चाहिए। किसी

की बात का उत्तर ऐसे नही देना चाहिए कि सुननेवालो को लगे कि लट्ठ मारा जा रहा है।

विनम्रता केवल बड़ो के प्रति नही होती। बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव होना चाहिए। सभी से बोलते हुए हमारी वाणी में मिठास रहनी चाहिए, कटुता या कर्कशता नही।

विनम्रता केवल भाषा की वस्तु नहीं। हमारे कर्म में भी विनम्रता होनी चाहिए। अपने यहाँ किसी के आने पर हमें उसका प्रसन्नता से स्वागत और



यथोचित सत्कार करना चाहिए। अपने से बड़े व्यक्तियों के बैठ जाने के बाद ही हमे बैठना चाहिए। महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार मे और भी विनम्रता का होना आवश्यक है। बस या रेल मे किसी महिला को खड़ी देखकर अपनी सीट उन्हें बैठने के लिए दे देना शिष्ट आचरण है।

अपने से बडे व्यक्तियों के समाज मे ठहाका लगाकर हँसना या ज़ोर से बोलना अनुचित माना जाता है। इसी प्रकार बडे लोगों के साथ चलते समय उनके आगे चलने लगना भी अशिष्टता है। हाँ, उनके लिए झट-से आगे होकर दरवाज़ा खोल देना या राह दिखाना शिष्ट व्यवहार है।

विनम्रता और दीनता में अतर है। विनम्र होते हुए भी हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते है। विनम्र व्यवहार का अर्थ चापलूसी नही है। यदि कभी यह महसूस हो कि जिसके प्रति हम विनीत हैं वह हमारा तिरस्कार कर रहा है अथवा हमे दीन-हीन जानकर हमारे प्रति दया की भावना प्रकट कर रहा है, तो उसकी कृपा प्राप्त करने की चेष्टा हमें नहीं करनी चाहिए।

शिष्टाचार का दूसरा विशेष गुण है दूसरो की निजी बातों मे दखल न देना। हर व्यक्ति का अपना एक निजी जीवन होता है। इसीलिए हमे अकारण किसी से उसका वेतन, उम्र, जाति, धर्म आदि पूछने से बचना चाहिए। यदि कोई कुछ लिख रहा है तो झाँक-झाँककर उसे पढ़ने की चेष्टा करना उजड्डपन कहा जाएगा। किसी के घर या दफ़्तर जाने पर उसकी वस्तुओं को बिना पूछे उलटने-पलटने लगना अशिष्टता है।

किसी का नाम लेने या लिखने के पहले श्री, श्रीमती या कुमारी लगाना अच्छी आदत है। कुछ लोग इनके स्थान पर पंडित, डॉक्टर, बाबू, लाला, मियाँ,

मिर्ज़ा—जब जैसी आवश्यकता होती है, लगाते हैं। इसी तरह कुछ लोग नाम के बाद 'जी' लगाते है।

यदि कोई कुछ कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिए कोई काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। इसका सबसे सरल तरीका है उसे धन्यवाद देना। यदि बस या रेल में कोई अपनी जगह हमे बैठने के लिए देता है तो उसे धन्यवाद अवश्य देना चाहिए। 'धन्यवाद' शब्द बोलते समय ऐसा लगना चाहिए कि हम उसे हृदय से धन्यवाद दे रहे हैं, केवल ऊपर-ऊपर से नही।

औरों के साथ भोजन करते समय हमें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। हमें खाने में अधीरता नहीं दिखानी चाहिए। चबाने मे मुँह से आवाज करना अच्छा नही माना जाता। अपने से बडों के भोजन समाप्त कर देने पर भी खाते रहना उचित नही है। यदि हमारे घर कोई अतिथि भोजन कर रहे हों तो उनकी रुचि का भोजन बनवाना उचित है। पर जब वे खा रहे हो तब उनके मना करने पर भी रोटी, पूड़ी, सब्जी आदि उनकी थाली में ज़बरदस्ती नही डालनी चाहिए।

शिष्टता का तीसरा आधार अनुशासन का पालन है। अनुशासन समाज के नैतिक नियमों का भी हो सकता है और कानून की धाराओं का भी। उदाहरण के लिए किसी मंदिर, गुरुद्वारे या मस्जिद में जाने के पहले जूते उतार देना धार्मिक अनुशासन का पालन है। सड़क पर बाई ओर चलना या जहाँ जाना मना हो, वहाँ न जाना, कानून के अनुशासन का पालन है। समय का पालन करना सामाजिक नियमों का पालन है। ठीक समय पर कहीं पहुँचना

अनुशासन भी सिखाता है और लाभ भी पहुँचाता है।

हमे हर तरह के अनुशासनों का सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए। जैसे, किसी सभा में शोर मचाना अनुचित है। किसी वक्ता को अपनी बात कहने का मौका न देना अशिष्टता है। राष्ट्रगान के अवसर पर बैठे रहना या चलना या झूमना अशिष्ट व्यवहार है। जहॉ सब लोग बैठे हों वहाँ लेट जाना या पैर फैलाकर बैठना बहुत अनुचित है। कभी-कभी थक जाने पर इच्छा होती है कि कुरसी पर पैर रखकर बैठें या चारपाई पर निढाल होकर पड़े रहें। अन्य लोगों की उपस्थिति में हमें अपनी ऐसी इच्छा को दबा देना चाहिए। अपने मन को संयम में रखना शिष्ट व्यवहार के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संक्षेप मे हम कह सकते हैं कि शिष्टाचार वह व्यवहार है जिसके करने पर दूसरो के तथा अपने मन को प्रसन्नता होती है। इसके विपरीत अशिष्ट व्यवहार से दूसरो का दिल दुखता है और उससे अंत मे हानि भी होती है।

— रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. शिष्टाचार की दृष्टि से स्तभ 'क' को स्तभ 'ख' से मिलाइए

क	ख
छोटो के प्रति	आदर
बडो के प्रति	मिठास
सहायता करने वाले के प्रति	विनम्रता

वाणी मे कृतज्ञता
व्यवहार मे स्नेह

2 निम्नलिखित अवसरो पर हमे कैसा आचरण करना चाहिए?
(क) जब घर मे कोई मेहमान आए।
(ख) जब कोई हमारे लिए कुछ काम करे।
(ग) जब हम भोजन कर रहे हो।
(घ) जब मेहमान को भोजन करा रहे हों।
(ङ) जब हम सभा में बैठे हो।
(च) जब राष्ट्रगान गाया जा रहा हो।
(छ) जब हम धार्मिक स्थानो पर जाएँ।

3 धन्यवाद कब और कैसे देना चाहिए?

4. शिष्टाचार मे किन प्रमुख बातो को महत्त्व दिया जाना चाहिए?

5 विनम्रता और दीनता मे क्या अतर है?

6 दूसरो के निजी जीवन में दखल देना अनुचित क्यो माना जाता है?

7. उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए कि अशिष्ट व्यवहार से अत मे हानि होती है।

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो का शुद्ध उच्चारण कीजिए
शिष्ट, नम्र, सभ्य, विनम्र, लट्ठ, धन्य, राष्ट्र

2. ध्यान दीजिए . कुछ व्यजन सयुक्त होने पर नया रूप ले लेते है, जैसे ·
क् + ष =क्ष त् + र = त्र या त्
ज् + ञ =ज्ञ (इसका उच्चारण प्राय· ग् +य (ग्य) के रूप में किया जाता है)
श् + र =श्र

पाठ को पढकर ऐसे शब्दों की सूची बनाइए जिनमें ऊपर लिखे सयुक्त व्यंजनो का प्रयोग हुआ हो।

3 नीचे लिखे शब्दो को पढिए .

क	ख
शिष्ट	अशिष्ट
शासन	अनुशासन
नम्र	विनम्र
शेष	विशेष

ध्यान दीजिए · 'क' के अतर्गत लिखे शब्दो के प्रारभ में क्रमश· 'अ', 'अनु', और ' वि' जोडा गया है। (देखिए 'ख') शब्द के प्रारभ मे जुडनेवाले ये अंश ' उपसर्ग' कहलाते है। 'अ', 'अनु' और 'वि' उपसर्ग वाले दो-दो शब्द लिखिए।

4 नीचे लिखे शब्दो को पढिए

मधुर मधुरता सुंदर सुदरता

ध्यान दीजिए . 'मधुर' और 'सुंदर' शब्दो मे–'ता' के योग से शब्द के अर्थ/भाव में परिवर्तन हुआ है। प्रथम शब्द विशेषण है तो दूसरा उसी से बना रूप सज्ञा (भाववाचक) है। मूल शब्द के अत में जुडने वाला अश–'ता' प्रत्यय है। इसी प्रकार के पॉच शब्द पाठ से छॉटिए।

5 उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यो से नए वाक्य बनाइए

उदाहरण· बच्चे ने दूध पिया। (मॉ) → मॉ ने बच्चे को दूध पिलाया।

नौकरानी ने कपडे धोए। (मॉ) → मॉ ने नौकरानी से कपड़े धुलवाए।

(क) मिस्त्री ने मकान बनाया। (मालिक)

(ख) भुवन शिष्टाचार के नियमो का पालन करता है। (अध्यापक)

(ग) गाय ने घास खाई। (ग्वाला)

(घ) नौकरानी ने बच्चे को सुलाया। (मॉ)

योग्यता-विस्तार

1 *'अतिथि के मना करने पर भी उससे अधिक खाने का आग्रह करना उचित नहीं है।'*

इसके पक्ष-विपक्ष मे कक्षा मे चर्चा कीजिए।

2. शिष्ट व्यवहार एव मीठी बोली के महत्त्व को दर्शाने वाले दोहो तथा सूक्तियो का सकलन कीजिए और उन्हे कक्षा मे सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मृदुल – कोमल, मधुर
लट्ठ मारना – बोली मे कठोरता होना
कटुता – कड़वाहट
कर्कशता – कठोरता
यथोचित – जितना उचित हो
दीन-हीन होना – आत्मसम्मान खोना
उजड्डपन – गँवारपन

4. आ रही रवि की सवारी

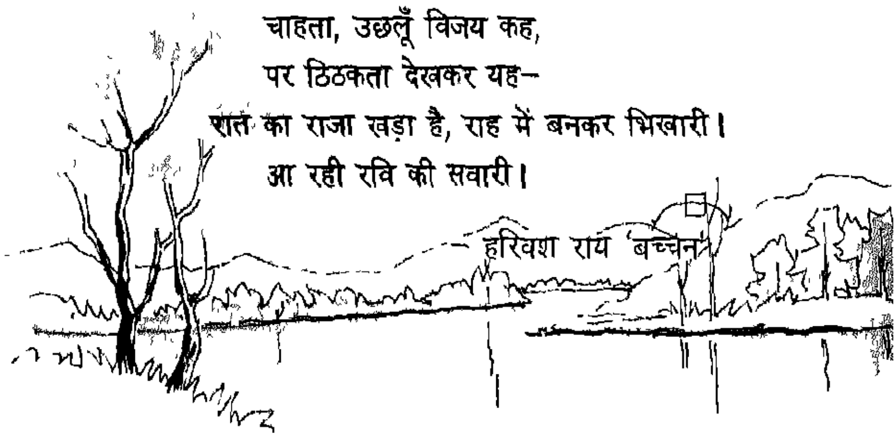
आ रही रवि की सवारी।

नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।
आ रही रवि की सवारी।

विहग, बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फ़ौज सारी।
आ रही रवि की सवारी।

चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह–
रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी।
आ रही रवि की सवारी।

— हरिवंश राय 'बच्चन'



प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1 सूर्य अपनी विजय पर खुशी से क्यो न उछल सका?
सही उत्तर को ✓ चिह्नित कीजिए
(क) रात का राजा चॉद उसे भिखारी-सा दिखाई दिया।
(ख) चमचमाते सितारे डूबते से दिखाई दिए।
(ग) कीर्तिगायन करने वाले जा चुके थे।
(घ) सध्या-समय सूरज भी चॉद की तरह भिखारी-सा बन जाएगा।

2 निम्नलिखित किस प्रकार सूर्य की सवारी की शोभा बढा रहे हैं
किरण, कुसुम, बादल, विहग

3 सूर्योदय के समय प्रकृति मे क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते है?

4 सम्राट की सवारी और सूर्योदय की शोभा मे क्या-क्या समानता दिखाई गई है?

5 'रात के राजा चॉद' को राह का भिखारी क्यो कहा गया है?

6 सूर्योदय की शोभा का वर्णन एक अनुच्छेद मे लिखिए।

7 आपको इस कविता की कौन-सी पक्ति सर्वाधिक सुदर लगी और क्यो?

योग्यता-विस्तार

1 सूर्योदय के सौदर्य से संबधित एक या दो कविताएँ चार्ट पेपर पर लिखिए और यदि संभव हो तो उनका चित्र भी बनाइए।

2. 'जा रही रवि की सवारी' शीर्षक से सूर्यास्त पर निम्नलिखित अधूरी पक्तियो के आधार पर कविता पूरी कीजिए

जा रही रवि की सवारी।
किरण रथ धुँधला पडा है।

अँधेरा खडा है।

आ जमी तारको की फौज सारी।

3 'आ रही शशि की सवारी' शीर्षक से एक कविता बनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अनुचर – सेवक

विहग – पक्षी

बदी – वदना करने वाले

चारण – भाट, राजा का यशोगान करने वाले

कीर्तिगायन – प्रशसा के गीत

धारी – धारण की

5. हार की जीत

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोडे को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुदर था, बड़ा बलवान्। उसके जोड का घोड़ा सारे इलाके मे न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हे नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मदिर मे रहते और भगवान् का भजन करते थे। "मै सुलतान बिना नहीं रह सकूँगा", उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक सध्या समय सुलतान पर चढकर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हे चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानो तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिह, क्या हाल है?"

खड्गसिह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खीच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैने भी बड़ी प्रशसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!"

"कहते है देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमड से, खड्गसिह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोडे देखे थे, परतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ! कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय मे हलचल होने लगी। बालको की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या!"

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोडे को खोलकर बाहर गए। घोडा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मै यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हे रात को नीद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति क्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाई मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखो में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, "ओ बाबा, इस कॅगले की सुनते जाना।"

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया मे पडा कराह रहा है। बोले, "क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मै उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर

तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मै तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"



"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोडे का नाम न लो। मै तुमसे इसके विषय मे कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोडे को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वय उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी ऑखे बाबा भारती के मुख पर गडा दी और पूछा, "बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास न करेंगे।" यह कहते-कहते उन्होने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई सबंध ही नही रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानो मे उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार है, कैसा पवित्र भाव है! उन्हे इस घोडे से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली मे वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पडती थी। उन्हे केवल यह ख्याल था कि कही लोग दीन-दुखियो पर विश्वास करना न छोड दे। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़्गसिंह बाबा भारती के मंदिर मे पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।



रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् , इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे सतोष से बोले, "अब कोई दीन-दुखियों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

— सुदर्शन

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 खड्गसिंह ने बाबा भारती को किस कारण से देवता माना?

(क) किसी को घोडा छीनने की घटना को न बताने का आग्रह करना।

(ख) घोडा छिन जाने पर बाबा के मुख पर दुख की कोई रेखा न दिखाई देना।

(ग) बाबा द्वारा एक अपाहिज की सहायता करना।

(घ) बाबा का पूजा-पाठ मे लगा रहना।

2. सुलतान के प्रति बाबा भारती के गहरे लगाव का कारण क्या था?
3 खड्गसिह' के नाम से लोग क्यो डरते थे?
4. खड्गसिह बाबा भारती के पास क्यो गया?
5 सुलतान को प्राप्त करने के लिए खड्गसिह ने क्या चाल चली?
6 बाबा भारती ने खड्गसिह से क्या प्रार्थना की?
7 खड्गसिह पर उस प्रार्थना का क्या प्रभाव पडा?
8 घोडा छिन जाने पर बाबा भारती के मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख क्यों निकली?
9. निर्मनलिखित वाक्यो के भावार्थ अपने शब्दो मे लिखिए
   (क) बाबा ने घोडा दिखाया घमड़ से, खड्गसिंह ने घोडा देखा आश्चर्य से।
   (ख) बाबा भी मनुष्य ही थे।
   (ग) ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।
10 इस कहानी मे हारकर भी कौन जीता और जीतकर भी कौन हारा?

भाषा-अध्ययन

1 सतोष × असतोष (अ + सतोष)
  आशा × निराशा (निर् + आशा)

ऊपर दिए शब्दो को ध्यान से पढिए, 'सतोष' और 'आशा' मे क्रमश 'अ' और 'निर्' उपसर्ग लगने से जो नए शब्द (असतोष, निराशा) बनते है, वे उनसे उलटे अर्थ का बोध कराते है। ऐसे शब्दो को 'विलोम' या 'विपरीतार्थक' शब्द कहते है। कुछ शब्दो के विपरीतार्थक शब्द बिना उपसर्ग के भी बनते है जैसे सुख × दुख, रात × दिन, हार × जीत।

नीचे लिखे शब्दो के विपरीतार्थक शब्द लिखिए

शब्द	विपरीतार्थक शब्द	शब्द	विपरीतार्थक शब्द
निदा	—	शिष्ट	—
वैर	—	कृतज्ञ	—

समाप्त	—	प्रसन्न	—
आदि	—	सभ्य	—
आकार	—	अस्त्र	—

2 क्रियाओ से भाववाचक सज्ञाएँ बनाई जाती है, जैसे

चाहना चाह पकडना पकड

इसी प्रकार निम्नलिखित क्रियाओ से भाववाचक सज्ञा बनाइए

दौडना, पुकारना, चीखना,

3 निम्नलिखित वाक्यो को पढिए

आकाश मे तारे टिमटिमा रहे थे।

अस्तबल मे घोडे हिनहिना रहे है।

रेखांकित शब्दो को अनुरणनात्मक (ध्वनि से अर्थ को व्यजित करने वाले) शब्द कहा जाता है। निम्नलिखित वाक्यो को उपयुक्त अनुरणनात्मक शब्दो से पूरा कीजिए

(क) मेरे सामने भिखारी लगा।

(ख) कूडे पर मक्खियॉ रही है।

(ग) मै बादलो के से डर गया।

(घ) आधी रात को कोई दरवाजा लगा।

(ङ) गोली चलते ही पक्षी अपने पख लगे।

4 निम्नलिखित वाक्यो को उदाहरण के अनुसार बदलिए

उदाहरण (1) इसके बाद उसके हृदय मे हलचल हुई।

→ इसके बाद उसके हृदय में हलचल होने लगी।

(2) घोडा वायुवेग से उडा।

→ घोडा वायुवेग से उडने लगा।

(क) वह चिल्लाकर बोला।

(ख) बाबा भारती लगाम पकड कर चले।

(ग) भारती घोडे से लिपट कर रोए।

(घ) छुट्टी होते ही बच्चे दौडे।

5 निम्नलिखित मुहावरो से वाक्य बनाइए

लट्टू होना, हृदय पर सॉप लोटना, दिल टूट जाना, मुँह मोडना, फूला न समाना

योग्यता-विस्तार

1 इस कहानी को एकाकी मे रूपातरित करके कक्षा मे उसका अभिनय कीजिए।

2 'दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का भी हृदय-परिवर्तन सभव है।'

कक्षा में इस विषय के पक्ष-विपक्ष पर अपने-अपने विचार प्रकट कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

खरहरा – लोहे की कंघी जिससे घोड़े के शरीर का मैल साफ़ किया जाता है

असबाब – सामान

भ्रांति – भ्रम

लट्टू होना – मुग्ध होना

बाँका – अनोखा एव सुदर

कँगला – कगाल, निर्धन

हृदय पर साँप लोटना – ईर्ष्या होना, बेचैन होना

नाईं – तरह, समान, सदृश

बाग – लगाम

पाँवों का मन-मन भर का होना – मन दुखी होने के कारण चलने मे कठिनाई अनुभव करना

पाँवों की चाप – पैरो की आवाज

वन-महोत्सव का दिन था। नन्ही-नन्ही फुहारें रिमझिम बरस रही थीं। आज का दिन कजरारे बादलों के साथ कितना सुदर, कितना मोहक लग रहा था! मेरी आँखें कभी आकाश में उडने वाले काले बादलों पर जमतीं तो कभी सहसा इंद्रधनुषी पुल पर। इसी समय रश्मिकांत दौडता हुआ आया, "आज डबली बाबू ने हमे ट्रस्ट के बगीचे मे बुलाया है। वे हमें चपा, गुलाब, कनेर, चमेली आदि के बहुत-से पौधे देने वाले है। उनका लडका आया है। जाऊँ?" मैने कहा, "जाओ, जरूर जाओ।" मै सोचने लगा, ट्रस्ट के बगीचे के बाबू का नाम डबली? अजीब है। मैं उसे देखना चाहूँगा। दूसरे ही क्षण मैने रश्मिकांत से कहा, "और देखो, लौटते वक्त डबली बाबू से कहना कि आपको पिताजी ने बुलाया है। भूलना मत।"

कुछ समय बाद देखता हूँ, कनेर, गुलाब, रातरानी, चमेली, चपा और न जाने कौन-कौन-से पौधे लिए स्वयं डबली बाबू बच्चो के आगे-आगे सारस-सी डगे धरते हुए चले आ रहे हैं। मैने देखा, उनका कद न ऊँचा, न ठिगना, मजे के मझोले आदमी है। न मोटे हैं, न पतले। आँखे भी मझोली ही हैं, कपोलो में धँसी हुई पीली-पीली-सी। दाँत विरल है। उनका कत्थई रंग पान और तबाकू के अतिरेक की शहादत दे रहा है। धोती बाबुआना ढंग की पहने हुए है, पर मैल खाने से बादामी रंग की हो गई है। पैरो में कोकणी चप्पले हैं, जो काफी मोटी और मजबूत है। और हाँ, काले धारीदार कुरते के ऊपर बटन

विहीन खाकी रंग का कोट भी पहने हुए हैं। दाहिने हाथ मे एक छड़ी झुलाते हुए वे चले आ रहे है। डबली बाबू के अहाते मे आने के पहले ही रश्मिकांत दौडता हुआ आया और कहने लगा, "यह देखिए, डबली बाबू आ गए।"

"नमस्कार डबली बाबू। आपने बड़ा कष्ट किया। किसी माली को भेज देते," मैने कहा।

"नहीं, एक तो आपने बुलाया और दूसरे मैं भी बहुत दिनों से आपसे मिलने वाला था, आपके कॉलेज मे प्रोफ़ेसर...जी से मेरा बड़ा घरोबा था। मेरे बगीचे मे वे अक्सर आया करते, सैर करते, बड़ा मज़ा आता था। मैंने सुना, आप मेरे मकान के पास ही आ गए है तो मुझे बड़ी खुशी हुई। ऐसा लगा जैसे. ....जी ही आ गए," डबली बाबू बोलते ही गए।

डबली बाबू को हमने चाय पिलाई। पान खिलाया। उनके नेत्र कृतज्ञता से आर्द्र हो उठे। कहने लगे, "बाबू जी आपका बगीचा मैं अच्छी तरह लगवा दूँगा।" फिर उन्होंने अहाते का बारीकी से सर्वेक्षण किया। यहाँ आम, यहाँ



लीची, यहाँ संतरा, यहाँ जामुन, यहाँ पपीता ..." कहते गए और हाथ की छड़ी से उनके लगाने के स्थानो पर गोलाकार निशान भी बनाते गए। "अच्छा, तो मै जाता हूँ। नर्सरी में लोग पौधे लेने आए होगे, वन-महोत्सव है न !"

चार दिन बाद सवेरे मैने देखा, ट्रस्ट की लारी खड़ी है। फाटक खुलवाने का आग्रह कर रही है।

"क्या है?" मैंने पूछा।

"कुछ गमले लाए हैं। डबली बाबू ने भेजे हैं।" मै परेशान था, कितने अच्छे हैं डबली बाबू !

दूसरे दिन प्रात:काल ट्रस्ट का माली बहुत-से फलों के पौधे लेकर आया और बरसते पानी मे उन्हें लगाकर चला गया—डबली बाबू के निर्दिष्ट स्थानों पर।

दस दिन बाद डबली बाबू सवेरे ही आए। चेहरे से बहुत अधिक थकान झलक रही थी। बगीचे के पास बेंच पर बैठते ही घबराए-से दिखाई दिए। उनके रोकने पर भी वमन हो ही गया। हम सब उनके निकट दौड़ गए। सिर पर पानी डाला। मुँह धोने के बाद उन्होने कहा, "पित्त का जोर है और कुछ नहीं, थोड़ा बुखार भी है और कुछ नहीं।" थर्मामीटर लगाकर देखा तो पारा 102 डिग्री ऊपर जा रहा था। पर उनसे कहा, "थोड़ी हरारत जरूर है। अब आप घर चले जाइए, आराम कीजिए।"

डबली बाबू रिक्शे में चले गए।

दो दिन बाद एक बगाली सज्जन के साथ फिर आए। जन्माष्टमी का दूसरा दिन था। बच्चों ने उत्साह के साथ भगवान् कृष्ण की झाँकी बनाई थी।

यह बात डबली बाबू को अपने लड़के से ज्ञात हो गई थी। आते ही बोले, "पहले झाँकी देखूँगा। फिर बात करूँगा।" बड़ी तन्मयता के साथ वे दोनों नेत्र बंदकर हाथ जोड़े खड़े रहे। जब काफ़ी समय हो गया तो मैंने कहा, "डबली बाबू! चलिए चाय पी लीजिए।" उन्होंने ऑखे खोलीं और अन्यमनस्क होकर कहा, "तो चलिए।" पर आज डबली बाबू का प्रिय पेय उनके होंठो से नीचे नही जा रहा था। लड्डू की ओर उन्होंने देखा भी नहीं। जब बहुत आग्रह किया तो कहने लगे, "मुझे आज आठ-दस दिन से कुछ भी अच्छा नहीं लगता। रात को रोज़ बुखार आता है। ट्रस्ट का हिसाब करना है। इसलिए बाबूजी को (बगाली महाशय का लक्ष्य कर) साथ ले आया हूँ। आप इन्हे रुपए दे दीजिए।" नर्सरी बंगाली बाबू के चार्ज मे है, उन्हीं के मातहत-डबली बाबू काम करते थे। हिसाब समझाकर डबली बाबू उठे और उन्होंने बगीचे की ओर एक दृष्टि डाली, मानो मन-ही-मन उसका सर्वेक्षण कर रहे हों— "आम ज़रा सतरे से हटकर होता तो ठीक रहता, खैर कोई बात नहीं।" आज, उन्होने छड़ी घुमाकर सर्वेक्षण नहीं किया। "मै एक अच्छा माली आपके पास भेजूँगा," यह कहते हुए बगाली महाशय के साथ गेट के बाहर जाते-जाते डबली बाबू फिर लौट पड़े और पुन. कहने लगे, "एक बात तो मैं भूल ही गया, बाई कहाँ है?" पत्नी के आने पर बोले, "मेरी एक प्रार्थना है बाई आपसे। एक दिन आप और प्रोफ़ेसर साहब दोनों मिलकर एक बार मेरे यहाॅ ज़रूर आएॅ। भूले नहीं।"

हमने आने का आश्वासन दिया और डबली बाबू रिक्शे मे बैठकर चले गए। हमारे मकान से आधे किलोमीटर की दूरी पर एक सेठ के बगीचे मे बडे भारी बँगले के पीछे ऊँघती-सी झोपड़ी में डबली बाबू वर्षो से रहते थे।

दूसरे दिन शनिवार को प्रातः साइकिल पर मै ज़रा तेज़ी से जा रहा था। मार्ग में डबली बाबू ट्रस्ट-नर्सरी रोड पर हिलते-डुलते दिखाई दिए। मैंने साइकिल पर चढ़े हुए ही पूछा, "कहिए, कैसी तबीयत है?"

"रात को नींद नहीं आती। बस, और ठीक है।" "तो आराम क्यों नहीं करते? ट्रस्ट के दफ़्तर में क्यो भागे जा रहे है?"

"काम बहुत पडा है। हिसाब-किताब करना है न?"

सोमवार का सवेरा था। पानी तेज़ी से बरस रहा था। सिर पर कमली डाले एक आदमी फाटक पर खड़ा आवाज़ दे रहा था।

"क्या है, क्या चाहते हो?" मैंने उससे पूछा।

"मै माली हूँ। डबली बाबू ने भेजा है।"

" और डबली बाबू कहाँ हैं?"

"वो तो कल मर गए। आपको नहीं मालूम?" मेरा सिर चकरा गया। मैंने कहा, " अरे कल तो सवेरे मेरी उनसे सड़क पर मुलाकात हुई थी। दफ़्तर गए थे।"

"हाँ, दफ़्तर तो गए थे, सब कागज़-पत्तर ठीक करने। बारह बजे एकाएक उन्होंने चाबी फेंक दी और कहा, "हमारा काम पूरा हो गया। हम घर जाएँगे।" और ज्योंही उठकर चलने लगे, उनके पैर लड़खड़ा गए। उसी समय उन्होंने मुझसे कहा, 'देखो सपत ! प्रोफेसर साहब के घर जाकर बगीचे का काम ठीक कर देना, भूलना मत।" फिर हम लोग उनको रिक्शे में बिठाकर डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने नाड़ी देखते ही घर ले जाने को कहा। वहाँ थोड़ी देर मे उनका दम छूट गया।"



मंगल की शाम को मैं पत्नी के साथ डबली बाबू के घर गया। डबली बाबू की एक कन्या ने खोली के सामने खटिया डाल दी और भीतर चली गई। डबली बाबू की एक कन्या चाय लेकर आ गई। मैं अचरज में डूब गया और मन-ही-मन कहने लगा, "ये सब कितने भोले हैं। मातम-पुरसी के लिए आनेवालों को इस तरह खिलाया-पिलाया नहीं जाता, इसका भी इन्हें बोध नहीं।" मैंने श्रीमती डबली से कहा, "यह चाय पीने-पिलाने का वक्त नहीं है। आपको तक़लीफ़ नहीं करनी चाहिए थी।"

रुकते-रुकते वह बोली, "उन्होने कहा था, जब प्रोफेसर साहब और बाई आएँ और मैं घर में न भी रहूँ तब भी उन्हे चाय पिलाए बिना मत जाने देना। मैंने तो उन्हीं की... ...." यह कहते-कहते डबली बाबू की विधवा फूट-फूट कर रोने लगी। प्रयत्न करने पर भी हम अपने को नहीं रोक सके। सांत्वना देने गए थे पर खुद अपनी सांत्वना खो बैठे।

— विनयमोहन शर्मा

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 डबली बाबू लेखक से मिलने के लिए क्यो इच्छुक थे?
2. डबली बाबू ने लेखक के बॅगले मे बगीचा लगाने मे क्या सहयोग दिया?
3 डबली बाबू की असमय मृत्यु का मुख्य कारण क्या था?
4 'नेत्र कृतज्ञता से आर्द्र हो उठे', इसका सही अर्थ है
 (क) उनकी ऑखो मे प्रेम के ऑसू आ गए।
 (ख) एहसान से उनकी ऑखे नम हो गईं।
 (ग) उनकी ऑखो मे दया का भाव जग गया।
 (घ) उनकी ऑखो मे प्रसन्नता उभर आई।
5 डबली बाबू के चरित्र की कोई तीन विशेषताऍ बताइए।
6 डबली बाबू की कन्या द्वारा चाय लाने पर लेखक को अचरज क्यो हुआ?
7 'सात्वना देने गए थे पर खुद अपनी सात्वना खो बैठे।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा-अध्ययन

1 नीचे लिखे शब्दो को ध्यान से पढिए और वाक्यो मे इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ का अतर स्पष्ट हो जाए

ओर – और	मेल – मैल
शोक – शौक	मे – मै
कोर – कौर	लोट – लौट
खोल – खौल	बेल – बैल

2 उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे वाक्यो मे से क्रियाविशेषण चुनिए
उदाहरण उन्होने अहाते का बारीकी से निरीक्षण किया।

(क) डबली बाबू की विधवा फूट-फूट कर रोने लगी।

(ख) पानी तेज़ी से बरस रहा था।

(ग) आपका बगीचा मै अच्छी तरह लगवा दूँगा।

(घ) चाय का प्याला नीचे उतार गए।

(ङ) बिल्ली चुपके से दूध पी गई।

3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए

उदाहरण: डबली बाबू मोटे भी नहीं है, पतले भी नहीं है।

→ डबली बाबू न मोटे है, न पतले।

(क) उनका कद ऊँचा भी नहीं है, ठिगना भी नहीं है।

(ख) यह खाना गरम भी नहीं है, ठडा भी नहीं है।

(ग) शीला रो भी नहीं सकती, हँस भी नहीं सकती।

(घ) इस सौदे मे मुझे लाभ भी नहीं होगा, हानि भी नहीं होगी।

(ङ) रमेश पढ भी नहीं सकता, लिख भी नहीं सकता।

4. नीचे लिखे वाक्यो को ध्यान से पढिए

(1) रश्मिकात ने कहा, "आज डबली बाबू ने हमें ट्रस्ट के बगीचे मे बुलाया है।"

(2) मैने कहा, "नमस्कार डबली बाबू! आपने बडा कष्ट किया। किसी माली को भेज देते।"

ध्यान दीजिए लेखक या वक्ता के कथन को जैसा का तैसा उद्धृत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न (" ") का प्रयोग किया जाता है। नीचे लिखे अवतरण मे उद्धरण चिह्न लगाकर पुन. लिखिए ·

मै एक अच्छा माली आपके पास भेजूँगा, यह कहते हुए बंगाली महाशय के साथ गेट के बाहर जाते- जाते डबली बाबू फिर लौट पडे और पुन कहने लगे, एक बात तो मैं भूल ही गया, बाई कहाँ है?

5 निम्नलिखित का अपने वाक्यो मे प्रयोग कीजिए
कजरारे बादल, नन्ही-नन्ही फुहारे, सारस-सी डगे, फूट-फूट कर रोना, पसीना छूटना।

योग्यता-विस्तार

1 वन-महोत्सव क्या है और क्यो मनाया जाता है? इस सबध मे जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. पर्यावरण संरक्षण में पेड-पौधो की भूमिका पर कक्षा मे चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वन महोत्सव – (वन+महा+उत्सव) वृक्षो और वनो के अधाधुध कटने से उत्पन्न अभाव को पूरा करने के लिए सरकार ने वृक्षारोपण का व्यापक कार्यक्रम बनाया है, जिसमे प्रत्येक वर्ष जुलाई के प्रथम सप्ताह मे पूरे देशभर मे वृक्ष लगाए जाते है।

ट्रस्ट – न्यास, दूसरो के लाभार्थ सपत्ति का प्रबंध सौपना।

डग – कदम, पग

विरल – बहुत कम

अतिरेक – अधिकता

शहादत – गवाही, सबूत

कोकणी – कोकण प्रदेश की

घरोबा – घरेलू सबध

कृतज्ञता – एहसान

आर्द्र – नम, गीले

बारीकी से सर्वेक्षण – भलीभॉति छानबीन करना

निर्दिष्ट – बताए हुए

वमन – उलटी

पित्त – आयुर्वेद ने मानव शरीर मे वात, पित्त और कफ तीन द्रव माने है। इनमे से किसी भी एक का सतुलन बिगड जाने पर शरीर रोगग्रस्त हो जाता है।

बाई – महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान मे महिलाओ के लिए प्रयुक्त आदरसूचक शब्द, जैसे जीजाबाई, लक्ष्मीबाई आदि।

थोडी हरारत – हलका बुखार

तन्मयता – किसी काम मे लीन होने का भाव, तल्लीनता

अन्यमनस्क – अनमने भाव से, बिना मन के

चार्ज – अधिकार

मातहत – अधीन

आश्वासन – भरोसा

कमली – छोटा कबल

मातमपुरसी – शोक प्रकट करना

सात्वना – तसल्ली, सतुलन

अहाता – चारो ओर से दीवार से घिरी जगह

ऊँघती-सी झोपडी – चहल-पहल से रहित छोटा-सा घर



7. मुक्ति की आकांक्षा

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बहुत बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उन्हें
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
बाहर दाने का टोटा है,
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिये का डर है,
यहाँ निर्द्वंद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया
मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी,
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा, निकालेगी,
हरसूँ ज़ोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

— सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

प्रश्न–अभ्यास

बोध और सराहना

1 चिडिया मुक्ति का गाना क्यो गाना चाहती है? उपयुक्त उत्तर पर (✓) चिह्न लगाइए

(क) वह आराम से जीना चाहती है।

(ख) वह जोर से गाना चाहती है।

(ग) वह स्वतंत्र रहना चाहती है।

(घ) वह दूसरे पिंजडे मे रहना चाहती है।

2 पिंजडे के बाहर चिडिया को किन–किन कठिनाइयो का सामना करना पड सकता है?

3 पिंजडे से निकलने का प्रयास करते हुए चिडिया को मारे जाने की आशका किससे हो सकती है?

4 कवि ने पिंजडे के भीतर और बाहर की स्थितियो को तुलनात्मक रूप मे प्रस्तुत किया है। पहले दिए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित सूची को पूरा कीजिए ·

पिंजडे मे	पिंजडे से बाहर
(क) कटोरी मे भरा जल गटकना है	(क) पानी के लिए भटकना है
(ख) चुग्गा मोटा है	(ख)
(ग)	(ग) बहेलिये का डर है

5 पराधीन चिडिया के सदर्भ मे यह कविता पराधीन व्यक्ति की स्थिति और भावना को भी दर्शाती है, जैसे. 'पिंजडा' मनुष्य के सदर्भ मे पराधीनता के बंधन को व्यक्त करता है। इस कविता मे से वे शब्द और स्थितियॉ छॉटिए जो पराधीन व्यक्ति पर भी समान रूप से लागू हो सकती है।

6. कविता की किन पक्तियो का यह आशय है कि पिंजडे के बाहर बहुत कुछ तो है पर वह आसानी से नहीं मिल सकता है।

7 इस कविता के लिए कोई दूसरा उपयुक्त शीर्षक बताइए।

योग्यता-विस्तार

1. 'पराधीनता की मेवा से आजादी की सूखी रोटी कहीं अच्छी है।' इस विषय पर कक्षा मे दो मिनट बोलिए।
2. अपने पुस्तकालय से अथवा अपने अध्यापक से निम्नलिखित कविताएँ प्राप्त कर पढिए
   (क) चिडिया–आरसी प्रसाद सिह
   (ख) हम पंछी उन्मुक्त गगन के–शिवमंगल सिह 'सुमन'।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मुक्ति – स्वतंत्रता, आजादी

आकांक्षा – इच्छा

निर्मम – कठोर, जालिम

जिस्म – शरीर

गटकना – पीना

टोटा – कमी

चुग्गा – खाना, दाना, पक्षियों का भोजन

मोटा – अधिक, पर्याप्त

निर्द्वंद्व – स्वच्छद, बिना किसी रुकावट के

आशंका – भय

हरसूँ – भरसक, हर प्रकार से

8. सेनापति तात्या टोपे



18 अप्रैल, 1859 ई.। आगरा-बंबई मार्ग पर ग्वालियर से लगभग 100 किलोमीटर दक्षिण में शिवपुरी के आसपास ग्रामीणों की भीड गुमसुम पहाड़ियों पर बढ़ती जा रही थी, ठीक उसी तरह जैसे सूरज आसमान पर चढ़ता जा रहा था। गरम लू के थपेड़े सवेरे से ही मौसम को तपा रहे थे, फिर भी हज़ारो की सख्या में गोरी पलटन के सिपाही सारे इलाके मे टिड्डी दल की भाँति फैले हुए थे।

विशाल वृक्ष के नीचे काला भीमकाय जल्लाद खड़ा था। मोटी डाल पर फॉसी का फदा झूल रहा था। सारा मैदान सैनिकों से भरा था तथा आसपास की पहाड़ियाँ जनसमुदाय से। साँस रोके हुए विशाल जनसमूह चुपचाप प्रथम स्वतत्रता सग्राम का सूर्यास्त देख रहा था।

एक कैदी बेड़ी हथकड़ियो से जकड़ा हुआ फाँसी के लिए लाया गया। गोरे सैनिकों के घेरे में वह मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ फाँसी के तख्ते के निकट

आ पहुँचा। भारी-भरकम बेड़ियों की आवाज से सारा मैदान दहलने लगा। दो लुहारों ने आकर उसकी बेड़ियाँ काटीं। ठिकने कद के इस गठीले कैदी ने हाथ ऊपर उठाकर उपस्थित जन-समुदाय का अभिवादन किया। फाँसी के तख्ते पर पहला कदम रखने से पूर्व वह झुका। धरती माँ की पवित्र माटी से अपने माथे पर तिलक लगाया। इस समय कई गोरे निशानेबाज़ सिपाही इस कैदी की ओर बंदूकों का निशाना साधे सावधान खडे थे। उन्हे आदेश था, ''यदि कैदी भागने की चेष्टा करे तो फ़ौरन गोली मार दो।''

तात्या टोपे ने हँसते हुए अपने हाथ से फाँसी का फंदा गले मे डाला। वह मौत के कुएँ में झूल गया। इस प्रकार माँ भारती का वह बहादुर सपूत शहीद हो गया, अपने पीछे एक अमर-गाथा छोड़कर ....।

तात्या टोपे का बचपन का नाम रामचद्र पांडुरंग भट्ट था। इनके पिता पांडुरग भट्ट, बाजीराव पेशवा द्वितीय के यहाँ बिठूर मे नौकरी करते थे। पेशवा नि.सतान थे, इसलिए उन्होने नाना धोंडो पंत को गोद लिया था। इस प्रकार नाना और तात्या बालसखा थे। नाना साहब, तात्या और मनुबाई तीनो नियमित रूप से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा लेते थे। मनुबाई ही आगे चलकर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम से इतिहास मे प्रसिद्ध हुई। तात्या घुड़सवारी मे अत्यंत निपुण थे। बाजीराव पेशवा ने नाना साहब और तात्या की अंग्रेज़ घुड़सवारो से प्रतियोगिता कराई। घुडसवारी की प्रतियोगिता मे तात्या प्रथम रहे। पेशवा बाजीराव ने तात्या को पुरस्कार के रूप में लोहे का एक टोप प्रदान किया और तात्या टोपे के नाम से सबोधित किया। किसे पता था कि लोहे का टोप पहनने वाला वह वीर बालक प्रथम स्वतत्रता संग्राम का सेनापति बनकर

अंत तक अंग्रेजों को नाको चने चबवाता रहेगा।

बाजीराव पेशवा जब अंग्रेज़ों से हार गए तो उन्हें अंग्रेज़ों के साथ संधि करनी पड़ी। समझौते के अनुसार अंग्रेज़ो ने उन्हें आठ लाख रुपए की सालाना पेंशन देना तय किया था।

लार्ड डलहौज़ी ने देशी रियासतों को हड़पने का एक खूबसूरत उपाय निकाला। उसने घोषणा की कि जो राजा निःसतान हैं, वे अपने उत्तराधिकारी के रूप में किसी को गोद नहीं ले सकते और उनका राज्य अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया जाएगा। फलस्वरूप उन्होंने नाना साहब को बाजीराव पेशवा का दत्तक पुत्र मानने से इनकार कर दिया।

1851 ई. मे बाजीराव की मृत्यु हो गई। अंग्रेज़ों ने पेंशन बंद कर दी। नाना ने कलेक्टर से लेकर ब्रिटिश संसद तक अपील की, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। उलटे उन्हें यह धमकी मिली कि अंग्रेज़ सरकार जब चाहेगी उनसे बिठूर की जागीर भी छीन लेगी।

1857 ई. में अंग्रेज़ों के विरुद्ध देशभर में क्रांति की आग सुलग चुकी थी। नाना जब युद्ध की तैयारी कर रहे थे, उसी समय अंग्रेजों ने कानपुर पर आक्रमण किया और उनके महल पर अधिकार कर लिया। इस पर तात्या टोपे ने तलवार उठा ली और वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। अंग्रेज़ सेनापति हैवलाक और तात्या की सेना के बीच घमासान युद्ध हुआ। तात्या की जीत हुई और उन्होंने बिठूर पर फिर से अधिकार कर लिया। पर बाद में और अंग्रेज़ी सेना बाहर से पहुँच गई और तात्या को पीछे हटना पड़ा।

तात्या बिठूर से ग्वालियर पहुँचे। वहाँ उन्हे बहुत बड़ी सैनिक सहायता

मिली। अब वे कालपी पहुँचे और वहाँ के किले पर कब्ज़ा करके उसे अपना केंद्र बनाया। जब काफी बडी सेना हो गई, तो वे कानपुर पहुँचे। वहाँ के अंग्रेज़ जनरल को हराकर उन्होने कानपुर पर अधिकार कर लिया, परंतु जब लखनऊ और इलाहाबाद से अंग्रेजी सेनाएँ आ गई तो उन्हें कानपुर से हाथ धोना पड़ा और तात्या को कालपी वापस आना पडा। यहाँ आकर उन्होने रात-दिन एक करके अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाई।

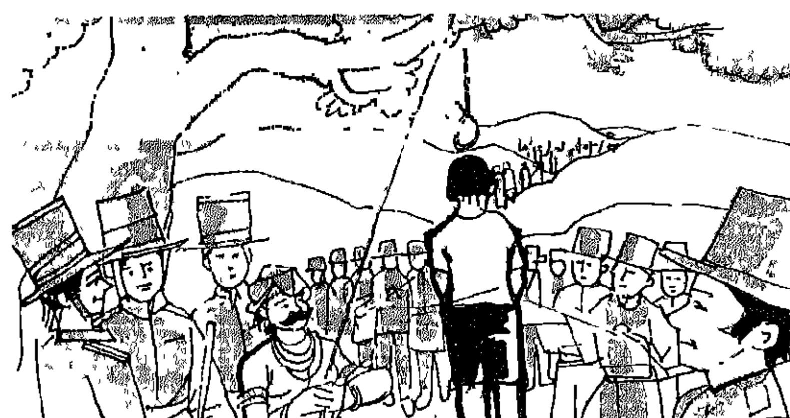
इसी समय झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेज़ सेनापति सर ह्यूरोज़ में युद्ध छिड़ गया। रानी ने तात्या टोपे से सहायता माँगी। वे चौदह हज़ार सैनिक लेकर झाँसी पहुँचे। वहाँ ह्यूरोज़ की सेना से तात्या की सेना को काफ़ी नुकसान पहुँचा। तात्या कालपी लौट आए। इसी बीच रानी भी कालपी पहुँच गई। वहाँ दोनो ने ग्वालियर की सेना को मिलाने का विचार किया और दोनों ग्वालियर की ओर बढे। वहाँ के तत्कालीन महाराजा जियाजीराव सिंधिया ने लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे को किसी प्रकार की सहायता नहीं दी। तात्या टोपे की दूरदर्शिता के कारण सिंधिया के सैनिको ने बगावत कर दी और तात्या टोपे से जा मिले। सिंधिया को आगरा भागकर अपनी जान बचानी पडी।

ह्यूरोज़ एक विशाल सेना लेकर रानी की पीछा करते-करते ग्वालियर पहुँचा। घमासान युद्ध हुआ जिसमे रानी वीरगति को प्राप्त हुई।

तात्या टोपे अब अकेले पड़ गए। वे बची-खुची सेना लेकर नागपुर की ओर बढ़े। वे चाहते थे कि नर्मदा नदी के पार दक्षिण भारत के राजाओं से मिलकर अंग्रेजों को भारत से निकाल बाहर करने की कोशिश की जाए। अंग्रेज़ सेनापतियों के अवरोधों के बावजूद वे नर्मदा पार करने में सफल हो गए। पर

वे जिस उम्मीद और उद्देश्य से दक्षिण भारत गए थे, वे पूरे नहीं हुए। निराश होकर वे लौट आए और मध्य भारत के जंगलों मे छिपकर अंग्रेज़ो से छापामार युद्ध करते रहे। इससे अंग्रेज़ी सेना को काफ़ी नुकसान पहुँचा। अंग्रेज़ी सेना तात्या टोपे के नाम से ही घबरा उठती थी। उन्हे डर रहता था कि न जाने कब और किस ओर से टोपे धावा बोल देगे और मारकाट करके जंगलो मे छिप जाएँगे। अंग्रेज इतिहासकार मालसन ने लिखा है, "संसार की किसी भी सेना ने कभी कहीं पर इतनी तेज़ी के साथ कूच नहीं किया, जितनी तेजी से तात्या की सेना कूच करती थी.......... जिस बहादुरी और हिम्मत के साथ तात्या ने अपनी योजनाओं को पूरा करने का प्रयत्न किया, उसकी जितनी प्रशसा की जाए, कम है।"

फरवरी 1859 ई. तक तात्या टोपे गिरफ़्तार नहीं किए जा सके। वे अंग्रेज़ी फ़ौज को नाको चने चबवाते रहे और सेनापतियों तथा अधिकारियो की नींद हराम करते रहे।



आखिर अंग्रेज़ो ने अपनी पुरानी चाल चली। उन्होंने तात्या के मित्र सरदार मानसिंह को अपनी ओर मिला लिया। एक दिन जब तात्या जंगल में छिपे थे, तो मानसिंह ने उन्हें धोखे से पकड़वा दिया। उनके विरुद्ध फौजी अदालत में मुकदमा चलाया गया। **18** अप्रैल **1859** ई. को शिवपुरी मे फ़ौज के सख्त पहरे में उन्हें फाँसी दे दी गई। हैवान अंग्रेज़ अफ़सरो ने उनके सिर के बाल नोंचकर यादगार के रूप मे रख लिए। न्याय का दम भरने वाले अंग्रेज़ अफ़सरों का ऐसा जघन्य कृत्य विश्व के इतिहास मे खोजे नहीं मिलेगा।

— विभागीय

प्रश्न–अभ्यास

बोध और विचार

1. तात्या के नाम के साथ 'टोपे' क्यो जुड़ा?
2. 18 अप्रैल, 1859 ई को शिवपुरी के आस-पास ग्रामीणो की भीड़ पहाड़ियो पर क्यो बढ़ती जा रही थी?
   (क) गोरी पलटन के हजारो सिपाहियों को देखने के लिए।
   (ख) फॉसी का दृश्य देखने के लिए।
   (ग) तात्या टोपे के अतिम दर्शन के लिए।
   (घ) तात्या टोपे को फॉसी से बचाने के लिए।
3. 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सूर्यास्त' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
4. फॉसी के तख्ते पर पहला कदम रखते ही वीर तात्या टोपे ने सबसे पहले क्या काम किया और क्यों?

5 इस प्रकार माँ भारती का यह बहादुर सपूत शहीद हो गया—अपने पीछे एक अमर गाथा छोड़कर . ' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
6 किन घटनाओ से सिद्ध होता है कि तात्या टोपे एक वीर, कुशल और साहसी सेनानायक थे?
7. 'तात्या टोपे को बंदी बनाने के लिए अंग्रेजो ने अपनी पुरानी चाल चली'—यहाँ पुरानी चाल से क्या आशय है?
8. विदेशी इतिहासकार मालसन ने तात्या की वीरता की किन शब्दों में प्रशंसा की है?
9. लॉर्ड डलहौजी द्वारा देशी रियासतो को हड़पने के उपाय को 'खूबसूरत' क्यो कहा गया है?

भाषा–अध्ययन

1 नीचे लिखे शब्दो को बोलकर पढ़िए
शिवपुरी, बढ़ती, सवेरा, विशाल, स्वतंत्रता, बेड़ी, अभिवादन, बंदूक, सावधान, बहादुर, बिठूर, पेशवा, तलवार, चबवाना, ग्वालियर।

ध्यान दीजिए: 'ब' का उच्चारण दोनों होठो को मिलाकर होता है जबकि 'व' का उच्चारण नीचे के होंठ और ऊपर के दाँत के मिलने से होता है, जैसे बात–वात। 'ब' और 'व' वाले अन्य शब्द पाठ से छाँटकर लिखिए और बोलकर पढ़िए।

2. नीचे लिखे शब्दों में से प्रत्यय (उदाहरण के अनुसार) छाँटकर उनके सामने लिखिए
उदाहरण: भारतीय–ईय

पहाड़ी	बुराई	खूनी	सालाना
रसीला	दुकानदार	कालापन	सौदागर

3. उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए शब्दो के लिए दो उपयुक्त विशेषण लिखिए :
उदाहरण : ऊबड़खाबड़ सुनसान मार्ग

वृक्ष कैदी

मैदान

4. उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए वाक्यों को बदलिए .

उदाहरण

बाजीराव पेशवा ने अंग्रेजों के साथ संधि की।

→ बाजीराव पेशवा को अंग्रेज़ो के साथ संधि करनी पड़ी।

(क) अंग्रेजी सेना के पहुँचने पर तात्या टोपे पीछे हटे।

(ख) तात्या कालपी वापस आए।

(ग) शीला ने अपने अधिकार के लिए लडाई लडी।

(घ) मोहन और सोहन आधी रात तक जागे।

5. उपयुक्त मुहावरा छॉटकर रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए ·

दुम हिलाना, नाको चने चबवाना, नींद हराम करना, हाथ धोना, वीरगति को प्राप्त होना,

(क) स्वतत्रता संग्राम मे भारत के अनेक सपूत .. . .।

(ख) क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश सरकार की . .. .।

(ग) रुपए न होने के कारण उसे जमीन से.. .. . . ।

(घ) रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों को . . . . ।

(ङ) अपना मतलब निकालने के लिए कुछ लोग अधिकारियो के आगे . ।

योग्यता–विस्तार

1. अपने क्षेत्र के स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख सेनानियों की एक सूची बनाइए और इनमे से किसी एक का जीवन-परिचय लिखिए।
2. भारत के इतिहास से 'फूट डालो और राज्य करो' वाली अंग्रेजों की चाल से संबंधित कुछ घटनाएँ चुनिए और उन्हे कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

गुमसुम – चुपचाप, शांत

टिड्डी दल की भाँति – बडा झुंड, अत्यधिक संख्या में व्यक्तियो का झुड
भीमकाय – विशाल शरीर वाला
शस्त्र – हथियार
दत्तक पुत्र – अपना पुत्र न होने पर किसी दूसरे के पुत्र को विधि अनुसार अपना पुत्र बना लेना, गोद लिया पुत्र
घमासान – भयकर, भीषण
अवरोध – रुकावट
छापामार – अचानक हमला
जघन्य – नीच, निदा करने योग्य
मैदान दहलने लगा – मैदान हिलने लगा
नाकों चने चबवाना – बहुत परेशान करना
हाथ धोना पडा – छोडना पडा, खोना पडा
रात-दिन एक करना – निरतर प्रयत्न करना
वीरगति प्राप्त करना – युद्ध मे लडते-लडते प्राण दे देना
नींद हराम करना – बहुत परेशान करना
कूच करना – सेना का युद्ध के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना

विशाल भारत के दो छोर हैं– कन्याकुमारी और हिमालय। कन्याकुमारी की सागर–तरंगें अपने मंदहास से हमें चकित करती हैं। सागर के झाग को देखते–देखते मन मे आया कि एक बार कश्मीर की बर्फ़ीली चोटियो की झाँकी मिले तो कितना अच्छा हो। यात्रा–साहित्य में भी कश्मीर का वर्णन पढते–पढ़ते यह इच्छा बार–बार उभर उठती थी।

ईश्वर की इच्छा मुझे कोरी कल्पना से ही सतुष्ट रखने को नहीं थी। उसने कश्मीर को सचमुच देख लेने का सुयोग दिया और एक दिन गोश्रीनगर (कोचीन) से मैं श्रीनगर के लिए रवाना हो गया।

कश्मीर का नाम प्रत्येक भारतीय को लुभाता है। किसी ने यहाँ तक कहा है कि पृथ्वी पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है। कहा जाता है आज जहाँ घाटी है, वहाँ पहले सतीसर झील थी, जो पर्वतों की बर्फ़ के पिघलने से बनी थी। महाभारत–काल से ही कश्मीर–शासकों की गाथाएँ मिलती है। आगे प्रामाणिक इतिहास के युग में सम्राट अशोक ने कश्मीर में अनेक बौद्ध विहार एव स्तूप बनवाए थे। इतिहास की लंबी परपरा मे सम्राट ललितादित्य का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसका साम्राज्य बहुत ही समृद्धिशाली था। वे स्वयं साहित्यकार और कलाप्रेमी थे।

कोचीन से श्रीनगर की लंबी यात्रा में रेल द्वारा अनेक प्रदेशों से गुजरता हुआ मै जम्मू (जम्मू तवी) पहुँचा। जम्मू के पर्वतीय नगर से श्रीनगर की बस

मे बैठते समय मन जोशीला था। प्रभाती पवन मे चुभन-भरी शीतलता थी। सोचा कि पाँच-छह घंटे की यात्रा होगी। मगर बारह घंटे की यात्रा की बात सुनकर पहले कुछ घबराया। जब सुना कि एक ही चालक पूरे बारह घटे चलाएगा, तब तो और भी सकपकाया। एक तरफ़ ऊँचे पहाड़ों से भारी पत्थरों के लुढ़ककर गिरने की सभावना, दूसरी तरफ़ ज़रा-सा फिसलने पर पाताल में बहती झेलम की तीव्र धारा मे गिर जाने का भय।

वैसे पहाड़ी पथ पर बस में चलने की आदत केरलवासियों के लिए नई नहीं है। कालीकट एव कैण्णूर से मैसूर का रास्ता इसी तरह का है। कोट्टायम से तक्कड़ी का रास्ता भी कम पहाड़ी नहीं है। वहाँ कभी-कभी इक्के-दुक्के जंगली हाथियों के आक्रमण का भी डर रहता है। तो भी हिमालय की गोदी में जितनी विकट दशा है उतनी अन्यत्र नहीं।

रास्ते में देखा, कठोर प्रकृति से संघर्ष, समझौता और प्रेम करके कितने ही मामूली लोग अति दुर्गम ऊँचे पर्वतीय प्रदेश में भी कृषक जीवन बिताते हैं। जगल में मंगल करते है। रास्ते में, बीच-बीच मे छोटे-छोटे कस्बे आते हैं, दुकानों की कतारें, छोटी-बड़ी पाठशालाएँ, होटल, सिनेमाघर भी। देहाती इन्हें शहर ही मानते है।

चढाई और उतराई, उतराई और चढ़ाई का बारी-बारी से अनुभव करते और जहाँ- तहाँ थोड़ा-सा विश्राम, नाश्ता करते हुए हम शाम को साढ़े चार बजे बनिहाल रेस्ट-हाउस के सामने पहुँचे। स्थानीय भूगोल की जानकारी के अभाव में कैसे पता लगता कि हम कितनी ऊँचाई पर है? यहाँ जलपान और विश्राम में पहले से अधिक समय लगा, तो कुछ देर चहलकदमी करता रहा।

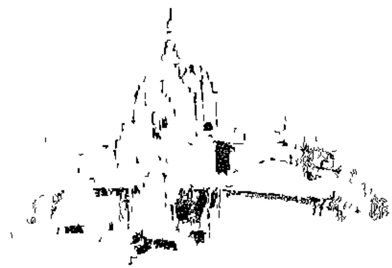
बगल की दुकान पर मंगलोर की बनी बीड़ियो का बडल देखकर कौतूहल हुआ। छोटी-छोटी ज़रूरी चीज़ें सारे देश को कैसे एकतामय कर देती हैं। खोजने पर केरल का बना साबुन भी शायद मिल जाता।

बस अब तेज़ चाल से जवाहर-सुरंग की ओर बढ़ी। इस पथ को पार करते हुए पुलकित हुए बिना नहीं रह सकते। इंजीनियरों की अद्‌भुत प्रतिभा, अदम्य साहस और कार्य-शक्ति ने इस दुर्गम पर्वत में विशाल सुरंग-पथ बनाकर कश्मीर और शेष भारत का पथ पूरे वर्ष भर चलने लायक बना दिया। प्रकाश-धारा बहाती, सीटी बजाती, बस सुरंग-पथ से आगे बढ़ रही थी। रोमांचकारी दृश्य था। मानव-शक्ति से यंत्र-शक्ति की श्रेष्ठता को मानते हुए हम आगे बढ़ रहे थे। विचारों में डुबकी लगाए रहने से पता ही नहीं चला कि जवाहर-सुरंग कब पार कर ली। अब बस उतार पर चलने लगी और नए समतल स्थान काजीगुंड में पहुँचे। काजीगुंड से श्रीनगर की यात्रा समतल थी, इसीलिए बड़ी तेज़ी रही। पर्वतीय भूमि की जगह भारत के अन्य नगरों के समान किसी नगर का चक्कर लगाने का ही अनुभव हो रहा था। दो घटे मे हम श्रीनगर पहुँचे।

कश्मीर की राजधानी ज्योतिर्मय नगर श्रीनगर के रजकण को प्रणाम कर मैंने अपने को धन्य माना। वर्षो की अभिलाषा जब किसी दिन सफल होती है तब वह आनंद केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है। बर्फ और केसर के नगर में कदम रखने पर मेरी पहली मानसिक प्रतिक्रिया इस सुयोग पर भगवान् को धन्यवाद देने की थी।

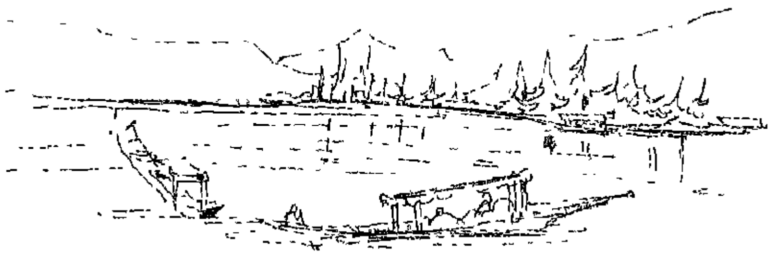
साफ़-सुंदर पर्यटक केद्र के सामने स्वच्छ सड़कें और छोटे-बड़े-हरे मैदान बड़े ही मनमोहक लग रहे थे। नगर के बीच बहती झेलम, जगह-जगह उसे

पार कराने वाले अनेक पुल, जिन्हें कदम कहते है, दिखाई दिए। पहले स्त्री-पुरुषों का लबा कश्मीरी चोगा, ऊनी कपडे, पगड़ी, टोपी आदि देखते समय अनावश्यक लगते थे। मगर इस भूभाग की जलवायु का प्रत्यक्ष अनुभव करने पर इनकी ज़रूरत प्रमाणित हो गई, काँगड़ी की आवश्यकता भी विदित हुई।



सहज कौतूहल के कारण कश्मीर की भाषाओं के बारे मे प्रश्न करने पर पता चला कि बोलियाँ कई है, पर श्रीनगर में मुख्य रूप से कश्मीरी और उर्दू बोली जाती है।

श्री शंकराचार्य पहाड़ी श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान है। यह मठ बहुत पुराना है और जनश्रुति के अनुसार, यहॉ का मंदिर पांडव वंश के राजाओ का बनाया हुआ है। यहाँ शिवजी और शकराचार्य की मूर्तियॉ हैं और मंदिर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। पहले सड़क से पैदल ही मंदिर तक पहुँच सकते थे। अब मोटर से भी जाया जा सकता है। इस ऊॅचे पहाड पर खड़े होकर श्रीनगर का काफी बड़ा हिस्सा दिखाई देता है। श्रीनगर की डल झील, तैरते बाग और उनके चारों ओर की पहाड़ियों के निराले दृश्य बड़े ही मनोहारी है। केरल में जन्में जगद्गुरु शंकराचार्य जी को उत्तर भारतीय सीमा पर इस गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखकर मेरा मन गर्व का अनुभव कर रहा था।



पहाड़ी से उतर कर सड़क पर आया तो सामने डल झील में शिकारे हवा के झोंको से झूम रहे थे। डल झील कश्मीर की जान है। शायर इसकी तारीफ़ करते नहीं अघाते, छायाकार इसकी रंगीन छवियों को भिन्न-भिन्न कोणों से अब भी उतारते रहते हैं।

प्रथम दृष्टि पर मेरा मन कहने लगा—कोचीन की विशाल झील के सामने यह कुछ भी नहीं है। पर पहाड़, बर्फ़, झील की नौकायात्रा, हाउसबोट आदि अनेक प्रकार के आनंद एक साथ ही एक जगह मिलते है तो कश्मीर में। डल झील उसका मुख्य केंद्र है।

जब हम डल झील पहुँचे तब साँझ हो गई थी। अतएव सैर करने वालो की भीड़ छँट चुकी थी। इक्के-दुक्के शिकारे तालगति पर चप्पू मारते, भिन्न-भिन्न दिशाओं में भटक रहे थे। एक शिकारे का मल्लाह हमें घुमाने को तैयार हो गया। सिर पर कश्मीरी टोपी, दुबला-पतला तन, छोटी-पतली दाढ़ी, साधारण कपड़े, वह डॉड़ मारने लगा और चद मिनट ही बीते होंगे कि साथियो को आवाज़ दे-देकर कुछ बताने लगा। उसका-चेहरा थकावट में भी खिल उठा था। अपने मित्र से मुझे मालूम हुआ कि वह ईद का चाँद देखने की सूचना दे रहा था। हमें झटपट एक किनारे लगाकर वह बोला, "अब मै नहीं चलूँगा, नमाज़ पढ़ूँगा, दूसरे को ले जाइए।"

नए शिकारे का मल्लाह युसूफ़ किशोर था। उसके हाथ बड़ी फुरती से चप्पू चला रहे थे। मेरे साथी भी साथ दे रहे थे। मौज़ मे मल्लाह के गले से सुरीली आवाज़ आने लगी। ठेठ कश्मीरी लोकगीत और ठेठ देहाती कठ। दो-चार पंक्तियाँ ही थे, उन्हीं को बार-बार दुहरा रहा था। कश्मीर की मिट्टी मे ही प्यार-मुहब्बत की महक है। वहाँ की प्रकृति ने जिस प्रकार मिठास और मोहक रंग सेब और केसर में भर दिए है, उसी प्रकार की मिठास और रंग यहाँ के किशोर और किशोरियों को दिल खोलकर प्रदान किए हैं।

— विश्वनाथ अय्यर

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 कश्मीर की घाटी प्रत्येक भारतीय का मन मोहती है, क्योकि .

(क) कश्मीर के नर-नारी बहुत सुदर है।

(ख) कश्मीर एक प्राचीन भू-भाग है।

(ग) कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य अद्वितीय है।

(घ) कश्मीर की डल झील मे नौका विहार का अपना ही आनद है।

2 कश्मीर देखने की इच्छा लेखक को क्यो हुई?

3. सुरग पथ से गुजरते समय लेखक को कैसा लगा?

4 कश्मीर के इतिहास मे सम्राट ललितादित्य का नाम क्यो उल्लेखनीय है?

5. कन्याकुमारी और गोश्रीनगर (कोचीन) भारत के किन राज्यो में स्थित है?

6. मानव-शक्ति से यन्त्र-शक्ति की श्रेष्ठता की बात किस प्रसंग मे कही गई है?

7 डल झील को देखकर लेखक के मन मे पहले क्या विचार आया? बाद मे उन्होने अपना विचार क्यो बदला?

8 भावार्थ स्पष्ट कीजिए

'कश्मीर की मिट्टी मे ही प्यार-मुहब्बत की महक है।'

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो को पढिए

श्रीनगर, विशाल, कश्मीर, सुषमा, समृद्धि, जोशीला, विश्राम, सपन्न, दृष्टि, दृश्य, वर्ष, स्त्री, शेष

2. नीचे लिखे वाक्यो को पढिए

ईश्वर की इच्छा मुझे कोरी कल्पना से ही संतुष्ट रखने की नहीं थी। उसने कश्मीर को सचमुच देख लेने का सुयोग दिया।

ध्यान दीजिए: क्रमांक (2) के वाक्य मे प्रयुक्त ईश्वर के लिए दूसरे वाक्य मे उसने शब्द आया है। 'सज्ञा' के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त होता है, उसे 'सर्वनाम' कहते है। नीचे लिखे वाक्यो मे से सर्वनाम छाँटिए .

(क) मोहन ने कहा कि मै दिल्ली जा रहा हूँ।

(ख) सरिता ने सविता से पूछा कि तुम कब आओगी?

(ग) राम ने सोहन से लता का पता पूछा था लेकिन वह बता न सका।

3. नीचे लिखे वाक्यों में रेखाकित शब्दो पर ध्यान दीजिए ,

(क) दिनेश किताब पढ रहा है।

(ख) यात्रा की बात सुनकर मै घबराया।

(ग) मैंने श्रीनगर के रजकण को प्रणाम किया।

(घ) बस तेजी से चल रही थी।

ऊपर लिखे वाक्यों मे रेखांकित पद क्रिया है। **ध्यान दीजिए**: कुछ क्रिया पद ऐसे होते है जिनमें कर्म की अपेक्षा होती है, जैसे 'पढ रहा है' क्रिया पद को कर्म 'किताब' की अपेक्षा

है। अत. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद है अकर्मक और सकर्मक।

मकर्मक क्रिया की पहचान कर्ता और क्रिया के बीच 'क्या' और 'किसे' लगाकर प्रश्न करने से होती है। ऐसा करने पर यदि कुछ उत्तर मिले तो क्रिया सकर्मक है, नहीं तो अकर्मक। ऊपर दिए वाक्यो मे से अकर्मक और सकर्मक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए।

4 नीचे लिखे वाक्यो को पढिए

(क) लेखक ने कश्मीर की यात्रा की।

(ख) हिमालय और कन्याकुमारी भारत के दो छोर है।

(ग) कश्मीर का नाम प्रत्येक भारतीय को लुभाता है।

(घ) कश्मीर की मिट्टी मे ही प्यार-मुहब्बत की महक है।

(ङ) शिकारे का मल्लाह हमे घुमाने को तैयार हो गया।

ध्यान दीजिए, वाक्य मे प्रयुक्त होने पर शब्द **पद** कहलाते है। जब एक से अधिक पद एक व्याकरणिक इकाई का कार्य करते है तो उन्हे **'पदबध'** कहते है। उपर्युक्त वाक्यो मे आए पद/पदबध छाँटिए।

5 नीचे बाई ओर कुछ विशेषण दिए गए है और दाई ओर कुछ विशेष्य। प्रत्येक विशेषण के साथ उपयुक्त विशेष्य लगाइए

कश्मीरी	चोटियाँ
बर्फीली	शाल
जोशीला	प्रदेश
पर्वतीय	आवाज
सुरीली	भाषण

योग्यता-विस्तार

1. कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दो मे कीजिए।
2. भारत के प्रमुख पर्यटक-स्थलो के चित्रो का सकलन कीजिए।

3 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'उत्तराखड की यात्रा' पढिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मंदहास – धीमी हँसी

कोरी कल्पना – ऐसी कल्पना जो यथार्थ से परे हो

लुभाना – आकर्षित करना

प्रामाणिक – जो प्रमाणों से सिद्ध हो

समृद्धिशाली – सपन्न

विकट – भयंकर

अन्यत्र – और कहीं

प्रतिभा – विलक्षण बुद्धि

अदम्य – प्रबल, जिसको दबाया न जा सके

रोमाचकारी – पुलकित करने वाला

ज्योतिर्मय – प्रकाशयुक्त

जनश्रुति – लोक-प्रचलित

प्रतिष्ठित – विराजमान (प्रतिष्ठा प्राप्त)

शिकारा – कश्मीरी ढग की लंबी नाव जिसके बीच मे बैठने का स्थान छायादार होता है

अघाना – तृप्त, सतुष्ट होना

डाँड़ मारना – चप्पू चलाना



वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नहीं।

वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें जीवन, न रवानी है !
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं है, पानी है !

उस दिन लोगों ने सही-सही
खून की कीमत पहचानी थी।
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में
माँगी उनसे कुरबानी थी।

बोले, "स्वतंत्रता की खातिर
बलिदान तुम्हें करना होगा।
तुम बहुत जी चुके हो जग में,
लेकिन आगे मरना होगा।

आज़ादी के चरणों में जो,
जयमाल चढ़ाई जाएगी।
वह सुनो, तुम्हारे शीशों के
फूलों से गूँथी जाएगी।

आजादी का संग्राम कहीं
पैसे पर खेला जाता है?
यह शीश कटाने का सौदा
नगे सर झेला जाता है"

यूँ कहते-कहते वक्ता की
आँखों में खून उतर आया



मुख रक्त-वर्ण हो दमक उठा
दमकी उनकी रक्तिम काया !

आजानु-बाहु ऊँची करके,
वे बोले, "रक्त मुझे देना।
इसके बदले में भारत की
आज़ादी तुम मुझसे लेना।"

हो गई सभा में उथल-पुथल,
सीने में दिल न समाते थे।
स्वर इनकलाब के नारों के
कोसों तक छाए जाते थे।

"हम देंगे-देंगे खून"
शब्द बस यही सुनाई देते थे।
रण में जाने को युवक खडे
तैयार दिखाई देते थे।

बोले सुभाष, "इस तरह नहीं,
बातों से मतलब सरता है।
लो, यह कागज़, है कौन यहाँ
आकर हस्ताक्षर करता है?

इसको भरनेवाले जन को
सर्वस्व-समर्पण करना है।
अपना तन-मन-धन-जन-जीवन
माता को अर्पण करना है।

पर यह साधारण पत्र नहीं,
आज़ादी का परवाना है।
इस पर तुमको अपने तन का
कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है!

वह आगे आए जिसके तन में
भारतीय खूँ बहता हो।

वह आगे आए जो अपने को
हिंदुस्तानी कहता हो !

वह आगे आए, जो इस पर
खूनी हस्ताक्षर देता हो !
मैं कफन बढ़ाता हूँ, आए
जो इसको हँसकर लेता हो !"

सारी जनता हुंकार उठी–
हम आते हैं, हम आते हैं !
माता के चरणों में यह लो,
हम अपना रक्त चढ़ाते है !

साहस से बढ़े युवक उस दिन,
देखा, बढ़ते ही आते थे !
चाकू-छुरी कटारियों से,
वे अपना रक्त गिराते थे !

फिर उसी रक्त की स्याही मे,
वे अपनी कलम डुबाते थे !
आज़ादी के परवाने पर
हस्ताक्षर करते जाते थे !

उस दिन तारो ने देखा था
हिंदुस्तानी विश्वास नया।
जब लिक्खा महा रणवीरो ने
खूँ से अपना इतिहास नया।

– गोपालप्रसाद व्यास

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1. सुभाषचद्र बोस किस प्रकार के खून को पानी मानते है?
2. सुभाषचद्र बोस ने आजादी दिलाने के लिए क्या शर्त रखी?
3. सुभाषचद्र बोस ने लोगों से खून से हस्ताक्षर करने के लिए क्यो कहा?

4 आशय स्पष्ट कीजिए

- तुम बहुत जी चुके हो जग मे, लेकिन आगे मरना होगा।
- सीने में दिल न समाते थे।
- आगे आए जो अपने को हिदुस्तानी कहता हो।
- आजादी का इतिहास कहीं काली स्याही लिख पाती है ?

5 इस कविता की कौन-सी पक्तियाँ आपको सर्वाधिक ओजस्वी लगीं और क्यों?

6 इस कविता के लिए अन्य उपयुक्त शीर्षक सुझाइए।

योग्यता-विस्तार

- पुस्तकालय से सुभाषचंद्र बोस की जीवन की प्रमुख घटनाओ की जानकारी प्राप्त कीजिए और उन्हे चार्ट पेपर पर लिखकर कक्षा मे लगाइए।
- 'आजाद हिद फ़ौज' के कुछ प्रमुख सेनानियो पर दिल्ली के लाल किले मे मुकदमा चलाया गया था। इस संबध मे अध्यापक की सहायता से तथा पुस्तकालय से पुस्तक लेकर विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

उबाल – जोश

झेलना – सहन करना

वक्ता – बोलने वाला

खून उतर आना – क्रोध आ जाना

रक्त वर्ण – लाल रग

दमक – चमक

रक्तिम काया – लालिमा युक्त शरीर

आजानु-बाहु – घुटनों तक पहुँचने वाली लबी बाँहे

इनकलाब – क्राति

रण – युद्ध
सरना – हल होना, पूरा होना
समर्पण – भेंट करना
परवाना – आज्ञा पत्र, फ़रमान
कफ़न – मृत शरीर के ऊपर डाला जाने वाला वस्त्र
हुंकार – गर्जना, ललकार
रणवीर – योद्धा

11. फूलवालों की सैर

फूल प्रकृति के शृंगार हैं। वे अपने रूप और गुण से सभी को लुभा लेते हैं। उनका रूप जितना चित्ताकर्षक होता है, सुगंध उतनी ही मोहक। आदमी को ही नहीं, देवताओं को भी वे प्रिय हैं। इसलिए फूलों से हम अपने देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, अपने मेहमानों का स्वागत करते हैं। पर्व-त्योहारों के समय हम अपने घरों को फूलों से सजाते हैं। फूल परस्पर आदर, मैत्री और सौजन्य की भावना दर्शाते हैं। इन्हीं भावनाओं के प्रतीक के रूप में हम मनाते आ रहे हैं 'फूलवालों की सैर'। यह एक ऐसा रंगारंग उत्सव है जो मुगल काल से ही दिल्ली में मनाया जाता रहा है।

इस मेले का आरंभ अकबर शाह सानी* के समय में सन् 1812 में हुआ। अकबर शाह अपने बड़े बेटे सिराजुद्दीन (जो बाद में बहादुरशाह ज़फ़र के नाम से मशहूर हुए) की जगह मझले बेटे मिर्ज़ा जहाँगीर को सिंहासन पर बैठाना चाहते थे, क्योंकि उनकी बेगम मुमताज़ महल की यही इच्छा थी। यह बात ब्रिटिश रेजिडेंट ए.सीटन को नहीं भाई। सीटन की बात मिर्ज़ा जहाँगीर को पता चली तो उन्होंने भरे दरबार में सीटन का अपमान कर दिया। उस समय मिर्ज़ा जहाँगीर की उम्र सत्रह-अठारह वर्ष रही होगी। सीटन ने कुछ न कहा, पर अपनी बात मनवाना वह जानता था।

इसके कुछ ही दिनों बाद सीटन बादशाह से भेंट करने दीवाने खास गया।

---

* सानी—द्वितीय



वहाँ से जब वह हाथी पर सवार होकर वापस आ रहा था, मिर्ज़ा जहाँगीर ने उस पर नौबतखाने की छत से गोली चला दी। सीटन तो बच गया लेकिन उसका अर्दली मारा गया। इससे क्रुद्ध होकर सीटन ने मिर्ज़ा जहाँगीर को गिरफ्तार करवा कर इलाहाबाद के किले मे कैद कर दिया।

मिर्ज़ा जहाँगीर को कुछ ही समय बाद रिहा कर दिया गया। इस अवसर पर खूब खुशियाँ मनाई गईं। इलाहाबाद से दिल्ली तक के पूरे रास्ते में जगह-जगह दावतें और आतिशबाज़ियाँ हुई। मिर्ज़ा जहाँगीर शान से दिल्ली वापस लौटे। इस खुशी में बेगम मुमताज़ ने ख्वाजा बख्तियार काकी की मजार पर फूलो की चादर चढ़ाने की तैयारी शुरू की। मुमताज़ महल के साथ दूसरी बेगमें, बादशाह तथा और लोग भी जुलूस बनाकर चले। जिसने सुना वही महरौली की तरफ़ चल दिया। लोगों का कहना है कि उस समय दिल्ली बिलकुल खाली हो गई और महरौली में तिलभर की जगह नहीं बची। सात दिनों तक बादशाह का शिविर महरौली मे लगा रहा। धूमधाम से फूलों की चादर चढ़ाने का प्रबध किया गया। बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया। बादशाह ने आदेश दिया कि सूफ़ी संत की दरगाह के साथ-साथ महरौली स्थित योगमाया मंदिर में भी फूल अर्पित किए जाएँ।

कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध के बाद महाराजा युधिष्ठिर ने योगमाया का मंदिर बनवाया था। इस प्रकार एक प्राचीन मंदिर और एक सूफी के मजार के

बीच फूलों का संबंध बन गया। पहले दिन योगमाया मदिर में फूल चढाए गए। अगले दिन ख्वाजा बख्तियार काकी की दरगाह पर फूलों की चादर चढ़ाई गई। उस अवसर पर कई दिनों तक मेला चला। इससे लोगो में आपसी मेल-मिलाप और एकता की भावना बढी। फिर तो 'फूलवालों की सैर' को हर साल मनाए जाने का फैसला हुआ। बाद मे बादशाह ज़फ़र के समय मेले की रौनक और भी बढ़ गई। बहादुरशाह ज़फर खुद बडे शायर थे और इस मेले में बहुत उत्साह से भाग लेते थे।

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय अंग्रेज़ों ने दिल्ली की नाकेबंदी कर रखी थी। लेकिन जब फूलवालों की सैर का समय आया तो बहादुरशाह ज़फर, बेगमों तथा अन्य अधिकारियो के साथ चाँदनी चौक, लाल कुआँ, अजमेरी गेट होते हुए महरौली पहुँचे और वहाँ तीन दिन रहे। फूलवालों की सैर धूमधाम से मनाई गई। यह मुगल सल्तनत की आखिरी फूलवालों की सैर थी। सन् 1857 की असफल क्रांति के बाद बहादुरशाह ज़फर को कैद करके रंगून भेज दिया गया और अब फूलवालों की सैर अंग्रेज़ों की देखरेख में मनाई जाने लगी। अंग्रेज़ चाहते थे कि हिदुस्तान के लोग मेले-त्योहारों में लगे रहें ताकि वे खुद मनमानी कर सकें। लेकिन अंग्रेज़ एक बात भूल गए। इस मेले का तो उद्देश्य ही एकता और आपसी मेल-मिलाप का सदेश फैलाना था। फूलवालों की सैर के साथ यह भावना बढती गई। अंग्रेज़ों ने जब इस भावना को समझा तो इसे रोकना चाहा, पर अपनी चाल में सफल न हुए। यह मेला परस्पर सद्भाव तथा सांप्रदायिक एकता के प्रतीक के रूप मे चलता रहा।

बाद में 1942 ई में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए 'अंग्रेज़ो भारत छोडो'

आंदोलन के समय इस पर रोक लगा दी गई। सन् 1947 में देश स्वाधीन हुआ। आज़ाद भारत मे सन् 1952 में यह मेला फिर से शुरू किया गया, लेकिन एक साल बाद ही यह फिर बद हो गया।

देश के प्रथम प्रधानमत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय एकता के प्रतीक इस मेले को 1961 ई में फिर से शुरू करवाया। तब से 'अंजुमन सैरे गुलफरोशा' नामक संस्था फूलवालो की सैर हर वर्ष मनाने का आयोजन करती है। स्वर्गीया प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस मेले को एक नया मोड़ दिया। उनकी प्रेरणा से भारत के लगभग सभी राज्यों के सांस्कृतिक दल मज़ार और मंदिर के लिए पंखे लेकर इसमें शामिल होने लगे।

इस अवसर पर हिंदू और मुसलमान दोनों मिलकर मंदिर और दरगाह में जाते हैं। प्रधानमत्री निवास, राजनिवास के यहाँ शहनाई वादन के साथ ही दिल्ली के वातावरण में मेले की गूँज शुरू हो जाती है। महरौली में यह मेला तीन दिन तक मनाया जाता है। महरौली को रोशनी और फूलों से सजाया जाता है। ख्वाजा बख्तियार काकी, कुतुब साहब की दरगाह, शम्शी तालाब, झरने, जहाज़ महल और योगमाया मंदिर की रौनक देखते ही बनती है।

पहले दिन दरगाह पर फूलों की चादर चढ़ाई जाती है, तो दूसरे दिन योगमाया के मंदिर में। तीसरे दिन दिल्ली एवं अन्य राज्यों के पंखे दरगाह और



मंदिर में चढ़ाए जाते है। हज़ारों लोग इकट्ठे होकर उल्लास से देश की एकता तथा सांप्रदायिक सद्भाव का यह पर्व मनाते हैं। विभिन्न राज्यों के सास्कृतिक कार्यक्रम, पतंगबाज़ी, बटेरबाज़ी, कुश्तियॉ, ढोल-ताशे, तलवारबाज़ी, नाच-गाने, कव्वाली, स्वाग, नौटंकी, शायरी, आतिशबाज़ी आदि के मनोरंजक कार्यक्रम देर रात तक चलते रहते है। इतिहास और मनोरंजन से जुड़ा 'फूलवालों की सैर' का यह मेला भारत का ऐसा त्योहार है जो आपसी मेल-जोल और भाईचारे को आगे बढ़ाता है। इसमें हर धर्म और संप्रदाय के लोग खुशी-खुशी शामिल होते है। यह हमें भारत की गौरवशाली मिली-जुली संस्कृति की याद दिलाता है।

— शैलेंद्र

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. 'फूलवालो की सैर' का मेला कहॉ, कब से और क्यो आरंभ हुआ?
2 मिर्ज़ा जहॉगीर ने भरे दरबार मे सीटन का अपमान क्यो किया?
3. 'प्राचीन मदिर और एक सूफ़ी के मजार के बीच फूलों का संबंध बन गया' पंक्ति का आशय समझाइए।
4. इस मेले के लिए पडित जवाहर लाल नेहरू और श्रीमती इदिरा गाधी के योगदान का वर्णन कीजिए।
5. 'फूलवालो की सैर' के मेले को आपसी मेलजोल और भाईचारे का प्रतीक क्यो माना जाता है?
6. 'फूलवालो की सैर' मेले का वर्णन अपने शब्दो मे कीजिए।

7 अंग्रेजो ने फूलवालो की सैर के मेले को पहले क्यो चलने दिया और बाद मे क्यो बद कर दिया?

भाषा-अध्ययन

1 नीचे लिखे शब्दों को ध्यान से पढिए .

फूल, पुष्प, कुसुम, सुमन, गुल

ये सभी शब्द फूल के लिए प्रयुक्त किए जाते है। ऐसे ही शब्दो को 'समानार्थी' या 'पर्यायवाची' शब्द कहते है। नीचे लिखे शब्दो के लिए दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए

सुगंधि	हाथी
नदी	किरण

2. नीचे लिखे शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए

श्रृगार, आदमि, मंदर, गुरू, श्रीमति, शहनाइ, सप्रदायिक

3. दिल्ली भारत की राजधानी है।

ध्यान दें. 'दिल्ली' और 'भारत' क्रमश· नगर और देश के नाम है जबकि 'राजधानी' शब्द किसी भी ऐसे नगर के लिए प्रयुक्त हो सकता है जहाँ राजा या शासक रहता हो। किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम का बोध कराने वाले शब्द 'व्यक्तिवाचक' सज्ञा (दिल्ली और भारत) तथा सपूर्ण जाति या समूह के बोधक शब्द 'जातिवाचक' सज्ञा (राजधानी) कहलाते है।

नीचे लिखे शब्दो मे से व्यक्तिवाचक और जातिवाचक सज्ञाएँ छाँटिए

फूल, अकबर, बेगम, बादशाह, इलाहाबाद, योगमाया, अग्रेज, दरगाह, मदिर, जहाज, महल।

4. नीचे कुछ मूल शब्द दिए जा रहे है, जिनसे अनेक नए शब्द बनते है। उदाहरण के अनुसार दिए गए मूल शब्दो से नए शब्द बनाइए।

उदाहरण · आदर – सादर, आदरणीय, अनादार, आदृत, अनादृत, समादृत, निरादर

श्रम युद्ध

धर्म कार्य

मित्र

5 नीचे लिखे उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए

उदाहरण . हम फूलवालो की सैर का उत्सव महरौली मे मनाते है।

→ फूलवालो की सैर का उत्सव महरौली में मनाया जाता है।

(क) इस पर्व पर सास्कृतिक कार्यक्रम होते है।

(ख) महरौली रोशनी और फूलो से सजती है।

(ग) दीवाली पर तरह-तरह के पटाखे छूटते है।

योग्यता-विस्तार

1 फूलवालो की सैर की भॉति हमारे देश मे अनेक मेलो का आयोजन होता है। अपने क्षेत्र में मनाए जानेवाले ऐसे किसी मेले का वर्णन कीजिए।

2 मेले राष्ट्रीय एकता को बढाने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

चित्ताकर्षक – मनमोहक

सौजन्य – सज्जनता

सांप्रदायिक एकता का प्रतीक – विभिन्न सप्रदायो (विभिन्न मतो के मानने वालो) के बीच मेल को दर्शानेवाला

नौबतखाना – द्वार या फाटक के ऊपर का वह स्थान, जहॉ बैठकर शुभ अवसरो पर बाजा (शहनाई आदि) बजाया जाता है

योगमाया मदिर – योगमाया यशोदा और नंद की पुत्री थी, जिसे वसुदेव ने कस को श्रीकृष्ण

के स्थान पर दिया था। कंस ने उसे मारने के लिए उछाला था, किंतु योगमाया कंस के हाथो से छूटकर आकाश मे उड़ गई थी। उसी देवी का मदिर महरौली में बना है

नाकाबंदी – घेरा डालना, घेराबंदी

सद्भाव – अच्छी भावना

मजार – किसी मुसलमान सत, महात्मा की कब्र

महरौली – दिल्ली के दक्षिण में स्थित ऐतिहासिक स्थान जहाँ कुतुबमीनार है। यहाँ अनेक महल थे जो अब खडहर-रूप में रह गए है। इन महलों मे बहुत-सी महराबें बनी होने के कारण मेहरावली प्राचीन नाम था जो अब महरौली हो गया है

बटेरबाज़ी – बटेर लडाने का खेल, बटेर पालने का शौक

स्वांग – पजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश आदि राज्यों मे प्रचलित एक लोकनाट्य।

नौटंकी – उत्तर भारत का एक लोकनाट्य

12. संत कवि तिरुवल्लुवर

भारत अनेक साधु-संतों और ऋषि-मुनियों की भूमि रही है, जिन्होंने अपने आदर्शो से मनुष्य को सुख, शांति और सतोष का जीवन बिताने की प्रेरणा दी है। ऐसे ही संतों की श्रेणी में आते हैं तमिलनाडु के संत कवि तिरुवल्लुवर।

उत्तर भारत के महान् संत कवि कबीर और दक्षिण भारत के संत कवि तिरुवल्लुवर में अद्भुत साम्य है। इन दोनो के माता-पिता ने इन्हें जन्म देकर कहीं छोड दिया था और फिर निस्संतान दंपतियों ने इनका लालन-पालन बड़े स्नेह और यत्न से किया था। व्यवसाय से भी दोनो ही जुलाहे थे। दोनों ने गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए सात्विक जीवन की साधना की थी। इतना ही नहीं, दोनों के जीवन की अनेक अलौकिक घटनाएँ भी समान थीं।

प्रसिद्ध जनश्रुति के अनुसार तिरुवल्लुवर के पिता का नाम भगवन और माता का नाम आदि था। भगवन जाति के ब्राह्मण थे और आदि अछूत जाति की कन्या थी। किसी कारण से भगवन ने सदा घूमते रहने का व्रत ले लिया था और इसलिए वे अपनी पत्नी के साथ सदा घूमते रहते थे। एक दिन से अधिक वे कहीं टिकते न थे। भगवन और आदि अपने शिशुओं को जन्म होते ही छोड़कर चल देते थे। तिरुवल्लुवर को भी उन्होंने पैदा होते ही छोड़ दिया था। यह नवजात शिशु वल्लुव (जुलाहा) जाति की एक दयालु स्त्री को एक पेड़ के नीचे पत्तियों पर लेटा मिला। उस स्त्री के कोई संतान न थी। नवजात शिशु



को देखते ही उसका मातृत्व उमड़ आया और भगवान् का प्रसाद समझकर उसे उठाकर घर ले आई। उसका पति भी बालक को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और दोनों ने मिलकर बड़े यत्न और प्रेम से बालक को पाला।

वल्लुव घर में पालन होने के कारण बालक का नाम वल्लुवर पड़ा और वही अपने उच्च धार्मिक भावों के कारण बाद मे तिरुवल्लुवर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तमिल भाषा मे 'तिरु' आदर सूचक शब्द है जो हिंदी के 'श्री' के समान है। इस प्रकार तिरुवल्लुवर का आशय हुआ श्री वल्लुवर।

तिरुवल्लवुर जब बड़े हुए तो उन्हे अपने जन्म की कहानी ज्ञात हुई। इससे उनमें वैराग्य भाव जागा। अपने धर्मपिता और धर्ममाता से अनुमति लेकर उस समय की परंपरा के अनुसार वे तपस्या करने के लिए घनघोर जगल मे चले गए। उन्होंने वन में तपस्वियों की देखरेख में ध्यान और योग का कठिन अभ्यास किया और तन्त्र-मंत्र की सिद्धियाँ भी प्राप्त कीं। लेकिन थोड़े ही दिनों में इन सबसे उनका जी उचट गया। उन्होने सोचा, संसार की सेवा करने के लिए हमें संसार के लोगो के बीच रहना चाहिए।

अब तिरुवल्लुवर जंगल छोड़कर नगर में आ गए और इधर-उधर घूमने लगे। घूमते-घूमते वे नगर के एक धनवान व्यक्ति के घर पहुँचे। उस धनवान

का नाम मार्गसहाय था। किसी कारण से वह बड़े सकट मे पड गया था। तिरुवल्लुवर ने उसका सकट दूर कर दिया।

मार्गसहाय के एक कन्या थी, रूप-गुण सपन्न और विदुषी। उसका नाम वासुकी था। उसने अपनी पुत्री वासुकी का विवाह तिरुवल्लुवर के साथ कर दिया।

विवाह के बाद तिरुवल्लुवर अपनी पत्नी के साथ अपने गाँव 'मयलापुर' आकर रहने लगे। आजीविका के लिए उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय—बुनाई का काम आरंभ किया। पति-पत्नी दोनों बडे प्रेम और सुख से रहने लगे। दोनों सादा जीवन बिताते और परोपकार के कार्य करते।

एक बार एक सन्यासी उनके घर आया। वह गृहस्थ जीवन से घृणा करता था। उसका विश्वास था कि स्त्री के साथ रहने पर ईश्वर-भक्ति नहीं हो सकती। तिरुवल्लुवर और वासुकी के सुखी गृहस्थ-जीवन और उनकी ईश्वर मे अनुरक्ति देखकर उसने पूछा, "आपकी दृष्टि से गृहस्थ का जीवन श्रेष्ठ है या संन्यासी का?" तिरुवल्लुवर ने कोई उत्तर नहीं दिया। इतना ही कहा, "आप हमारा आतिथ्य स्वीकार कर स्वय अनुभव कर लीजिए।" पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति प्रेम, निष्ठा और सहयोग भाव के साथ-साथ ईश्वर-भक्ति में अनुरक्ति देखकर सन्यासी के मन से नारी जाति के प्रति दुर्भावना जाती रही। वह गद्गद होकर बोला, "यदि वासुकी जैसी पत्नी हो तो गृहस्थ-जीवन ही श्रेष्ठ है। इससे ईश्वर-भक्ति में बाधा नहीं, बल्कि सहायता मिलेगी।" इतना कहकर संन्यासी ने श्रद्धापूर्वक तिरुवल्लुवर और वासुकी के चरणस्पर्श किए और विदा ली।

तिरुवल्लुवर अन्न के महत्त्व को भली-भाँति समझते थे। 'अन्न ही ईश्वर है', ऐसा मानकर वे अन्न के एक-एक दाने को मूल्यवान मानते थे। एक कथा के अनुसार तिरुवल्लुवर जब भोजन करने बैठते तो नियमित रूप से वासुकी से एक कटोरी में साफ़ पानी और एक सूई रखवा लेते थे। परंतु वासुकी इसका कारण नहीं जानती थी। उसने कभी इसके बारे में कुछ पूछा भी नहीं। परंतु जब वह मृत्यु शय्या पर थी तो उसने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "स्वामी, मेरा अंतिम समय आ गया है। आपके आदेशानुसार मैं आपको भोजन परोसते समय पास में एक सूई और कटोरी में पानी अब तक रखती रही हूँ, लेकिन उसका रहस्य नहीं समझ सकी।" तिरुवल्लुवर ने कहा, "मैं सूई और पानी भोजन के समय इसलिए रखवाता था कि अन्न का एक दाना भी बेकार न जाए। यदि अन्न का एक भी दाना भूमि पर गिरता तो मैं सूई से उठाकर और पानी में धोकर उसे खा लेता, परंतु तुम ऐसी सावधानी से भोजन परोसती थी कि कभी एक भी दाना भूमि पर न गिरा।" अपने पति के विचारों को जानकर वासुकी को परम सुख मिला और उसने चैन से अपनी आँखें बंद कर लीं। वासुकी की मृत्यु के बाद तिरुवल्लुवर संसार से विरक्त हो गए।

पत्नी के वियोग से उनकी कवित्व शक्ति और अधिक मार्मिक हो गई। जीवन और जगत का व्यापक अनुभव उन्हें था ही। अपने अनुभव के आधार पर उन्होने तेरह सौ तीन 'कुरल' रचे जो तिरुक्कुरल नामक ग्रंथ में सकलित हैं। 'कुरल' का अर्थ है, 'छोटा'। यह आकार की दृष्टि से तमिल भाषा का सबसे छोटा छंद है, जिसमें एक पूरा भाव पिरोया रहता है। यह लगभग पौने दो पंक्तियो का होता है यानि आकार मे दोहे से भी छोटा, जैसे :

तीय्वै तीय पयतलाल कीयवै ।

तीयिनुम अज पडुय

अर्थात् बुरे कर्म का बुरा फल होता है, इसलिए इनसे आग से भी ज़्यादा डरना चाहिए।

तिरुक्कुरल तीन खडों में विभक्त है–धर्म, अर्थ और काम।

'धर्म खंड' में पहले ईश्वर-वंदना, वर्षा का महत्त्व, संन्यासी का महत्त्व और धर्म की शक्ति का वर्णन है। 'अर्थ-खड' में शासन, राजा के गुण और कर्म-शिक्षा, अशिक्षा, शक्ति, समय और स्थान का बोध, विवेक, सुशासन, गुप्तचर, मंत्री, किला, सेना, मत्री आदि विषयो का वर्णन है। 'काम खड' मे स्त्री-पुरुष के सबधो का वर्णन है। इन तीनो का निर्वाह करके व्यक्ति जीवन के महानतम लक्ष्य–मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

तिरुक्कुरल को तमिल भाषा का वेद माना जाता है। जैनी, वैष्णव, शैव आदि इसे अपना-अपना आदि काव्य तथा तिरुवल्लुवर को अपना प्रथम कवि मानते है।

तिरुक्कुरल का अनुवाद हिंदी, उर्दू, संस्कृत, तेलुगु, मलयालम, मराठी आदि भारतीय भाषाओं मे और अंग्रेज़ी, रूसी, फ्रेंच, जर्मन, सिंहली आदि विदेशी भाषाओं में हुआ है। नीचे कुछ कुरलो के भावार्थ दिए जा रहे है :

- वंशी मधुर है, वीणा मधुर है–ऐसा वही कहते है जिन्होंने अपने शिशु की तोतली बोली का रस न चखा हो।
- बच्चों के कोमल हाथों से जिस भोजन में खिलवाड़ हुआ हो, माता-पिता के लिए वह भोजन अमृत से भी अधिक मधुर होता है।

- जैसे सोना तपकर निर्मल और प्रकाशवान होता है, वैसे ही व्यक्ति कष्ट सहन कर पवित्र ज्ञान के प्रकाश से युक्त होता है।
- झूठ न बोलने के गुण को ग्रहण कर लेने से अन्य धर्म करने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

इसमें को शक नहीं है कि तिरुवल्लुवर के ये कुरल थोड़े ही शब्दो मे हमे जीवन के गहन अनुभवों से परिचित कराते हैं।

— नरेंद्र व्यास

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. भारत के ऋषि-मुनियो के जीवन से हमें क्या सदेश मिलता है?
2 तिरुवल्लुवर और सत कबीर के जीवन में क्या-क्या समानताएँ दिखाई देती है?
3. 'तिरुवल्लुवर' नाम का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4 तिरुवल्लुवर का मन तप-साधनों से क्यो उचट गया?
5 गृहस्थ जीवन से घृणा करने वाले संन्यासी ने जाते समय वासुकी के चरण क्यो स्पर्श किए?
6. वासुकी ने किस बात को रहस्य कहा और क्यों?
7 तिरुक्कुरल के तीन खडो के क्या नाम है? और उनका विषयवस्तु क्या है?
8 पाठ मे दिए गए पॉच कुरलो मे से आपको कौन-सा कुरल सबसे अधिक अच्छा लगा और क्यो?
9 इस पाठ के आधार पर तिरुवल्लुवर के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

भाषा-अध्ययन

1 नीचे लिखे शब्दो का शुद्ध उच्चारण कीजिए
जनश्रुति, तिरुवल्लुवर, तिरुक्कुरल, रहस्य, मातृत्व, निस्सतान, शय्या महत्त्व, अद्भुत।

2 **ध्यान दीजिए** जिन ईकारात शब्दो का बहुवचन बनाने के लिए 'यॉ' प्रत्यय लगता है उन शब्दो मे दीर्घ 'ई' (ी) के स्थान पर ह्रस्व 'इ' (ि) हो जाता है, जैसे स्त्री-स्त्रियॉ, नदी-नदियॉ। इसी प्रकार ऊकारात शब्दो के बाद जब–"ओ" लगता है तो दीर्घ 'ऊ' (ू) के स्थान पर ह्रस्व 'उ' (ु) हो जाता है, जैसे हिदू-हिदुओ, बहू-बहुओ। इसी प्रकार के चार-चार उदाहरण पुस्तक से छॉटिए।

3 नीचे लिखे वाक्यो मे रेखाकित पदो पर ध्यान दीजिए

(क) तिरुवल्लुवर अन्न के महत्त्व को भली-भॉति जानते थे।
(ख) लोग तिरुवल्लुवर के उपदेश ध्यानपूर्वक सुनते थे।
(ग) वे धीरे-धीरे बोलते थे।
(घ) वासुकी मद-मद मुसकरा रही थी।

ध्यान दीजिए रेखाकित पद प्रत्येक वाक्य में क्रिया की विशेषता बता रहे है। ऐसे पदों को 'क्रिया-विशेषण' कहते है। इसी तरह के चार उदाहरण इस पाठ से छॉट कर लिखिए।

4 निम्नलिखित वाक्यो को उदाहरण के अनुसार बदलिए .

उदाहरण. वे तीव्र गति से आगे बढते है। → वे तीव्र गति से आगे बढ जाते है।

(1) बीच-बीच में वे ऐसी बाते कहते है। (जाना)
(2) वे हमको अपने छोटे से कमरे मे बिठाते है। (देना)
(3) मेज पर रखे हुए पत्र पढते है। (लेना)
(4) लोगो को कहीं से हीरे मिलते है तो मेरे पास भेजते है। (देना)

योग्यता-विस्तार

1. तिरुवल्लुवर के अतिरिक्त दक्षिणी भारत, पश्चिमी भारत तथा पूर्वी भारत के कुछ संत महात्माओ के बारे मे जानकारी प्राप्त करके उसे कक्षा में सुनाइए।
2. कुछ ऐसे दोहे सकलित कीजिए जो भाव की दृष्टि से पाठ मे आए कुरलो से मिलते-जुलते हों।

शब्दार्थ और टिप्पणी

साम्य – समानता
निस्संतान – सतान रहित
दपती – पति-पत्नी
सात्विक – नेक, सादा
टिकना – ठहरना
मातृत्व – माँ का प्रेम
आजीविका – रोजी-रोटी का साधन
पैतृक – पुरखो का
अनुरक्ति – प्रेम
दुर्भावना – बुरे विचार
मार्मिक – हृदय को छूने वाली

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
रहिमन, मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।। 1 ।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, सो ही साँचे मीत।। 2 ।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजग।। 3 ।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखौ गोय।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहे कोय।। 4 ।।

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय।। 5 ।।

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय।। 6 ।।

यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस, होत-होत ही होय।। 7 ।।

रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।। 8 ।।

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम जिय सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो पड़ोस।। 9 ।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठै सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।। 10 ।।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय।
सदा रहे नहि एकसो, का रहीम पछिताय।। 11 ।।

— अब्दुर्रहीम 'ख़ानख़ाना'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1 निम्नलिखित आशय वाले दोहो को सुनाइए

(क) दिन सदा एक से नहीं रहते।

(ख) उत्तम प्रकृति वालो पर कुसगति का कोई प्रभाव नहीं पडता है।

(ग) बुरे की सगति में रहने से यश घटता है।

(घ) विपत्ति में जो साथ दे, वही सच्चा मित्र है।

(ड) एक समय मे एक ही बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

2. एक-एक वाक्य मे उत्तर दीजिए

(क) हमें अपने नाराज मित्र को बार-बार क्यो मना लेना चाहिए?

(ख) बडे को देखकर हमे छोटो की उपेक्षा क्यो नहीं करनी चाहिए?

(ग) कौन-सी बाते जन्म से प्राप्त नहीं होती है?

(घ) कवि के अनुसार कीचड का जल समुद्र के जल से क्यो श्रेष्ठ है?

(ड) ईश्वर के बराबर आदरणीय कौन बन जाता है?

(च) अपना दुख दूसरो पर प्रकट क्यो नहीं करना चाहिए?

3 रहीम ने अपनी बात के समर्थन मे प्राय किसी लोकोक्ति या उदाहरण का प्रयोग किया है। इस पाठ मे से ऐसी पॉच लोकोक्ति या उदाहरण छॉटिए।

4 रावण के पडोस में रहने से समुद्र की गहिमा कैसे घट गई?

5 इन दोहो मे कौन-सो दोहा आप को सबसे अच्छा लगा? क्यो?

6. कृष्ण और सुदामा की मित्रता के उदाहरण के रूप में इस पाठ के किन दोहो को उद्धृत कर सकते है?

योग्यता-विस्तार

1 कुसग, सच्ची मित्रता, परोपकार से सबंधित कुछ और दोहे संकलित कीजिए।

2. किसी कविता की पक्तियो मे अतिम अक्षरो में जब ध्वनि मे समानता हो तो उसे 'तुक' कहते है, जैसे, पहले दोहे की पहली पंक्ति के अंतिम शब्द 'जाय' और दूसरी पक्ति मे 'अघाय' में ध्वनि-समानता है। पाठ के अन्य दोहो से तुक छाँटिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

साधै – सिद्ध करना, पूरा करना
मूलहि – जड को
अघाना – तृप्त होना, संतुष्ट होना
सगे – अपने
रीत – प्रकार, तरीका
बिपति – मुसीबत, सकट
कसौटी – परख, वह पत्थर जिस पर सोना परखा जाता है।
सो – वे
मीत – मित्र
प्रकृति – स्वभाव
कुसग – बुरी संगत
व्यापत – फैलना, प्रभाव पडना
भुजग – साँप
बिथा – पीडा
गोय – छिपाकर
अठिलैहे – मज़ाक उडाना
कोय – कोई

लखत है – देखते है

धनि – धन्य

पंक – कीचड़

उदधि – समुद्र

जनमत – जन्म लेते ही

बैर – शत्रुता, दुश्मनी

जस – यश, कीर्ति

बड़ेन – बडो

डारि – त्याग देना

कहा – क्या

बसि – बसकर

कुसल – कल्याण, भला

सोस – अफ़सोस

महिमा – महत्त्व, यश

बस्यो – बसा था, रहता था

पोहिए – पिरोइए

मुक्ताहार – मोतियों की माला

पाय – पाने पर, मिलने पर

झरि – झड जाना, नष्ट होना

एकसो – एक समान

एक विशाल काँच के महल मे न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हज़ारो काँचो के टुकडों मे अपनी शक्ल देखकर वह चौंका। उसने जिधर नज़र डाली, उधर ही हज़ारों कुत्ते दिखाई दिए। वह समझा कि ये सब उसपर टूट पडेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखाई पड़े। उसकी आवाज़ की ही प्रतिध्वनि उसके कानों मे ज़ोर-ज़ोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका। सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखाई दिए। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा ज़ोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अत मे गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखाई दिए। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलाई। सभी कुत्तो की दुम हिलती दिखाई दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज़ और चिड़चिडाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो जाता है। मै उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक ज़रूर सीख सकते है।

दुनिया कॉच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पडती है। 'आप भले तो जग भला', 'आप बुरे तो जग बुरा'। अगर आप प्रसन्नचित्त रहते है, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणो की ही ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते है, उन्हे अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते है तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जगल मे चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?"

उन्होंने ज़रा देर सोचकर उत्तर दिया, "मै दूसरो की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।"

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरो का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारो की, कामों की, भावनाओ की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं। उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते है कि शहद की एक बूँद ज़्यादा मक्खियो को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर ज़हर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है? हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती है। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, "लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते है पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।" दूसरों

को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणो पर टीका-टिप्पणी करना बंद कर दे तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।

इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़े तो? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिनभर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा

निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै बिचारा।
आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ है, जिनकी ओर 'निंदक' हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणो को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गई। हमारे मित्र तुरंत बिगड़कर बोले, 'देखिए महाशय, यह आपकी सरासर गलती है। आइंदा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" बेचारे महाशय जी बड़े दुखी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिए ही उठकर चले गए। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकांत में कहा, 'देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?"

उनकी ऑखों में ऑसू छलछला आए। बड़े प्रेम से बोले, "जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मै वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आए तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।"

जब सरदार पृथ्वीसिह ने हिसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और संतोष हुआ। पर बापू जहाॅ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिह से कहा, " सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रम में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।"

पृथ्वीसिंह ज़रा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापूजी?"

"भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगो की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने मे मै सीमेंट का काम करता हूॅ और वह सीमेट मेरी अहिसा ही है।"

"मै समझ गया, बापूजी" ! "पृथ्वीसिंह ने मुसकराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ कहने की ज़रूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था। बापू कड़ी-से-कड़ी आलोचना कर सकते थे और करते भी थे, पर हँसकर, मीठी चुटकियाँ लेकर, अपना प्रेम दरसाकर।

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है। उन्हें गाएँ पालने का शौक था। इसलिए गाएँ और नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार ज़ोर की बारिश आने वाली थी। सभी गाएँ तो

झोंपडी के अदर चली गई, पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनो मिलकर उस बछड़े को पकड़ कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आए पर ज्यो-ज्यो उन्होंने जोर से खींचना शुरू किया त्यो-त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे झोपड़ी की तरफ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अंदर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबे और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार-कुशल अवश्य थी और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते है तो फिर मनुष्य क्योंकर न समझेंगे?

कल हमारे मित्र का रसोइया बिना खबर दिए ही चला गया। बेचारा करता भी क्या ! सुबह से शाम तक उसको महाशय की डॉट खानी पडती थी। "तूने आज दाल बिलकुल बिगाड़ दी। उसमे नमक बहुत डाल दिया।" "अरे बेवकूफ़ तूने साग मे नमक ही नहीं डाला।" "यह जली रोटी कौन खाएगा रे।" आदि की झडी लगी रहती थी। जब कोई चीज़ ज़रा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डाँटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर कभी तारीफ के दो शब्द न बोले जाते। "वाह ! तारीफ़ कर देने से उसका दिमाग चढ़ जाएगा।" मेरे मित्र कह देते। ठीक है ! तो वह भी आदमी है। उसके भी दिल है। बेचारा कुछ रुपए का नौकर यत्र नहीं बन सकता। तग आकर भाग जाने के सिवा और क्या चारा था?

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती--न मित्रो से, न ऑफ़िस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

उस पर भी मज़ा यह है कि वे अपनी ज़िदगी और विचारों से पूरी तरह संतुष्ट है। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श है। दूसरे लोग जो उनका सम्मान नहीं करते, मूर्ख है।

ग्रीस के महान संत सुकरात ने एक बात बड़े पते की कही थी, "जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है; पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।"

अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे?

— श्रीमन्नारायण

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 दोनों कुत्तो के व्यवहार में क्या भिन्नता थी?
2. लेखक ने दुनिया को कॉच का महल जैसा क्यो कहा है?
3. लेखक को अपने मित्र के सबध में भौकने वाले कुत्ते की कहानी क्यो याद आ जाती है?
4. लेखक दूसरो को अपने मित्र के किन-किन दोषो से बचने की राय देता है?
5 आशय स्पष्ट कीजिए
'शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियो को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।'

'लोग दूसरों की ऑखो का तिनका तो देखते है, पर अपनी ऑख के शहतीर को नहीं देखते।'

6. दादू ने निदक का गुणगान क्यों किया है?
7. इस पाठ के लिए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।
8 इमर्सन बछडे को अंदर लाने में सफल नहीं हो सके, किंतु नौकरानी उसे अदर ला सकी। क्यो?
9 रसोइया बिना खबर दिए लेखक के मित्र की नौकरी क्यों छोड गया?
10. 'अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे मे लिखकर टॉग लें।' लेखक ने ऐसा क्यो कहा है?

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए
   नज़र, किस्म, ख्याल, कुरबानी, मशहूर, तारीफ
2 नीचे दिए गए शब्दो के जोड़ो (शब्द-युग्म) के अर्थ में अतर बताते हुए उनका वाक्यो में प्रयोग कीजिए .

   ध्वनि– प्रतिध्वनि   हिंसा– प्रतिहिंसा
   क्रिया– प्रतिक्रिया   फल– प्रतिफल

3. विराम-चिह्न के कारण नीचे लिखे वाक्यो के अर्थ मे आए अतर को समझिए ·
   ठीक है न?
   ठीक है न ।
   इसी प्रकार के वाक्यो को पाठ मे से ढूँढ कर लिखिए।
4. नीचे दिए उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए
   उदाहरण
   उनकी मित्रो, ऑफ़िस के कर्मचारियो [illegible] रो मे से किसी से नहीं बनती।

→ उनकी किसी से नहीं बनती–न मित्रों से, न ऑफिस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरो से।

(क) वह घर बाहर कहीं-नहीं पढ़ता।
(ख) उसका यहाँ-वहाँ कहीं पता नहीं था।
(ग) वे महाशय अपने-पराए किसी की तारीफ नहीं करते।
(घ) उसकी पत्नी को उसका उठना-बैठना, खाना-पीना कुछ भी पसद नहीं।

5. नीचे लिखे मुहावरो के अर्थ लिखकर उनका वाक्यो में प्रयोग कीजिए :
चुटकियाँ लेना, टूट पड़ना, नुक्ताचीनी करना, कोई चारा न होना, आग बबूला हो जाना।

योग्यता-विस्तार

1. इस पाठ मे लेखक ने अपनी बात की पुष्टि के लिए कुछ महापुरुषों के कथन तथा जीवन-प्रसंगो का उल्लेख किया है। इस प्रकार के कुछ अन्य प्रेरक कथन तथा प्रसगो का सग्रह करके उन्हे चार्ट पेपर पर लिखिए और कक्षा मे टाँगिए।
2. 'जानवर प्रेम की भाषा समझते है।' इस सबंध मे कुछ घटनाओं की जानकारी प्राप्त करके उन्हे कक्षा मे सुनाइए।
3. 'निदा करने वालो का अपना महत्त्व है'–इस भाव से मिलते-जुलते भाव वाले कुछ दोहो का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रतिध्वनि – टकराकर लौटी हुई ध्वनि
गश – बेहोश
मिसाल – उदाहरण
नुक्ताचीनी – दोष निकालना
टीका-टिप्पणी – आलोचना करना

ऐब – दोष, बुरा

सरासर – पूरी तरह

आइंदा – भविष्य में

सीमेंट का काम करना – जोडने का काम करना

दृष्टिकोण – सोचने का ढग, देखने का ढंग

त्रुटि – कमी

शहतीर – लंबी-चौडी लकडी

आगबबूला हो जाना – गुस्से से भर उठना

कारगर – सफल

मीठी चुटकियाँ लेना – हँसी-हँसी मे व्यंग्य करना

यंत्र – मशीन

निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौडी बहै बिचारा। आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।	निंदा करने वाला मनुष्य बडा वीर है जो अपने विचारो को बिना कोई कीमत लिए प्रकट करता है। ऐसा करने में भले ही वह स्वय डूब जाता है, अर्थात् दूसरों की बुराई करने का दोष अपने ऊपर ले लेता है, परतु दूसरो को उनकी बुराई का ज्ञान करा देता है। ऐसा व्यक्ति प्रिय है क्योंकि वह सबका कल्याण करता है।

काकोरी कांड के अभियुक्त ठाकुर रोशनसिंह को प्राणदंड की सज़ा मिली। हँसते-हँसते वे फ़ाँसी के तख्ते पर चढ़ गए। तख्ता खिंचा और आँखें कौड़ी-सी निकल पड़ीं। रोशनसिंह तो इस दुनिया से कूच कर गए, पर अपनी बिलखती विधवा और एकमात्र पुत्री को पीछे छोड़ गए। वैधव्य-भार से दबी, दिन-रात आहें भरती और अपनी लड़की के भविष्य की चिंता करती, बेबसी की मूर्ति बनी वह किसी प्रकार अपने दिन काटने लगी।

दो-चार बार जीवन से हाथ धोने का विचार उसके मन में आया, पर अपनी भोली लड़की की सूरत देखकर उसे अपने पति की याद आ जाती और लड़की को पति की थाती समझकर उसकी देखभाल में लगी रहती। रह-रहकर उसे ख्याल आता कि उसके पति दो-तीन वर्ष और बने रहते, तो लड़की के विवाह की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर पड़ती। वर की तलाश में वह किसे भेजेगी, बरातियों के आतिथ्य का भार कौन लेगा और विवाह का खर्च कहाँ से आएगा—इन बातों को सोचकर उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा जाता। अपनी लड़की से छिपकर वह अपने आँसू बहा अपना दिल हलका करती पर पीड़ित विधवा का दिल तो भरियाफूटा



फोड़े के समान होता है। वह ऐसी आग है, जो सुलगती और धधकती रहती है।

ठाकुर रोशनसिह को फॉसी पर चढ़े दो वर्ष हो गए थे। उनके बिछोह का घाव उनकी विधवा के दिल पर अब भी ताज़ा था। हॉ, उसकी टीस कुछ कम ज़रूर हो गई थी, क्योंकि उसका सारा समय अपनी लड़की के लिए वर तलाश कराने और विवाह के लिए खर्च जुटाने की योजना मे ही [illegible]। बडी कठिनाई से उसने एक लड़का तलाशा जो विवाह करने को राजी हुआ, पर हलके के पुलिस दारोगा ने धमकाया कि क्रातिकारी की लड़की से विवाह करने-करानेवाले राजविद्रोही समझे जाएँगे। दो-चार अन्य घरवालो ने पुलिस की धमकी से डरकर रोशनसिह की लड़की से विवाह करने से इनकार कर दिया। अब विधवा के दुखो का अत न था। पति के नाम पर भोली लड़की का विवाह रुक रहा था। देशभक्ति का दम भरनेवाले युवक भी पीछे हट रहे थे। इतना साहस किसमे था कि पुलिस के राजविद्रोह के दोषारोपण को सह सके या उसका विरोध कर सके।

स्थिति बहुत खराब थी। विधवा तो घबराकर गुमसुम-सी थी। खुद ज़हर खाकर अपनी लडकी को ज़हर देकर अपने पति के पास जाने के अतिरिक्त उसके लिए और कोई चारा न था। देश में दानी थे, कथित वीर भी थे और देशभक्ति की कमी तो किसी देश मे होती ही नहीं। पर, उस असहाय विधवा और निर्दोष लड़की की सहायता के लिए कोई कुछ नही कर रहा था। उन दिनों बड़े नेताओं के पास पहुँचने तक की क्षमता और शक्ति किसी देहाती में नहीं थी।

"ठाकुर रोशनसिह की लडकी का विवाह रुका हुआ है," एक युवक ने

संपादक महोदय से कहा।

"क्यों रुका हुआ है? क्या कोई लड़का नही मिलता या खर्च की कमी है?" कलम रखते हुए संपादक ने पूछा।

"दोनों कारण हैं", युवक ने धीरे-से उत्तर दिया।

"रुपये का प्रबंध हो जाएगा, पर अगर कोई लड़का ही राज़ी नहीं हुआ, तो फिर कुछ नहीं हो सकता," गभीर मुद्रा में सपादक बोले।

"लड़का तो राजी है, पर हलके का पुलिस दारोगा उसके घरवालो को धमकाता है कि क्रांतिकारी की लड़की से विवाह करने में खैर नहीं।"

"क्या यह बात ठीक है?" क्रोध और वेदना से संपादक ने पूछा।

"जी हाँ, बिलकुल ठीक है।"

"अच्छी बात है। मुझे कल फर्रुखाबाद में एक सभा का सभापतित्व करना है, पर वहाँ अब मैं न जाऊँगा, तुम्हारे साथ चलूँगा। पुलिस के दारोगा से दो बातें करनी हैं। लड़का राज़ी होना चाहिए, खर्च का प्रबंध मैं कर लूँगा", विश्वास और धैर्य से संपादक बोले।

चौबीस किलोमीटर पैदल चलकर संपादक उस युवक के साथ थाने पर



पहुँचे। दारोगा को थाने से बाहर बुलाकर उन्होंने कहा, "आपको शर्म नहीं आती। मान लीजिए, आपकी मौत हो जाए और आपकी लड़की के विवाह में कोई अड़गा डाले तो आपकी आत्मा को कितना क्लेश होगा? लड़की के विवाह मे तो अनजान लोग भी सहायता करते हैं और आपकी यह मनुष्यता है कि एक निर्दोष लड़की और एक असहाय विधवा को आप सता रहे है।"

पुलिस दारोगा की अक्ल ठिकाने आई, शर्म से उसकी गरदन झुक गई। सपादक के व्यक्तित्व ने उसकी आत्मा पर पड़ा कलुषित परदा हटा दिया था। हाथ जोड़कर उसने माफ़ी माँगी और वह लड़की के विवाह का पूरा खर्च देने को भी तैयार हो गया।

ठाकुर रोशनसिह की लड़की की बरात आई। आतिथ्य का भार दारोगा जी पर था। पूरा खर्च उन्होंने दिया। पर जब विवाह के समय यह प्रश्न उठा कि लड़की का पिता कौन है, तब उसी तपस्वी संपादक ने आगे बढ़कर कहा, "रोशनसिंह के अभाव में लडकी का पिता मै हूँ।"

लड़की के पिता का स्थान लेने वाले यह संपादक थे स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी।

— श्रीराम शर्मा

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 विवाह करने के लिए पहले राजी हुए युवक ने बाद मे विवाह करने से इनकार क्यो कर दिया?

2 ठाकुर रोशनसिह की विधवा को 'बेबसी की मूर्ति' क्यों कहा है?

3. 'क्रोध और वेदना से सपादक ने पूछा', संपादक के क्रोध और वेदना का क्या कारण था?

4 संपादक ने फर्रुखाबाद की सभा मे जाने का विचार क्यों छोड दिया?

5. दारोगा की आत्मा पर पडा कलुषित परदा क्या था?

6. ठाकुर रोशनसिह की बेटी के विवाह मे पिता का अभाव किसने पूरा किया?

7 इस कहानी का प्रमुख पात्र आप किसे मानते हैं और क्यो?

8 'रोशनसिह के अभाव मे लडकी का पिता मै हूँ' —इस कथन से स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी के चरित्र की किन विशेषताओं का पता चलता है?

भाषा-अध्ययन

1 विभिन्न व्यंजनो के पहले 'र्' के संयोग पर ध्यान दीजिए ·

जब स्वर रहित 'र्' के बाद कोई स्वर सहित व्यंजन आता है तो 'र्' बाद मे आने वाले व्यजन के ऊपर ('ॅ') लिखा जाता है। (इसको 'रेफ' भी कहते है), जैसे

र् + म = र्म कर्म र् + द = र्द दर्द

र् + च = र्च खर्च र् + त = र्त शर्त

इसी प्रकार के पॉच उदाहरण लिखिए।

2. जब दो शब्दो को मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है तो उस प्रक्रिया को 'समास' कहते है और इस प्रकार बने शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं, जैसे देश-भक्ति = देश की भक्ति।

समस्त पद के शब्दो को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को 'समास-विग्रह' कहते हैं। नीचे लिखे समस्त पदो का विग्रह करके लिखिए .
वैधव्यभार, राजविद्रोह, राष्ट्रभक्ति, आनंदमग्न

3. नीचे ऐसे कुछ शब्द दिए गए है जिनके अत मे 'ई' प्रत्यय लगा है। ऐसे शब्द संज्ञा, विशेषण आदि हो सकते है। इन्हे ध्यान से पढिए और ऐसे शब्दों को छॉटिए जो 'ई' प्रत्यय से विशेषण बन गए हैं ·

दान	–	दानी	बनावट	–	बनावटी
विद्रोह	–	विद्रोही	पहाड़	–	पहाड़ी
जिम्मेदार	–	जिम्मेदारी	भार	–	भारी
खुश	–	खुशी			

4 निम्नलिखित वाक्यो को पढिए
(क) वह छिपती थी। वह रोती थी। → वह छिपकर रोती थी।
(ख) उन्होने दारोगा को बुलाया। उन्होने कहा। → उन्होने दारोगा को बुलाकर कहा।
इसी प्रकार निम्नलिखित वाक्यो को बदलकर लिखिए .
(क) दारोगा ने मेरी बात सुनी। दारोगा ने कहा।
(ख) उसने हाथ जोडे। उसने निवेदन किया।
(ग) विद्यार्थी दौडा। विद्यार्थी अध्यापक के पास पहुँचा।
(घ) शीला मदिर गई। शीला ने पूजा की।

5. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य-प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए .
जीवन से हाथ धोना, खैर न होना, दिल हलका करना, अड़गा डालना

योग्यता-विस्तार

1 स्वर्गीय गणेशशकर विद्यार्थी की जीवनी पढिए और उनके जीवन की कुछ ऐसी घटनाऍ सुनाइए जिनमे उन्होने सकटग्रस्त स्वतत्रता सेनानियों की सहायता की हो।

2. 'लडकी का पिता' कहानी के लिए अन्य उपयुक्त शीर्षक सुझाइए और अपने सुझाव की पुष्टि के लिए कारण दीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अभियुक्त – जिस पर न्यायालय में मुकदमा हो

आँखे कौड़ी सी निकलना – झटके के कारण आँखों का उभरकर कौडी के समान दिखाई देना

वैधव्य – विधवापन

थाती – धरोहर

आतिथ्य – अतिथि सत्कार, मेहमाननवाजी

भरियाफूटा फोड़ा – ऐसा फोड़ा, जो बार-बार पके और फूटे

बिछोह – वियोग

हलके (के पुलिस दारोगा) – इलाका (क्षेत्र के पुलिस दारोगा)

कथित – कहा गया

राजविद्रोही – वह जिसने राजसत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया हो

दोषारोपण – किसी पर दोष लगाना

सभापतित्व – सभा की अध्यक्षता

अड़गा डालना – रुकावट डालना

अक्ल ठिकाने आना – बात ठीक-ठीक समझ में आना

कलुषित परदा – गुलामी का भाव

टिप्पणी

9 अगस्त, 1925 ई. को क्रांतिकारियों ने पैसे की कमी दूर करने और ब्रिटिश सरकार को जबरदस्त चुनौती देने के लिए चलती रेलगाडी से खजाना लूटने की बात सोची। अंग्रेजी

सत्ता को ललकारने वाले ये देशभक्त थे--रामप्रसाद 'बिस्मिल', रोशनसिह, अशफ़ाकउल्ला, शचींद्रनाथ बख्शी, केशव चक्रवर्ती, बनवारीलाल, चद्रशेखर आज़ाद, मन्मथनाथ गुप्त, राजेद्रनाथ लाहिडी और मुकुदीलाल। इनमे से 17 दिसंबर, 1927 को राजेद्रनाथ लाहिडी 'को गोडा की जेल में, 19 दिसबर को रामप्रसाद 'बिस्मिल' को गोरखपुर की जेल में, अशफ़ाकउल्ला को फैजाबाद की जेल में, रोशनसिह को इलाहाबाद की जेल में फॉसी की सजा दी गई। केशव चक्रवर्ती, मन्मथनाथ गुप्त, शचींद्रनाथ बख्शी और मुकुंदीलाल को लंबी सजाएँ दी गईं। लाख प्रयत्नों के बावजूद चद्रशेखर 'आजाद' पकडे न जा सके।



कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सौं बाबा-बाबा, अरु हलधर सौ भैया।
ऊँचे चढि-चढ़ि कहति जसोदा, लै-लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहु लला रे, मारैगी काहू की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, चरननि की बलि जैया।।

मैया मै नहि माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसी बन भटक्यौ, साँझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहियन को छोटो, छीके केहि बिधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे है, बरबस मुख लपटायो।।
तू माता मति की अति भोरी, तिनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।।

ये ले अपनी लकुटि-कमरिया, बहुतहिं नाच नचाओ।
सूरदास तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

मैया हौ गाइ चरावन जैहौ।
तू कहि महर नंद बाबा सौं, बड़ो भयो न डरैहौं।
रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहि रैहौं।
बंसी बट तर ग्वालनि कै संग, खेलत अति सुख पैहौ।
ओदन भोजन दै दधि काँवरि, भूख लगे तै खैहौं।
सूरदास है साखि जमुन-जल सौह देहुँ जु नहैहौ।।

—सूरदास

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1 पहले पद की किन बातो से पता चलता हे कि कृष्ण ने बोलना शुरू कर दिया?
2 यशोदा बालक कृष्ण को घर से दूर खेलने क्यो नहीं जाने देतीं?
3 कृष्ण क्या-क्या तर्क देकर मक्खन खाने से इनकार करते है?
4 कृष्ण की किस बात से यशोदा को सबसे अधिक चोट पहुँची होगी?
 (क) चार पहर बंसी बन भटक्यौ, साँझ परे घर आयो।
 (ख) तू माता मति की अति भोरी, तिनके कहे पतियायो।
 (ग) जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।
 (घ) ये ले अपनी लकुटि-कमरिया, बहुतहि नाच नचायो।

5 नंद बाबा से गाय चराने की अनुमति लेने के लिए कृष्ण अपनी माता को क्या-क्या समझा रहे है?

6 इन पदो के आधार पर कृष्ण के स्वभाव की कुछ विशेषताएँ बताइए।

योग्यता-विस्तार

1. कृष्ण की बाल लीलाओं से सबंधित विविध चित्रो का संग्रह कीजिए।
2 बाल-वर्णन से सबधित निम्नलिखित कवियो की कुछ कविताएँ संगृहीत करके कक्षा में सुनाइए।
   तुलसीदास, सुभद्राकुमारी चौहान।

शब्दार्थ और टिप्पणी

महर – ब्रजमंडल मे प्रयुक्त एक आदरसूचक उपाधि, मुखिया

अरु – और

हलधर – बलराम, हल को धारण करने वाला

जनि – नहीं

काहू की – किसी की

बधैया – बधाई

दरस – दर्शन

भयो – हुआ

पठायो – भेज दिया

भटक्यौ – घूमता फिरा

बहियन – बाँहे

छीका – रस्सी, तार आदि की बनी झोली जैसी चीज जिसे छत आदि से लटकाकर उस पर खाने-पीने की चीज़ रखते है।

केहिविधि – किस प्रकार

बैर परे है – (चिढाने के लिए) पीछे पड गए है

बरबस – जबरदस्ती, बलपूर्वक
भोरी – भोली
तिनके – उनके
पतियायो – विश्वास कर लिया
जिय – हृदय
उपजि – उत्पन्न
जायो – पुत्र, सतान
लकुटि – छोटी लाठी
कमरिया – छोटा कंबल
नाच नचायो – परेशान किया
बिहँसि – हॅसने लगी, हॅसकर
उर – हृदय
कंठ लगायो – स्नेह से गले लगा लिया
हौ – मै
बट – बरगद का पेड
तर – नीचे
पैहौं – पाऊॅगा
ओदन – पका हुआ चावल, भात
दधि – दही
काँवरि – बहॅगी, रस्सी मे बॅधी हुई छोटी मटकी
खैहौ – खा लूॅगा
साखि – साक्षी, गवाह
सौह देहुँ – सौगंध, कसम खाता हूॅ
जु – जो/यदि
नहैहौ – नहाऊॅगा

कौन है जिसने क्रिकेट की दुनिया मे ऊँचे से ऊँचा स्थान बना लिया और गेंदबाज़ी की कला में कीर्तिमान स्थापित किया, जो खेल के मैदान में दर्शकों को आनंदविभोर करता रहा और बल्लेबाज़ी के करिश्मे दिखाता रहा, जो क्रिकेट प्रेमियों के गले का हार है, कौन है वह? इन सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर है—कपिलदेव ! क्रिकेट का जादूगर कपिलदेव !!

कपिलदेव को हरफ़नमौला भी कहते है। फ़न का अर्थ है— कला, खूबी, दाँव-पेंच और मौला का मतलब है—मालिक। हरफ़नमौला का तात्पर्य है कि जिसका हर पहलू पर अधिकार हो, जो हर कला में माहिर हो। क्रिकेट के खेल में कई पहलू होते है, जैसे: गेंदबाज़ी, बल्लेबाज़ी, क्षेत्ररक्षण आदि। इनकी अपनी-अपनी खूबियाँ और कलाएँ है। कपिलदेव इन सब कलाओ के माहिर और उच्चकोटि के खिलाडी हैं। इसीलिए कपिलदेव हरफ़नमौला हैं और क्रिकेट के जादूगर है।

कपिलदेव ने पंद्रह वर्ष की आयु मे ही कुशल किशोर-खिलाड़ी होने का परिचय दिया। उन्नीस वर्ष की उम्र में भारतीय क्रिकेट टीम में तेज़ गेंदबाज़ के रूप में शामिल हुए लेकिन वे अपने खेल प्रतिभा से क्रिकेट के हर क्षेत्र में क्षमता दिखाने लगे। कपिलदेव ने टेस्ट क्रिकेट और एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मे गेंदबाज़ी के अद्‌वितीय रिकॉर्ड कायम किए।

सन् **1979-80** की टेस्ट शृंखला में पाकिस्तान के विरुद्ध खेलते हुए

उन्होंने 146 रन देकर दस विकेट लिए। यह अनोखा प्रदर्शन उन्होने मद्रास मे किया। इससे पहले सन् 1979 में बरमिंघम के क्रिकेट मैदान में इग्लैंड के धुरंधर बल्लेबाज़ों में से पाँच को आउट करने का श्रेय प्राप्त किया। यह करिश्मा भी उन्होंने 146 रन देकर किया। सन् 1983-84 की टेस्ट शृंखला में वेस्टइंडीज़ के विरुद्ध अहमदाबाद में कपिलदेव ने 83 रन देकर 9 विकेट लिए थे। एक पारी में सर्वाधिक 23 बार 5 विकेट लेने का भारतीय कीर्तिमान कपिलदेव के नाम है।

एक दिवसीय अतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में भी कपिलदेव ने कम कमाल नहीं किए। एक दिवसीय 216 मैचों में 248 विकेट लेने की उनकी कीर्तिपताका अभी भी फहरा रही है। इस संदर्भ में गेंदबाज़ी का एक अभूतपूर्व घटना स्मरण हो आई है। 14 जनवरी, 1991 का एशिया कप फाइनल कलकत्ता में खेला जा रहा था। भारतीय टीम गेंदबाज़ी कर रही थी और श्रीलंका के खिलाड़ी बल्लेबाज़ी में अपना जौहर दिखा रहे थे। कपिलदेव ने अपने एक ओवर में ऐसी तिकड़ी जमाई कि श्रीलंका के तीन बेहतरीन बल्लेबाज एक-के-बाद एक पेवेलियन को लौट गए। इन खिलाड़ियों मे ख्यातिनामा रोशन महानामा, जयसूर्या और रॉमेश रत्ननायक थे जो लगातार कपिल की तीन गेंदों के शिकार हुए और भारत को विजयश्री प्राप्त हुई।

गेंदबाज़ी के सर्वोच्च कीर्तिमान का सुनहरा दिन जानते हो कौन-सा था? वह दिन था 8 फरवरी 1994। इस दिन भारत श्रीलंका के खिलाफ़ अहमदाबाद मे टेस्टमैच खेल रहा था। पहली पारी में कपिलदेव ने 432वॉ विकेट लिया। इस विकेट के साथ कपिल विश्व के चोटी के गेंदबाज हो गए। उन्होने रिचर्ड हेडली के 431 विकेट के रिकॉर्ड को तोड दिया। भारत और विश्व के

क्रिकेट-प्रेमियों ने आनंदविभोर होकर उस दिन उत्सव मनाया। अहमदाबाद के मैदान पर एक तरफ 432 रंग-बिरंगे गुब्बारे उड़ रहे थे तो दूसरी ओर मैदान में 6000 दर्शकों की तालियों से गगन गूँज रहा था।

तेज़ गेंदबाज़ कपिलदेव को शुरू में अपनी बल्लेबाजी के हुनर का एहसास नहीं था। उनके एक मित्र ने सलाह दी–"यार तुम्हें बल्लेबाज़ी की अच्छी समझ है, थोड़ा इस पर ध्यान दिया करो।" फिर क्या था? वे बल्लेबाजी में चौको से चौंकाने लगे और छक्कों से छकाने लगे। सन् 1978-79 की टेस्ट-शृंखला के सिलसिले में वेस्टइंडीज की टीम भारत आई। दिल्ली के टेस्ट मैच में कपिलदेव ने अपना पहला शतक छक्का लगाकर पूरा किया। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कपिलदेव ने बल्ले से सबका अभिवादन स्वीकार किया। कपिल ने शतक ही नहीं जमाया बल्कि 124 गेंदों पर 126 रन बनाए और अत तक आउट नहीं हुए।

इंग्लैड की टीम सन् 1981-82 में दौरे पर भारत आई। इस शृंखला के कानपुर टेस्ट में कपिलदेव ने दूसरा शतक 84 गेंदों पर दाग दिया। 1982-83 में भारत की टीम पाकिस्तान के दौरे पर गई। कराची टेस्ट मे भारत के पॉच अग्रणी बल्लेबाज़ केवल 70 रन बनाकर पेवेलियन लौट गए थे। छठे नंबर पर कपिल मैदान में उतरे। उन्होंने निर्भीक होकर धुआँधार बल्लेबाज़ी शुरू की। कमाल देखिए, उन्होंने 30 गेंदों पर 50 मिनट में अर्धशतक जमा दिया। इतनी कम गेंदों पर इतनी तेज गति से रन बनाकर विश्व रिकार्ड स्थापित किया।

जुलाई 1990 की घटना है कि भारतीय टीम इंग्लैड के विरुद्ध लाड्र्स

के मैदान में टेस्ट मैच खेल रही थी। हमारी आँखें भी दूरदर्शन पर जमी हुई थीं। तब क्या देखते–सुनते हैं? लार्ड्स के मैदान पर ऐडी हेमिस कपिलदेव को गेद कर रहे है। यह इस ओवर की तीसरी गेंद थी। गेंद फेंकी गई और कपिल ने उसे गेंदबाज़ के सिर के ऊपर से उठा दिया। गेंद मैदान से बाहर छह रन के लिए। तालियों की गडगड़ाहट से मैदान गूँज उठा। कपिल ने मैदान के चारों तरफ़ देखा। उन्हें नज़र आया कि एक भारतीय युवक एक चार्ट लिए खड़ा है। उस पर कपिल का चित्र और साथ में लिखा है–छक्का इधर। वहीं तिरंगे झंडे फहरा रहे थे। गेंदबाज़ गेंद लेकर आगे बढ़ा, गेंद फेंकी, कपिल ने बल्ले का ऐसा कमाल दिखाया कि गेंद भारतीय तिरंगे को सलामी देने पहुँच गई। वह युवक भी इस चमत्कारी छक्के पर झूम गया। कपिल ने इस बार फिर मैदान मे क्षेत्र रक्षण की जमावट का जायज़ा लिया। दूरदर्शन पर हमने देखा कि एक तरफ यूनियन जैक लहरा रहे है। वहाँ एक अंग्रेज युवती तख्ती लिए खड़ी है, लिखा है–कपिल वन सिक्सर यहाँ (हियर) कपिल ने उसे देखा या नहीं, हम नहीं जानते, लेकिन इस बार हेमिस की पाँचवी गेद पर लगाया गया छक्का तख्ती से जा टकराया। सुदरी खुशी में



नाच उठी। तीन गेंदो पर लगातार छक्के लगे तो दर्शकों में जोश आ गया। हैमिस छठी गेद लेकर दौडे उधर दर्शको का स्वर गूँजा सिक्सर! सिक्सर !! छक्का! छक्का !! सच मानिए कपिल ने लगा दिया—चौथा छक्का। लगातार चार छक्को का कीर्तिमान। देखा जादूगर के बल्ले का कमाल! उन्होंने **130** टेस्ट मैचों में **5230** रन बनाए जिनमें **8** शतक और **27** अर्धशतक शामिल हैं। एक गेंदबाज़ का बल्लेबाज़ी के क्षेत्र में यह अद्भुत करिश्मा है।

एक दिवसीय अतर्राष्ट्रीय मैचो में भी कपिल की बल्लेबाज़ी उल्लेखनीय रही है। इंग्लैड मे आयोजित विश्व कप में भारतीय टीम के कप्तान थे कपिल। उनकी कप्तानी मे भारत ने विश्वकप जीता था। इसी आयोजन का एक मैच जिबाब्वे के विरुद्ध टर्नब्रिजवेल में खेला गया। कपिल इस पारी में छठे नंबर पर मैदान मे उतरे और **72** गेंदों मे शतक जमाकर विश्व इतिहास में सबसे तेज़ शतक दर्ज करा दिया। इस पारी में उन्होंने **17** चौके और **6** छक्के दागे। उनकी **175** रन की यह अविजित पारी विश्व कीर्तिमान है। हमें इस कीर्तिमान पर गर्व है। कपिलदेव ने **216** एक दिवसीय मैचो मे **3730** रन बनाए जिनमें एक शतक और **14** अर्धशतक शामिल हैं।

कपिलदेव क्षेत्र-रक्षण मे भी बेजोड़ रहे हैं। उनको इस क्षेत्र मे सर्वोत्तम खिलाड़ियो में गिना जाता है। क्रिकेट के बारे में कहा जाता है—"जो छोड़े कैच वह हारे मैच।" मजाल कि कोई गेद उछले और कपिल के अगल-बगल से निकल जाए। झुककर, लेटकर, दौड़ लगाकर, गेंद लपकते हुए कपिल एक जुझारू खिलाड़ी लगते है। कुलाँचें मारकर छक्के रोकना और तेज़ दौड़कर चौको की किरकिरी करना कपिल की जादुई कला है।

कपिलदेव में टीम भावना कूट-कूट कर भरी है। वे अपने खिलाड़ी साथियों में मेलजोल और निष्ठावान संबंध रखते हैं। एक-दूसरे के दुख-दर्द मे काम आते हैं। अपने से बड़े खिलाड़ियों से विनयपूर्वक सीखते रहे और अपने कनिष्ठ साथियो को क्रिकेट के गुर बताते रहे है। कपिल हमेशा खेल टीम-भावना से खेलते रहे है। हार-जीत तो खेल में लगी रहती है। खेल को केंद्र में रखना, विपक्षी खिलाडियों के प्रति सद्भाव उनका सहज व्यवहार है। वे परस्पर प्रेम-व्यवहार के आदर्श हैं। इसीलिए विश्व के सभी खिलाडी और खेल समीक्षक उनके इस व्यवहार की सराहना करते हैं।

कपिलदेव का जन्म 1 जनवरी, 1959 मे चंडीगढ़ के एक सामान्य परिवार में हुआ। पिता श्री रामलाल निखंज और बड़े भाई रमेश से उन्हें खेल की प्रेरणा मिली। माता श्रीमती लाजवंती देवी का प्यार भरा प्रोत्साहन भी मिला। एक मित्र की सलाह पर क्रिकेट में उनकी दिलचस्पी बढी। सतत अभ्यास और लगन से वे अपनी गेंदबाज़ी में सुधार करते गए और अपनी करामात दिखाने लगे। लेकिन जब सन् 1975 में हरियाणा की रणजी टीम में उनके सभी सात साथी चुने गए और उनका चुनाव नहीं हुआ तो उन्हे धक्का लगा। इस घटना से उनके मन को चोट लगी और कुछ क्षण के लिए यह विचार आया कि 'मारो क्रिकेट को गोली' पर कपिलदेव हार मानने वाले व्यक्ति नहीं थे।

निराशा की उस घड़ी मे कपिलदेव ने दृढ संकल्प किया कि वे और भी लगन से अभ्यास करेंगे और चयनकर्ताओं को अपनी गेंदबाज़ी के चमत्कार से चकित कर देंगे। 1976 में 17 वर्ष की आयु में वे हरियाणा की रणजी टीम में चुने गए। 19 वर्ष की आयु में वे राष्ट्रीय टीम में चुन लिए गए।

फिर तो राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के खेलो मे उनकी चमत्कारपूर्ण गेंदबाज़ी, बल्लेबाज़ी और क्षेत्ररक्षण का सिलसिला शुरू हो गया और दुनिया के सबसे श्रेष्ठ आलराउंडर बने।

सोलह वर्ष तक भारत की क्रिकेट टीम के स्थायी सदस्य रहने के पश्चात् कपिलदेव ने **1994** मे प्रथम श्रेणी के क्रिकेट से संन्यास ले लिया। क्रिकेट के खेल-जगत् में कपिलदेव के योगदान पर केवल खेल-प्रेमियों को ही नहीं वरन सपूर्ण भारत को गर्व है। उन्होने देश का यश बढ़ाया और माथा ऊँचा किया।

— जयपाल 'तरंग'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 कपिलदेव को हरफ़नमौला क्यो कहते है?

2. क्रिकेट के खेल से क्या सबधित नहीं है

(क) गेदबाजी (ख) बल्लेबाजी (ग) गोल रक्षण (घ) क्षेत्ररक्षण

3 कपिलदेव ने पहला शतक कब और किस टीम के विरुद्ध बनाया?

4 वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1983-1984 की टेस्ट शृखला के अहमदाबाद टेस्ट में कपिल ने क्या कमाल दिखाया?

5. कपिलदेव की गेदबाज़ी का कौन-सा कारनामा आपको सबसे अधिक प्रभावित करता है और क्यो?

6 'बल्लेबाजी मे भी कपिलदेव ने जादूगरी दिखाई।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

7. कपिलदेव के लगातार चार छक्को के आँखो देखे हाल का वर्णन अपने शब्दों मे कीजिए।

8. कपिलदेव के जीवन मे निराशा की घडी कब आई?
9. कपिलदेव के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो का शुद्ध उच्चारण कीजिए·
   श्रेय, दक्षता, कीर्तिमान, ख्यातिनामा, करिश्मा, क्षेत्र-रक्षण, टेस्ट शृंखला
2. पाठ मे आए 'कीर्ति' शब्द से बने शब्द छाँटिए और लिखिए।
3. नीचे लिखे शब्दो मे से उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :
   बल्लेबाज, गेदबाज, बल्लेबाजी, गेंदबाजी, क्षेत्र-रक्षण
   (क) क्रिकेट मे आउट करने वाला अपनी से प्रभावित करता है।
   (ख) शतक जमाने वाला अपनी के कमाल दिखाता है।
   (ग) ऊँची उठी गेंद को लपक कर उसने अच्छे का परिचय दिया।
4. नीचे लिखे प्रयोगो के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए
   तिकडी जमाना, चौको से चौंकाना, छक्को से छकाना, खेल-भावना

योग्यता-विस्तार

1. क्रिकेट के किन्हीं चार प्रमुख खिलाडियों के बारे मे जानकारी प्राप्त कीजिए और उनके चित्र भी सकलित कीजिए।
2. हॉकी, फुटबॉल, टेनिस एव शतरज के प्रमुख भारतीय खिलाड़ियों की सूची बनाइए।

शब्दार्थ एव टिप्पणी

कीर्तिमान – रिकॉर्ड
आनंद विभोर – खुशी मे डूब गए

करिश्मा – चमत्कार, करामात
माहिर – कुशल, निपुण
दक्षता – निपुणता
अंतर्राष्ट्रीय – दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच
शृंखला – कडी
धुरंधर – अग्रगण्य, श्रेष्ठ
पारी – बारी (इनिंग्स)
अभूतपूर्व – अनोखा, अद्भुत
कीर्तिपताका – ख्याति, यश का ध्वज
जौहर – कुशलता का प्रदर्शन
बेहतरीन – उत्तम, सर्वोत्तम
ख्यातिनामा – प्रसिद्ध
धुन का धनी – लगनशील, लगन का पक्का
अभिवादन – आदरपूर्वक नमस्कार
अग्रणी – प्रमुख
अर्धशतक – आधा शतक अर्थात् 50 रन
जायजा – परख, जाँच-पडताल
उल्लेखनीय – कहने के योग्य
अविजित – बिना आउट हुए (नॉट आउट)
क्षेत्ररक्षण – फील्डिंग
बेजोड़ – जिसके समान का कोई न हो, अतुलनीय
मजाल – सामर्थ्य
जुझारू – संघर्षशील
कुलाँच – छलाँग

किरकिरी करना – रोकना, असफल करना

निष्ठावान – विश्वास रखने वाला

कनिष्ठ – छोटा

गुर बताना – युक्ति बताना

समीक्षक – समालोचक, गुण-दोषों की परख करने वाला

सतत – लगातार

धक्का लगना – दुख होना

चयनकर्ता – चुनने वाला

भारत के वनो में जितने विविध प्रकार के जीव-जतु मिलते है उतने अन्य किसी भी देश में नहीं। लेकिन खेद की बात है कि कुछ जीव ऐसे है जो दुर्लभ हो गए हैं और उनके लोप होने का भय है। सच्चाई यह है कि जंगल का राजा सिंह सचमुच आज लुप्त होने की प्रक्रिया में है। यदि इन बचे-खुचे सिंहों को बचाने के उपाय नहीं किए गए तो हम सिह नाम के शाही जानवर को देखने के लिए तरस जाएँगे।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सरकार ने विरल और लुप्त होते जाने वाले प्राणियों की रक्षा के लिए कानून बनाए है। सभी जंगलों में शिकार खेलने पर प्रतिबंध लगा दिया है और कुछ वन सुरक्षित घोषित कर दिए हैं, जहाँ प्राणी बंद बाड़ों में नहीं बल्कि खुले और प्राकृतिक परिवेश में निर्भय और बेरोक-टोक आजादी से घूम सकते हैं। ऐसे विशेष क्षेत्रों को 'अभयारण्य' या 'राष्ट्रीय प्राणि उद्यान' नाम दिया गया है। ऐसे वन या उद्यान अपने देश के विभिन्न राज्यों मे स्थापित किए गए हैं।



यहाँ विश्व प्रसिद्ध गिरवन के सिंहो के बारे मे संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है। गिरवन एक अनोखा, आकर्षक और दर्शनीय स्थान है और ऐसा शरणवन दुनिया में और कहीं नहीं है। यह पूरा घना ज़ंगल नहीं बल्कि अर्ध- बजर भूमि का विस्तृत भाग है। इस वन को सिंह अभयारण्य में बदलने वाली परियोजना सन् 1972 में शुरू हुई। एशियाई सिंह का यह शरणस्थल 1295 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में तरह-तरह के पतझड़ी वृक्षों और कँटीली झाड़ियों वाले सूखे तथा खुले जंगल के रूप मे फैला हुआ है।

गिरवन की छोटी-छोटी पहाड़ियों, झुरमुटो, कुंडों के किनारे यानी कि हर कहीं सिंह अपनी मौज-मस्ती में घूमते रहते हैं। सिंह के अलावा यहाँ जंगली सूअर, तेंदुआ, हिरन, बारहसिंगा, गीदड़, लोमड़ी, चीतल, साँभर, कृष्णसार, दुर्लभ चौसिंगा आदि जानवर भी रहते है। इनके अलावा भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे पक्षी भी यहाँ की रौनक बढ़ाए रखते है। दुनियाभर के पर्यटक लाखो की संख्या मे हर वर्ष यहाँ आते है। और सिंहों को अपने-अपने कैमरो में बंद करके, रहन-सहन का अध्ययन करते है और उनकी जीवन-चर्या पर फिल्में भी बनाते हैं।

सिंह जंगल का राजा है और भारत के अलावा केवल अफ्रीका मे पाया जाता है। अफ्रीका के सिंह और भारतीय सिंह मे थोड़ा-सा ही अंतर है, जो उनकी स्थानीय परिस्थितियों और जलवायु के कारण है। भारतीय सिंह की अधिकतम लंबाई लगभग तीन मीटर है और अफ्रीकी सिंह की लंबाई इससे लगभग बीस सेंटीमीटर अधिक होती है। भारतीय सिंह का अयाल पतला और छोटा, किंतु अधिक चमकीला होता है।

सिंह पंचतंत्र, हितोपदेश आदि कथाओ और जंगल के रंगमंच का नायक



है। शक्तिशाली, चुस्त, चतुर और निडर होने के कारण सिंह को वनराज कहा जाता है। अपनी रोबीली आकृति, शांत एवं गंभीर प्रकृति, राजसी शान वाली चाल और गर्जना के कारण यह अद्‌भुत है और इसकी तुलना अन्य किसी भी प्राणी से नहीं की जा सकती, क्योंकि सिंह बस 'सिंह' है।

सिंह बिडाल कुल का प्राणी है और बिल्ली को इसकी मौसी के रूप में हम सभी जानते हैं। सिंह, बाघ, चीता, तेंदुआ आदि बिडाल कुल के मौसेरे-चचेरे भाई हैं। इनके मुड़े हुए और पैने नख मांस की मुलायम गद्‌दियों के अंदर ढके तथा सिमटे होते हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार ये बाहर निकाल लेते हैं और शिकार पकड़ने में दाँतों के साथ इनकी मदद लेते हैं।

गिरनार गुजरात का प्रसिद्‌ध तीर्थ स्थल है। इसका यह नाम सिंहों के ही कारण पड़ा, क्योंकि आज का गिरनार शब्द प्राचीन 'गिरि नाहर' से ही बिगड़कर बना है, जिसका अर्थ था नाहरों का गिरि अर्थात् सिंहों का पहाड़। इसी गिरनार की तली का जंगली क्षेत्र गिरवन है, जहाँ सिंह रहते हैं।

सिंह पहले उत्तरी भारत में काफ़ी बड़े क्षेत्र तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक पाए जाते थे। लेकिन अब ये गुजरात के सौराष्ट्र के गिरवन क्षेत्र में ही सीमित रह गए हैं। पश्चिमी भारत का यह स्थल पहले भूतपूर्व जूनागढ़ रियासत के शासकों का प्रसिद्‌ध आखेट- स्थल था। शिकारियों की हवस, सिर और खाल के शौक, वनों की कटाई, आबादी की बढ़ोत्तरी, खेती के लिए

भूमि के अधिकाधिक उपयोग आदि कारणो से सिह जाति विनाश की अवस्था में पहुँच गई है।

सिंह को केसरी, नाहर और बब्बर शेर भी कहते है। इसके गले का केसर (अयाल) इसकी खास पहचान है। केवल नर सिह में ही केसर होता है, लेकिन गुच्छेदार पूँछ नर और मादा दोनों की होती है। सिह रीढ़ की हड्डीवाला स्तनधारी प्राणी है। सिहनी स्तनों से बच्चों को दूध पिलाती है। इसका शरीर बिना धब्बों का मटमैले बादामी रंग का यानी भूरापन लिए लाल रंग का होता है। इसमें सुनने और सूँघने की ज्ञानेंद्रियाँ बहुत तीव्र होती है। शरीर लचीला और फुर्तीला होता है। आँखे दिन और रात दोनों समय अच्छी तरह देख सकती है। यह समूह मे चलनेवाला प्राणी नहीं है। हाँ अपने परिवार के समूह में अवश्य रहता है।

सिह के जबड़े और जबड़ो की मासपेशियाँ इतनी मजबूत होती है कि वह हिरन, सूअर, यहाँ तक कि भैसे को मुँह मे दबाकर आसानी से ले जा सकता है। पिछली टाँगो और शरीर के अगले भाग की बनावट के कारण यह पाँच मीटर तक लंबी छलाँग मार सकता है। यह गाय, भैस, भेड़, बकरी, ऊँट, घोड़े, हिरन, बारहसिगा, सूअर आदि का शिकार करता है। जीभ की कड़ी कलियो की सहायता से यह हड्डी से मांस को रेती की तरह छील सकता है।

सिहनी एक बार में दो से लेकर छह बच्चो को जन्म देती है। गिर में सिह-शावक जनवरी और फरवरी के बीच पैदा होते है। ये तीन से लेकर पाँच वर्ष मे युवा हो जाते है। बच्चे शुरू के पाँच-छह महीनो तक माता-पिता की देखरेख में पलते है। मासाहारी होने के कारण इनके बच्चे बिना देखरेख

के जीवित नही रह पाते। इसीलिए इनमें मृत्यु दर अधिक है। सिहनी लबी और खुरदरी जीभ से बच्चो को चाट-पोछकर साफ रखती है और उनके लिए शिकार करके लाती है। थोडा बड़ा होते ही उन्हे शिकार करने की विधि सिखाने के लिए ले जाती है। इनकी शिक्षिका माँ ही होती है। सिंहों की आयु बारह से बीस वर्ष के बीच होती है लेकिन कोई-कोई तीस वर्ष तक भी जीवित रहता है।

इन्हें गिरवन के अलावा अन्य स्थानों पर बसाने की भी कोशिश की गई थी लेकिन वहाँ वे पनप न सके। इसका मुख्य कारण यह है कि ये स्वभाव के अनुसार जगल के अंदर न रहकर बाहर आकर घूमते है और खुले मे झाड़ियो वाली जगह पसंद करते है। इसीलिए मारने वालो की निगाह इन पर आसानी से पड़ जाती है। इसके विपरीत बाघ जगलों और घासवाले स्थानो को पसंद करते हैं। वे बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि राज्यो के घने जगलों में होते हैं।

गिरवन में घूमने का आनंद लेने के लिए डाक बँगलों तथा विश्रामगृहो में रहने और खाने का बहुत अच्छा प्रबंध है। यहाँ पर्यटकों के आने-जाने के लिए विभिन्न स्थानो से बसें भी चलती है। हमारी टोली सिह-लीला देखने मे बड़ी भाग्यवान रही। संयोग की बात थी, जब हम विश्रामगृह पहुँचे तो पता लगा कि सिहो पर फ़िल्म बनाने के लिए टेलीविज़न वालों का दल भी पहुँचा हुआ है। हमने स्थानीय लोगो, वन अधिकारियों और टेलीविज़न वालों से संपर्क किया।

सिंहों की क्रीड़ाओं या 'लायन शो' के लिए तो शुल्क देना ही पड़ता है, पर इन लोगो के कारण हम जो बहुत-कुछ देख सके, वह मुश्किल से

ही नसीब होता।

जीप से और नीचे उतरकर ओट से हमे गर्वीले सिहो को बिलकुल नजदीक से देखने का मौका मिला। कभी टहलते हुए, कभी पानी पीते हुए, कभी एक-दूसरे पर गुर्राते हुए, कभी बच्चो से खिलवाड़ करते हुए, कभी आराम करते हुए तो कभी शिकार को दबोचते हुए और खाते हुए। पहले तो हमें बहुत डर लगा लेकिन वन-अधिकारियो के साथ रहने से हमारा डर भाग गया। अधिकारियों और कार्यकर्ताओ को तो सिंह पहचानते है। वे भी सिहो को पहचानते है और उन्हे उनके नामो से पुकारते है — मोहन, दामोदर, गंगा, मलका आदि।

हम सिहों के निकट आकर कैमरामैन के खेल मे शामिल हो गए। लायन शो या सिंह-क्रीड़ा के लिए बँधी हुई बकरी और पाडे (भैस का बच्चा) भी तैयार रखे गए थे। सिह भी चुपचाप जलसा देखने और पोज देने के अभ्यस्त हो गए है। उन्हे लालच रहता है कि ऐसे मौको के बाद उन्हे खाने को अवश्य मिलेगा। कैमरे की क्लिक से वे घबराते नहीं। वे कभी आदमी पर आक्रमण नहीं करते। कभी-कभी गुर्राकर रह जाते है।

इस तरह टेलीविज़न वालो ने पूरे इलाके की अलग-अलग तरह से और सिहों के विविध क्रियाकलापों की लबी तथा रोचक फिल्मे खींचीं। हमने भी बंदूक से नहीं बल्कि कैमरे से सिहो का शिकार किया। जो बातें हम सुनते या पढ़ते थे वे सब बाते प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखीं। सच, आप सब भी गिरवन के सिहो को देखकर झूम उठेगे।

— प्रेमानद चंदोला

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. गिरनार का प्राचीन नाम क्या था?
2. अभयारण्य या राष्ट्रीय प्राणि उद्यान की स्थापना किस उद्देश्य से की गई है?
3. सिंह जाति के लोप होते जाने के कारण क्या है?
4. गिरवन की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन कीजिए।
5. सिंहो के रूप और स्वभाव के बारे में बताइए।
6. निम्नलिखित मे से बिडाल जाति के जानवरों के नाम छाँटिए :
   सिंह, बाघ, चीतल, चीता, भेड़िया, लोमडी, तेंदुआ और सियार
7. लेखक ने गिरवर के सिंहो के बारे मे जानकारी देना क्यो आवश्यक समझा?
8. सिंहनी अपने बच्चो का पालन-पोषण कैसे करती है?
9. भारतीय सिंह और अफ्रीकी सिंह मे क्या अंतर है?
10. 'सिंह जंगल के रंगमंच का नायक है'-कैसे?

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो को ध्यान से पढिए .

   अभय + अरण्य = अभयारण्य

   ज्ञान + इंद्रिय = ज्ञानेंद्रिय

   हित + उपदेश = हितोपदेश

ध्यान दीजिए : दो शब्दो के पास-पास आने पर जब पहले शब्द की अंतिम ध्वनि और दूसरे शब्द की आदि ध्वनि मिलकर नई ध्वनि का रूप ले लेती है तब उस मेल को 'संधि' कहते है, जैसे विद्या + आलय = विद्यालय, नदी + ईश = नदीश, पर + उपकार = परोपकार

नीचे लिखे शब्दो मे सधि कीजिए

शुभ + इच्छा, महा + उत्सव, सर्व + उदय, अधिक + अश

2 नीचे लिखे शब्दो को ध्यान से पढिए

प्रकृति + इक = प्राकृतिक
पुराण + इक = पौराणिक
विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

ध्यान दीजिए ऊपर दिए गए शब्दो में जब 'इक' प्रत्यय लगता है तो शब्द के पहले स्वर मे इस प्रकार परिवर्तन होता है

अ/आ – आ
इ/ई – ऐ
उ/ऊ – औ

नीचे लिखे शब्दो मे 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए

सप्ताह, मास, दिन, नीति, उद्योग, भूगोल

3 देश से विदेश, स्वदेश, प्रदेश, देशांतर आदि शब्द बनते है। इसी प्रकार राष्ट्र, आत्मा, वन और सत्य से चार-चार शब्द बनाइए।

4. निम्नलिखित का अपने वाक्यो मे प्रयोग कीजिए

जीवनचर्या, रोबीली आकृति वाला, दिन-रात, बेरोक-टोक

5. **ध्यान दीजिए :** 'शाकाहार करनेवाला', वाक्याश के लिए एक शब्द 'शाकाहारी' है। इसी प्रकार 'ईश्वर में विश्वास रखनेवाले' के लिए 'आस्तिक' और 'प्रार्थना करने वाले' के लिए 'प्रार्थी' शब्द का प्रयोग होता है। नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

भारत से संबधित, अच्छे आचरण वाला, जो कम (अल्प) खाता हो, पर्यटन करने वाला, जिस पर विश्वास किया जा सके, देखने योग्य।

योग्यता-विस्तार

1. अपने अध्यापक की सहायता से कुछ ऐसे जीव-जतुओ के बारे मे जानकारी प्राप्त कीजिए जो दुर्लभ होते जा रहे है।
2. भारत के कुछ अन्य अभयारण्यो के बारे मे जानकारी प्राप्त करके उनपर कक्षा मे चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

लुप्त होने की प्रक्रिया मे है – गायब होने वाले है

प्रतिबंध – रोक

पर्यटक – सैलानी

अयाल – घोडे, सिह आदि के गरदन के बाल

आखेट – शिकार

हवस – अति तीव्र इच्छा

जीभ की कड़ी कलियाँ – जीभ की खुरदरी दानेदार बनावट

रेती – घिसने के लिए प्रयुक्त एक तरह का दानेदार औजार

शावक – पशु का बच्चा

शुल्क – फ़ीस

अभ्यस्त – आदत पड जाना

पोज़ – फ़ोटो खींचाते समय बनाई गई मुद्रा

क्लिक – फोटो खींचते समय कैमरे की आवाज़

सिंहासन हिल उठे, राजवशो ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत मे भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन मे
वह तलवार पुरानी थी।
बुदेले हरबोलो के मुँह
हमने सुनी कहानी थी--
खूब लडी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।
कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थीं,
वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी--

खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।
लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार.
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।



हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलो के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—

खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलो मे उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय ! विधि को भी नहीं दया आई,
निःसंतान मरे राजा जी,
रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन मे हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा,
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–

खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों मे,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लैफ़्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,
ज़ख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।



रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,
अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–

खूब लडी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।
विजय मिली, पर अंग्रेजो की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मुंदरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र मे उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर, पीछे ह्यूरोज आ गया,
हाय ! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।
तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोडा अड़ा नया घोडा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी,
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता-नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी–
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

— सुभद्राकुमारी चौहान

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1. 'चमक उठी सन् सत्तावन मे, वह तलवार पुरानी थी', पंक्ति मे तलवार को पुरानी क्यो कहा है?
   (क) गुलाम भारत की तलवार थी।
   (ख) पुरानी तलवार तेज होती है।
   (ग) भारत की वीरता की परंपरा बहुत पुरानी है।
   (घ) तलवार पुराने लोहे से बनी थी।

2 'हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी मे' पक्ति मे 'वीरता' और 'वैभव' का संकेत किस-किस की ओर है?

3 'किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई'–पक्ति में रानी के जीवन मे आई किस विपत्ति की ओर सकेत किया गया है?

4 इस कविता के आधार पर कालपी-युद्ध का वर्णन अपने शब्दो में कीजिए।

5 भाव स्पष्ट कीजिए .

(क) मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।

(ख) हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता-नारी थी।

(ग) तीर चलाने वाले कर में उसे चूडियाँ कब भाई।

6. 'दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी' –इस पक्ति में किस पथ और किस सीख की ओर सकेत किया गया है?

योग्यता-विस्तार

1 इस कविता से लक्ष्मीबाई से सबधित कुछ पंक्तियाँ चुनकर उनके आधार पर रानी की वीरता का वर्णन कीजिए।

2. देशभक्ति की कुछ कविताएँ चुनिए और उन्हें कक्षा मे सुनाइए।

3 प्रथम स्वाधीनता संग्राम के कुछ वीरों की सूची बनाइए और उनका संक्षिप्त परिचय भी लिखिए। यदि संभव हो तो उनके चित्र इकट्ठे करके चार्ट पेपर पर चिपकाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मर्दानी – बहादुर नारी

गाथा – कथा, वृत्तांत

मुँहबोली – मानी हुई

छबीली – बाजीराव पेशवा द्वारा लक्ष्मीबाई को प्यार से दिया हुआ नाम

भृकुटि – भौंहें

ज़बानी – कठस्थ, मौखिक
वैभव – ऐश्वर्य
सुभट – वीर योद्धा
विरुदावलि – बडाई, यशोगान
चित्रा – चित्रांगदा, पांडुपुत्र अर्जुन की पत्नी जो मणिपुर के राजा की पुत्री थी
आराध्य – पूज्य
मुदित – प्रसन्न
कालगति – मृत्यु
भाई – अच्छी लगी
विधि – ईश्वर
हरषाया – प्रसन्न हुआ
हड़प करना – छीनना, जबरदस्ती ले लेना
वारिस – उत्तराधिकारी
बिरानी – पराई
मर्द बनी मर्दानो मे – वीरो में वीर बनी
द्वद्व – दो व्यक्तियों मे युद्ध
मुँह की खाना – हार जाना
सैन्य – सेना
विषम – जटिल
वार पर वार – हमले पर हमला
दिव्य – अलौकिक
अवतारी – दैवी गुणो से युक्त

डलहौज़ी – डलहौज़ी 1848 से 1856 ई तक भारत का गवर्नर जनरल था। वह स्वेच्छाचारी प्रवृत्ति का प्रशासक था। उसने जब्ती का सिद्धात बनाया जिसके अनुसार यदि ब्रिटिश

सरकार द्वारा संरक्षित कोई भारतीय राजा निःसंतान मर जाता है तो उसके दत्तक पुत्र को राज्य प्राप्त करने का अधिकार नहीं होगा और राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया जाएगा। इस नियम को लागू करके उसने झाँसी सहित अनेक राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। परिणामस्वरूप भारतीय राजाओं और जनता में भारी असंतोष फैल गया जिसके परिणामस्वरूप 1857 ई. में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ।

20. सर चंद्रशेखर वेंकटरामन

29 मई, 1957! .. बंगलौर के सांध्य आकाश में श्यामल मेघ घिर आए है। घूमते-घूमते सहसा हमारे आतिथेय धनजी भाई बोल उठते हैं, "रमन – इंस्टीच्यूट देखोगे?" और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना गाड़ी को एक विशाल और भव्य भवन के अहाते की ओर मोड़ देते हैं। द्वार पर लिखा है, यह आम रास्ता नहीं है। बिना आज्ञा प्रवेश वर्जित है। मै हठात उस ओर संकेत करता हूँ। तो धनजी भाई कहते है, " यह तो विदेशियों के लिए लिखा है। सस्था हमारी है। हमे कौन रोक सकता है?" और बरामदे के पास गाड़ी रोककर वह चपरासी को पुकारते है, "रमन साहब है? उनको बोलो कि हम आए है।"



कुछ कहूँ कि इससे पूर्व ही देखता हूँ कि अंदर से आकर एक व्यक्ति तेजी से अंग्रेज़ी में कह रहा है, "मै जानता हूँ तुम बिना आज्ञा अंदर आए हो, पर कोई बात नहीं। किसी से कहना मत। मेरे पास पंद्रह मिनट है।..."

हम लोग सँभले कि वे तीव्र गति से आगे बढ जाते है। हम निश्वास

ही नही कर पाते कि नोबुल पुरस्कार प्राप्त, प्रकाश एव नाद विज्ञान के विशेषज्ञ, विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक, सर चद्रशेखर वेकटरमन ये ही है। कोट, पतलून, जूता, दक्षिण भारतीय शैली की पगडी, नाक कुछ लबी, बाई ओर का दाँत टूटा हुआ। बाँह और गले पर से कोट भी फटा हुआ। ये है-रमन ! यह व्यक्तित्व है इनका !

विचार तीव्र गति से उमड़ते-घुमड़ते है। उतनी ही तीव्र गति से वे बोलते चले जाते है। सहसा गंभीर होकर वे मेरी ओर मुड़ आते हैं और पूछते है, "जानते हो, मेरा मतलब क्या है?"

मै अचकचाकर कहता हूँ, "जी... जी"

तभी यशपाल जी हँसते हुए मेरा हाथ दबाते है, "क्या खाक जानते हो। यह तो उनका तकियाकलाम है।"

सचमुच उस एक घंटे मे वे अनेक बार इस वाक्य का प्रयोग करते हैं। आरभ मे उन्होंने कहा था, मेरे पास तो पद्रह मिनट है। लेकिन जब हम उनसे विदा लेते है तो पता लगता है कि एक घटा कभी का बीत चुका है। जल-प्रलय के सिद्धात की व्यर्थता से लेकर पत्तो के, कोयले के नाना रूपों मे रूपांतरण, हीरे के निर्माण, नाना धातुओं, ग्रेनाइट, न जाने इन सबके बारे में वे हम अवैज्ञानिकों को क्या-क्या बता देते हैं। तीव्रता से बोलते रहते है, 'देखो, यह है ऑयल डायमंड। यह इडस्ट्रियल डायमंड है, ये मोती हैं, चमकते है न? ना-ना, इन्हे छूना मत। हीरे कोयले की खानो में ही पैदा होते है, पर उनको चमकदार बनाने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। तुम तो जानते ही हो कि भारत में नोबुल प्राइज पाने वाले दो व्यक्ति

थे। अब एक मै ही जीवित हूँ। इसीलिए मेरी मुसीबत है।"

बीच-बीच मे वे ऐसी बाते कह जाते है कि जिनका कोई पूर्वापर संबंध नहीं होता, लेकिन अर्थ अवश्य होता है। उनके संग्रहालय मे नाना प्रकार के शंख, सीपियाँ, तितलियो का भडार, समुद्र के नाना रूप जीव-जंतु है। आग्रहपूर्वक वे एक-एक वस्तु को दिखाते है। दिखाते ही नहीं, समझाते है। घूम-घूमकर पूरा भवन दिखाते है, बाग दिखाते है, कहाँ क्या बनाने की उनकी कल्पना है, यह सब बड़ी आत्मीयता से समझाते है और बीच-बीच मे सहसा हमारी ओर मुड़कर कह उठते है, "क्या तुम इस बारे में कुछ लिखोगे? मै जानता हूँ, तुम कुछ नहीं लिखोगे।"

फिर एक क्षण बाद कहते है, "यदि लिखो तो यह अवश्य लिखना कि ऊपर की मज़िल की खिड़की से चारों ओर का दृश्य बहुत ही मनोरम दिखाई देता है।"

और फिर साध्य मेघों की तरल छाया मे दूर तक फैली हुई हरितवसना पहाडियो और ऊँचे वृक्षो को स्निग्ध दृष्टि से देखते हुए कहते है, "है न बंगलौर सुदर ! मै इसे और भी सुदर बनाना चाहता हूँ, लेकिन सरकार क्या करूँ...।"

मै कभी उनकी ओर देखता हूँ, कभी चारो ओर के सौंदर्य पर दृष्टि डालता हूँ। इस्टीच्यूट के भीतर भी तो सब कुछ सुदर ही सुंदर है। अचानक दृष्टि ब्लैकबोर्ड पर अटक कर रह जाती है। उस पर विज्ञान के किसी सिद्धात के बारे में कुछ लिखा है। कह उठता हूँ, "कितने सुंदर अक्षर है, मोती जैसे !"

वैज्ञानिक रमन मुसकराकर कहते हैं, "विज्ञान आदमी को सौदर्य की ही प्रेरणा देता है।"

इसी प्रसंग मे सुधीर कहता है, "मेरी पुस्तक मे आपका चित्र है।"

वे तुरत उसके कधे पर हाथ रखकर बोल उठते है, "तो तुम विद्यार्थी हो ! मै तुमको कुछ ऐसी वस्तुएँ दिखाऊँगा जो किसी को दिखाना पसद नहीं करता। मेरे साथ आओ।"

और वे हमको अपने छोटे से कमरे मे ले जाते हैं, जिसमे कई अलमारियाँ है। वे उन्हे खोलते हैं और देखते-देखते हमारे सामने नाना रंग के अनेक मैडल और अनेक प्रमाणपत्रो का ढेर लग जाता है। अनेक मैडलों के बीच मे प्रकाश फेंकते हुए नोबुल पुरस्कार के उस भव्य पदक को हम बड़ी उत्सुकता से देखते हैं, जो उन्हे **1930** में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने के लिए मिला था। श्री रमन ने अपना जीवन भारतीय अर्थ विभाग मे असिस्टेट एकाउंटेट जनरल के पद से आरभ किया था, लेकिन शीघ्र ही वे विज्ञान के क्षेत्र मे आ गए और फिर तो विश्व के सर्वोच्च कोटि के वैज्ञानिको की श्रेणी में पहुँच कर ही रुके। उन्होंने विज्ञान की शिक्षा विदेशों मे नहीं प्राप्त की। इसी देश की मिट्टी में अपनी महानता को खोजा। समुद्र को देखकर उन्होंने कल्पना की कि स्वच्छ जल मे होकर जब प्रकाश चलता है तब प्रकाश के फैलने की प्रक्रिया में नाना रंग उत्पन्न होते हैं।

उनकी इस खोज के बारे में सोचते-सोचते न जाने मै कहाँ चला जाता हूँ कि सहसा सुनता हूँ, वे कह रहे हैं, "इस पदक को देखो, कितना असुदर है।"

सहसा झटका लगता है, लेकिन जब उस बोर्ड पर लगे हुए पदकों को दखता हूँ तो सचमुच ही उनमें वे 'भारत रत्न' का पदक असुंदर ही दिखाई देता है। उसमे असुदर एक और पदक है 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' का।

गलतफहमी न हो, यहाँ भौतिक सौदर्य की चर्चा है और मैं जानता हूँ, उन्होने इस शब्द का प्रयोग इसीलिए किया कि कुछ क्षण पहले मैने अक्षरों के सौंदर्य की प्रशंसा की थी।

एकाएक वे बोल उठते है, "आओ, आओ, आप लोगों को कुछ और सुंदर वस्तुएँ दिखाएँ।"

और वे तीव्र गति से आगे बढ़ जाते है। पीछे-पीछे हम भी एक छोटे से कमरे में पहुँचते हैं। विज्ञान के नाना उपकरणों से सजा यह कमरा कुछ ही क्षणों में इंद्रधनुष के प्रकाश से जगमगा उठता है। आश्चर्य से हम एक-दूसरे को देखते है। जैसे हम सब रंगों के सागर में तैर रहे हों। वैसे ही, जैसे नाना रूप-रंग की परियाँ बच्चों के स्वप्न संसार मे तैरा करती है और प्रकाश तथा रग के जादूगर रमन है कि कभी यह स्विच दबाते हैं तो कभी वह, और फिर कोट की जेब में हाथ डालकर स्रष्टा की तरह नि:संग भाव से मुसकराने लगते है और वह पराबैगनी प्रकाश हमको अलौकिक रूप देता रहता है।

काफी कुछ देख चुके है। अत में सोने और हीरे के नाना रूपो को देखते है, इस बार हिंदी मे कहते है, 'सब देखा, हो गया।"

और फिर बोल उठते है, "मैंने तुम्हे इतना समय दिया। मेरा भी एक काम करना। तुम लोगो को कहीं से हीरे मिले तो मेरे पास भेज देना, अच्छा।"

और फिर वही शिशु-सुलभ शरारत भरी मुसकान। हम भी मुसकराते हुए कह देते है, "अवश्य भेजेगे।"

हम सब छत पर आ गए हैं। विदा ले, इससे पूर्व यशपाल जी उनसे प्रार्थना करते है, "आपका एक चित्र खींचने की इच्छा है।"

वे जैसे एकदम तड़प उठते है, "इस फटे कोट मे चित्र खीचोगे? यानी आप दुनिया को दिखाना चाहते है कि मै फटा कोट पहनता हूँ? खैर, कोई बात नहीं, खींच लो।"

यशपाल भाई फ़ोटो खींचते हैं और फिर हम इस आकस्मिक अद्भुत प्रसग से अभिभूत कई क्षण मौन चलते रहते है।

वे उसी नि:संग भाव से हाथ मिलाते है, नमस्कार करते हैं और मुसकराते हुए धूमकेतु की तरह जैसे आए थे वैसे ही भीतर चले जाते है। जब चले जाते है तब हमे उनकी उपस्थिति का भान होता है।

छह वर्ष बाद आज (1963) मैं सोचता हूँ कि अनुसंधानकर्ता की लगन, वृद्ध की सनक और शिशु की सरलता—इनकी सीमा-रेखा कितनी पतली है। इस चित्र में क्या वे एक साथ सरल स्वभाव, कल्पनाप्रिय, सद्भावी और आत्म-प्रदर्शन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी नहीं जान पड़ते? परतु सच यह है कि जो जितना ऊँचा उठता है, वह उतना ही सरल और सहज रहता है।

— विष्णु प्रभाकर

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 रमन को देखकर लेखक यह विश्वास क्यों नहीं कर पाता कि विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर चद्रशेखर वेकटरमन वही है?

2 'भारत मे नोबुल पुरस्कार पाने वाले दो व्यक्ति थे, अब एक मैं ही जीवित हूँ। इसीलिए मेरी मुसीबत है।' रमनजी के इस कथन मे रेखाकित वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

3 इस पाठ मे से उन अंशो का चयन कीजिए जो रमन की सौदर्य प्रियता पर प्रकाश

डालते हैं।

4 रमन सुधीर को वे वस्तुएँ दिखाने के लिए तैयार हो गए जो वे किसी को दिखाना पसद नहीं करते थे–यह बात उनके चरित्र की किस विशेषता को दर्शाती है?

5. रमन ने 'भारत रत्न' पदक तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्राप्त पदक को असुदर क्यो कहा?

6. 'हम इस आकस्मिक अद्भुत प्रसग से अभिभूत कई क्षण मौन चलते रहते है।' आकस्मिक अद्भुत प्रसग क्या था?

7. लेखक ने रमन को एक साथ सरल स्वभाव, कल्पनाप्रिय, सद्भावी, आत्मप्रदर्शन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी कहा है। पाठ मे आए कौन-कौन-से घटना प्रसग उनके चरित्र की उपर्युक्त विशेषताओ को दर्शाते है?

8 सर चद्रशेखर वेंकटरमन ने लेखक तथा उसके साथियो को किन-किन बातो की जानकारी दी?

भाषा–अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो का शुद्ध उच्चारण कीजिए
साध्य आकाश, श्यामल मेघ, आतिथेय, भव्य भवन, तकियाकलाम, स्निग्ध दृष्टि, नि सग भाव

2. बहुत से शब्द कई अर्थ व्यक्त करते है। ऐसे शब्दो को 'अनेकार्थक' शब्द कहते है, जैसे धन (1) जोड, (2) दौलत
नीचे अनेक अर्थवाले कुछ शब्द दिए है उनके विभिन्न अर्थ लिखिए·
उत्तर, अर्थ, पूर्व, नाना

3. नीचे लिखे उपसर्गो की सहायता से शब्द-रचना कीजिए
उपसर्ग–नि , वि, परि, उप, प्र
देश
श्रम

सग

स्थिति

4 कई बार अपनी बात को विशेष रूप से कहने या किसी बात पर बल देने के लिए वाक्य के उस पद को वाक्य के अंत मे प्रयोग करते है, जैसे

– ये है रमन → ये रमन है। (सामान्य बात)

निम्नलिखित को सामान्य वाक्य मे बदलिए

–यह व्यक्तित्व है इनका

–कितने सुंदर अक्षर है, मोती जैसे

–उससे असुदर एक और पदक है कलकत्ता विश्वविद्यालय का

5 नीचे लिखे वाक्यो को ध्यान से पढिए

1 उनसे बोलो कि हम आए है।

2 जब हम उनसे विदा लेते है तो पता लगता है कि एक घटा कभी का बीत चुका।

3 हीरे कोयले की खानो मे ही पैदा होते है।

4 वे विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश नहीं गए।

ध्यान दीजिए दो वाक्यो को जोडने के लिए 'कि' (योजक) का प्रयोग किया जाता है और दो चीजों के बीच संबंध बताने के लिए 'की' (सबधकारक की विभक्ति) का प्रयोग किया जाता है।

'कि' और 'की' का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्यो की रचना कीजिए।

योग्यता-विस्तार

1. वेकटरमन के अतिरिक्त भारत के कुछ और प्रसिद्ध वैज्ञानिको के बारे मे जानकारी प्राप्त कीजिए और उन पर चर्चा कीजिए।
2. नोबुल पुरस्कार का सस्थापक कौन था? यह पुरस्कार किस उद्देश्य से दिया जाता है और किन-किन क्षेत्रो मे?

शब्दार्थ और टिप्पणी

आतिथेय – मेजबान, अतिथि सत्कार करने वाला
वर्जित – निषिद्ध, मना
हठात – हठपूर्वक, बलपूर्वक
नाद-विज्ञान – ध्वनि विज्ञान
तकियाकलाम – बोलते समय किसी एक शब्द या वाक्य को बार-बार प्रयोग करने की आदत
क्या खाक जानते हो – लेशमात्र भी नही जानते हो
पूर्वापर संबंध – पहले-पीछे का सबध
हरितवसना – हरी-भरी
स्निग्ध दृष्टि – प्यार भरी नजर
अभिभूत होना – अत्यधिक प्रभावित होना
धूमकेतु – पुच्छल तारा
नाना – तरह-तरह
रूपातरण – एक रूप से दूसरे रूप मे बदलने की प्रक्रिया
आत्मीयता – अपनेपन का भाव
इंडस्ट्रियल डायमंड – उद्योग-धंधो मे प्रयुक्त होनेवाला एक प्रकार का हीरा
ग्रेनाइट – एक प्रकार का कठोर पत्थर
व्यर्थता – निरर्थकता, अनुपयोगिता
स्रष्टा – सृष्टि को रचने वाला
निःसंग भाव – बिना लगाव के, निर्लिप्त
शिशु-सुलभ – बच्चे जैसे (सरल)
महत्त्वाकांक्षी – बडा बनने की अभिलाषा रखने वाला
सग्रहालय – वह स्थान जहॉ विशेष प्रकार की वस्तुओ का सग्रह किया गया हो, अजायबघर, म्यूजियम

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की, "दीनबंधु, दास ने श्रीमान् की सेवा चालीस साल तक की अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी ज़िंदगी की नेकनामी मिट्टी मे मिल जाए।"

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब न माने तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों मे यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें वे वर्तमान दीवान सरदार सुजान सिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हो, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है, मंदाग्नि के मरीज को यहाँ तक का कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नही। एक महीने तक उम्मीदवारो के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम परतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क मे हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद और



किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से। कोई नए फ़ैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम रोया करते थे, यहाँ उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अँगरखे और कनटोप देवगढ़ में अपनी सज-धज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढका रहता था।

सरदार सुजान सिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोज़ेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर व्यक्ति अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा

का दर्शन करते थे। मि० 'न' को हुक्का पीने की लत थी, पर आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि० 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, हक्सले के उपासक, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि० 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वही नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था। शर्माजी घड़ी रात से ही वेदमंत्र पढ़ने लगते थे। मौलवी साहब को नमाज और तिलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फील्ड बन गया। खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भले-मानस लोग शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद

के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेज़ी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँखों और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी

ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियो को हाथ से धकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलो को मारता, लेकिन गाडी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई नज़र न आता। गाडी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी न सकता था। बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी हाथो मे डंडे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ़ सहमी हुई आँखो से देखा, परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाडियो ने भी उसको देखा मगर बंद आँखों से, जिनमे सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और भाईचारे का नाम भी न था।

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था, जिसके हृदय मे दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरो मे चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला, "मै तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा, एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खडा है। झुककर बोला, "हुज़ूर मै आपसे कैसे कहूँ?"

युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो।

अच्छा तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मै पहियों को धकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाएगी।"

किसान गाडी पर जा बैठा। युवक ने पहियों को ज़ोर लगाकर उठाया। कीचड बहुत ज्यादा था। वह घुटने तक ज़मीन मे गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी, उसने फिर ज़ोर लगाया, उधर किसान ने बैलो को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर लगाया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला, "महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो?" किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, कहीं ये सुजान सिह तो नहीं? आवाज़ मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही लगता है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुसकराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

महीना पूरा हुआ और चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से अपनी-अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते-जाते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेगे? न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी?

सध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और

धनाढ्य, राजकर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे। उम्मीदवारो के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजान सिह ने खडे होकर कहा, "दीवानी के उम्मीदवार महाशयो ! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो विपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम है और जो हैं वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं। मै रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारियो और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया, "आप लोगो को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं ज़ख्मी होकर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढा दे, उसके हृदय मे साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म से कभी न हटेगा।"

-- प्रेमचंद

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 सरदार सुजानसिंह किन कारणो से दीवान-पद से मुक्त होना चाहते थे?

2 विज्ञापन मे दीवान-पद के लिए क्या-क्या योग्यताएँ निर्धारित की गई थीं?

3 'लेकिन मनुष्यो का वह बूढा जौहरी आड मे बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलो मे हस कहाँ छिपा है।'
उपर्युक्त वाक्य मे 'बूढा जौहरी', 'बगुला' और 'हस' का प्रयोग किन लोगो के लिए किया गया है?

4. हॉकी के खेल का आयोजन किस उद्देश्य से किया गया था
(क) रियासत के लोगो को हॉकी का खेल दिखाने के लिए।
(ख) हॉकी के श्रेष्ठ खिलाडी का चुनाव करने के लिए।
(ग) दीवान पद के लिए उपयुक्त गुण वाले व्यक्ति की पहचान के लिए।
(घ) दीवान-पद के लिए आए उम्मीदवारो के मनोरजन के लिए।

5 पडित जानकीनाथ की तरफ़ देखते समय किनकी ऑखो मे सत्कार और किनकी ऑखो मे ईर्ष्या थी?

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो की सहायता से ड-ड और ढ-ढ के उच्चारण का अतर समझिए और इनसे युक्त शब्दो को छॉटकर अलग-अलग लिखिए
डलिया, डाली, पडना, ढक्कन, पढना, देवगढ, रेलगाडी, बढना, डाकिया, चढाई, सडक, घडी, किवाड, कीचड, पहाड, ढोलक, ढाल, डमरू

2 नीचे लिखे शब्दो की वर्तनी सुधार कर लिखिए
बुढा, विधालय, परिक्षा, विग्यापन, पर्मात्मा, मनुश्य, खिलारी, उमीदवार, ईर्श्या, आपति,

3 ध्यान दीजिए सस्कृत के ऐसे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के हिंदी मे प्रयुक्त होते

है उन्हें 'तत्सम' शब्द कहते है और जो थोड़े परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होते है उन्हे 'तद्भव' कहते है, जैसे

तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग
दुग्ध	दूध
रात्रि	रात
हस्त	हाथ

नीचे लिखे शब्दो मे से तत्सम और तद्भव शब्दो को छॉटकर अलग-अलग लिखिए:

परमात्मा, राजकाज, अनुभव, प्रार्थना, दूसरा, ऊँचा, खेत, प्रस्ताव, उत्साह, ॲगरखा

4 खेल शुरू हो गया और गेद किसी दफ्तर के अप्रेटिस की तरह ठोकरे खाने लगी।

ऊपर लिखे वाक्य मे दो उप वाक्य है,

1. खेल शुरू हो गया
2. गेंद किसी दफ्तर के अप्रेटिस की तरह ठोकरे खाने लगी।

ये दोनो सरल वाक्य समुच्चयबोधक 'और' से जुडे हुए है। दोनो वाक्य समानाधिकरण (व्याकरण की दृष्टि से एक जैसे) है। इस तरह से जुड़े वाक्य को 'संयुक्त वाक्य' कहते है।

नीचे लिखे वाक्यो में से सरल एव सयुक्त वाक्य छॉटकर अलग-अलग लिखिए.

(क) देश के प्रसिद्ध पत्रो मे विज्ञापन निकला और अनेक प्रार्थना पत्र आए।

(ख) इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी।

(ग) किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुंझला कर बैलों को मारता।

(घ) युवक ने पहियो को जोर लगाकर उठाया।

5. निम्नलिखित मुहावरो का प्रयोग अपने वाक्यो मे कीजिए.

मिट्टी मे मिल जाना, पहाड बन जाना, लक्ष्मी की कृपादृष्टि होना, कलेजा धडकना, नाक मे दम होना।

योग्यता-विस्तार

1. आपकी दृष्टि मे सरदार सुजानसिह द्वारा दीवान चुनने के लिए अपनाए गए तरीको के अतिरिक्त और कौन-कौन-से तरीके हो सकते है। कक्षा मे चर्चा कीजिए।
2. प्रेमचद द्वारा लिखित कुछ अन्य कहानियाँ पढिए और उन्हे कक्षा मे सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

दाग ल गना – कलक लगना

नेकनामी – अच्छा नाम

ग्रेजुएट – स्नातक

मंदाग्नि – भूख न लगना

सनद – डिग्री, उपाधि

एमामा – साफा, छोटी पगडी

हक्सले – एक अग्रेज दार्शनिक जो ईश्वर मे विश्वास नहीं रखता था

पदच्युत हो जाना – पद से हट जाना

तिलावत – कुरान का पाठ, धर्मग्रथ को पढना

अप्रेटिस – किसी कार्यालय या कारखाने मे काम सीखने आया व्यक्ति। ऐसे व्यक्ति से तरह-तरह के काम कराए जाते है

धावे के लोग – हमला बोलने वाले

बेदम हो जाना – अत्यधिक थक जाना

उबार लेना – बचा लेना

पैठना – घुसना

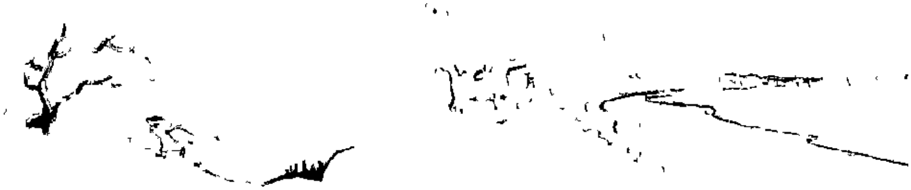
बद आँख से देखना – देखकर अनदेखा करना

हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ !

सुनो बात मेरी–
अनोखी हवा हूँ !
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फ़िकर है,
बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
मुसाफ़िर अजब हूँ।

न घर-बार मेरा,
न उद्‌देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,
न आशा किसी की,
न प्रेमी, न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
हवा हूँ, हवा मै,
बसंती हवा हूँ !

जहाँ से चली मै,
जहाँ को गई मैं–
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर,
झुलाती चली मैं,
झुमाती चली मैं !
हवा हूँ, हवा मै
बसंती हवा हूँ !



चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया,
गिरी धम्म से, फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा,
किया कान मे 'कू',
उतरकर भगी मै,
हरे खेत पहुँची–
वहाँ, गेहुँओं में
लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मै !
खडी देख अलसी
लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी–
हिलाया-झुलाया
गिरी पर न कलसी !
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,

हवा हूँ, हवा मै,
बसती हवा हूँ !

मुझे देखते ही
अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया,
न मानी, न मानी,
उसे भी न छोड़ा–
पथिक आ रहा था,
उसी पर ढकेला,
हँसी जोर से मैं,
हँसीं सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी,
बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी !
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ !!

— केदारनाथ अग्रवाल

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1 निम्नलिखित पक्तियो से बसती हवा के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है?

न घर-बार मेरा, न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की, न आशा किसी की,
न प्रेमी, न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ, उधर घूमती हूँ।

(क)लापरवाही
(ख)उदासीनता
(ग) मनमौजीपन
(घ) मूर्खता

2 किस बात से हारकर हवा ने सरसो को नहीं हिलाया-झुलाया?
3. बसती हवा के साथ-साथ कौन-कौन हॅसने लगे?
4 कविता की कौन-सी पक्तियॉ इस बात की पुष्टि करती हैं कि बसंती हवा बडी बावली और मस्तमौला है?
5 बसती हवा ने पथिक पर किसको ढकेला और क्यो?

योग्यता-विस्तार

1. बसंत ऋतु पर लिखी गई कुछ कविताओ का सकलन करके 'बसंत अक' नाम से हस्तलिखित पत्रिका तैयार कीजिए।
2. इस कविता की सहायता लेते हुए बसत ऋतु की शोभा पर बीस पक्तियो का एक निबध लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बसती हवा – बसंत ऋतु मे चलने वाली हवा

बावली – पगली, सनकी

मस्तमौला – आजाद तबीयत का, सदा प्रसन्न रहने वाला

मुसाफिर – यात्री

अजब – अनोखी

निर्जन – सुनसान, जहाँ कोई न हो

पोखर – तालाब

झकोरा – जोर से हिलाया

महुआ – एक विशाल वृक्ष

अलसी – तीसी

कलसी – छोटा घडा या गगरी

अरहरी – अरहर, दाल के रूप में प्रयुक्त एक अनाज

ढकेला – धक्का दिया, गिराया

भारत की एक बहुत प्राचीन नगरी है—वाराणसी। गगा की निर्मल धारा सहस्रों वर्षो से इसके आँचल में मचल-मचल कर बहती रही है। इस नगरी का अपना सैकड़ो वर्ष पुराना वैभवशाली इतिहास है। हमेशा से यह नगरी शिक्षा का बड़ा केंद्र रही है। प्राचीनकाल मे यह काशी राज्य की राजधानी थी।

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले की बात है। गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। यहां आयुर्वेद (जीवनदान देने वाली कला) की शिक्षा दी जाती थी। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ आते और शल्य-चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते। इस पवित्र मंदिर के द्वार केवल उनके लिए खुले थे, जिनका मन मानव सेवा और श्रम से ओतप्रोत होता था, जिनमें साधना और कठोर परिश्रम करने की लगन होती थी।

इस पाठशाला के आचार्य थे महर्षि सुश्रुत। शल्य चिकित्सक के रूप मे उनका यश चारो दिशाओ मे दूर-दूर तक फैला हुआ था। वे स्वय काशी के राजा दिवोदास के शिष्य थे। दिवोदास को भगवान् धन्वतरी का अवतार कहा गया है।

सुश्रुत के प्रारंभिक जीवन के बारे मे आज कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती। बस, इतना ही कहा जा सकता है कि उनके पिता का नाम विश्वामित्र था और उनका बाल्यकाल गगा की पावन लहरों से खेलते हुए बीता था। बड़े होने पर उन्होंने काशी के राजा, महान चिकित्साशास्त्री दिवोदास की



देखरेख मे चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की और वे अपने समय के अद्वितीय शल्य चिकित्सक हुए। अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुत-सी नई शल्य तकनीकें विकसित कीं, जो आगे चलकर बहुत से शल्य-चिकित्सकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। उनके द्वारा रचित चिकित्सा ग्रंथ 'सुश्रुत संहिता' एक महान ग्रंथ है। यह ग्रंथ इस तथ्य का जीवंत प्रमाण है कि प्राचीन भारत के चिकित्सक, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे अपने समय से बहुत आगे थे।

सुश्रुत संहिता से हमें शल्य चिकित्सा की विशद जानकारी मिलती है। इसमे कुल मिलाकर 120 अध्याय है और इन्हें छह भागों में बाँटा गया है—सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान और उत्तरस्थान।

इस ग्रथ में शल्यचिकित्सा की विधियों और उसमें काम आनेवाले यत्रों तथा शस्त्रों के बारे मे व्यापक जानकारी दी गई है। शरीर के किसी भाग में मवाद पड जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्त्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकारी दी है कि इस स्थिति मे चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ। इसी तरह जब शरीर के कुछ अंग जलवृद्धि के कारण फूल जाएँ तो उनका जल सूई द्वारा कैसे खींच लेना

चाहिए, यह विधि भी उपयुक्त रूप से बताई गई है। मूत्राशय की पथरी, भगंदर और बवासीर के ऑपरेशन और मोतियाबिंद की शल्यक्रिया के साथ-साथ, ज़रूरत पड़ने पर माँ के गर्भ मे चीरा लगाकर शिशु को जन्म देने की शल्यक्रिया और दंतचिकित्सा तथा अस्थिचिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन भी सुश्रुत संहिता में मिलता है। इसके अलावा काया शृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) से जुड़े तरह-तरह के ऑपरेशन भी विस्तार से वर्णित हैं।

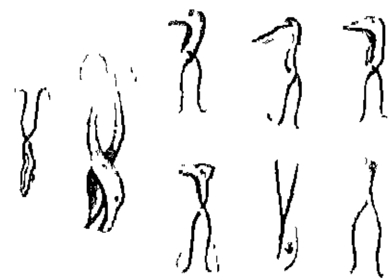
सुश्रुत सहिता में शल्य यंत्रो की सख्या 101 बताई गई है। इन यंत्रो को हिंस्र पशु तथा पक्षियों के मुँह के आकार के अनुसार नाम दिए गए है, जैसे – सिंहमुख (सिंह के मुख जैसा), गृध्रमुख (गिद्ध के मुँह जैसा), मकरमुख (मगरमच्छ के मुँह जैसा) आदि। ये यंत्र आधुनिक शल्य यंत्रों से किसी भी तरह कम न थे। इनके साथ ही 20 और शल्य यत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम है–मडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बृहिमुख आदि। ये शल्य औज़ार प्राय लौह धातु या चाँदी से बनाए जाते थे। इन्हें इस ढंग से बनाया जाता था कि इनकी धार कभी कमजोर न पड़े और इनमे कभी ज़ंग न लगे। उन्हे रखने के लिए खासतौर से लकड़ी के डिब्बे भी तैयार किए जाते थे।

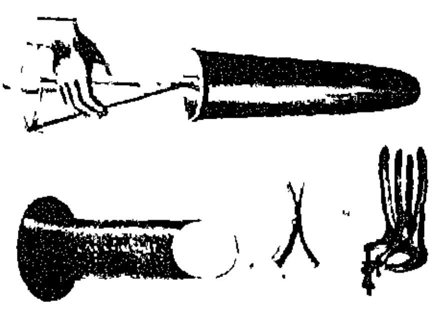
टाँके लगाने के लिए त्वचा और विभिन्न ऊतकों की मोटाई और रचना को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के धागे भी विकसित किए गए थे। कुछ का आधार रेशम की डोर होती थी तो कुछ सूत से बनाए जाते थे। कुछ चमड़े से तैयार किए जाते थे तो कुछ घोड़ों के बालो से। इसी प्रकार कई किस्म की सूइयाँ भी उपयोग में लाई जाती थीं–कुछ मोटी, कुछ पतली, कुछ अधिक घुमाव लिए हुए, तो कुछ कम और कुछ बिलकुल सीधी।

उन दिनों तरह-तरह की रूई, रेशम और मलमल से बनी पट्टियो का भी प्रचलन

था।

दुर्घटनाओं में अथवा अस्त्र-शस्त्र के वार से फट गई आँतों के दो किनारों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटों का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आँत के दो किनारो को साथ मिलाकर उस पर चींटे छोड़ दिए जाते। वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे आपस में सिल से जाते। अब चींटो का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस दिए जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता। साथ ही चींटों का सिर भी ऊतकों मे अपनेआप घुल-मिल जाता था। आजकल शल्य चिकित्सक शरीर के भीतरी अंगों के टाँके लगाने के लिए भेड की आँत से बनाए गए धागों का उपयोग करते है। उद्देश्य यह रहता है कि टाँके भीतर ही भीतर घुल जाएँ जिससे टाँके निकालने के लिए कम-से-कम शरीर का वह भाग दोबारा न खोलना पडे।





सश्रुत-संहिता में शल्यचिकित्सा

के लगभग हर महत्त्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी गई है, जैसे – ऑपरेशन के बाद क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए, रोगी का आहार कैसा होना चाहिए, घाव भर जाए इसके लिए कौन-कौन-सी ओषधियाँ देनी चाहिए आदि।

प्राचीन भारत के चिकित्सकों को ओषधि विज्ञान के बारे मे भी व्यापक जानकारी थी। उन्होंने बहुत-सी जड़ी-बूटियों की खोज की थी। साथ ही रसायन भी खोज निकाले थे। ये रोगी का दुख-दर्द दूर करने में काम आते थे।

शल्यक्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न हो, इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी-बूटियाँ भी खोज निकाली गई थीं जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था।

मानव शरीर के भीतरी अंगो की जानकारी प्राप्त करने के लिए सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वजनदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी-सी नहर मे डाल दिया जाता था। एक सप्ताह बाद जब बाहरी त्वचा और ऊतक फूल जाते, तब झाड़ियो और लताओं से बने बडे-बड़े ब्रुशो द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था। इससे शरीर के आतंरिक अगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी।

सुश्रुत जितने बड़े शल्यचिकित्सक थे, उतने ही श्रेष्ठ गुरु भी थे। शल्यकला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड़-पौधो की लताओ, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचो और मलमल से बने मानव-पुतलो पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है—इसका अभ्यास

प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज़ जैसे फलों और सब्जियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या-क्या तकनीक अपनाएँ–इसका प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अदाजा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती, जिसे शिष्य को सूई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरा चमड़ा, जिसपर से बाल न हटाए गए हों, उसपर खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलो का सहारा लिया जाता था।

इस प्रशिक्षण मे उत्तीर्ण होने के बाद ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य चिकित्सक की देखरेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्य क्रियाएँ देखता और उनसे सीखता जाता। फिर कुछ समय बाद जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता, तब उसे गुरु की देखरेख मे स्वय ऑपरेशन करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव पाकर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था।

सुश्रुत मूलत शल्य चिकित्सक थे। किंतु उन्होने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, हृदय रोग, एनजाइना एव विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग स्कर्वी के बारे मे भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

ईसा से 600 वर्ष पूर्व और सन् 1000 ई. तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए स्वर्णिम युग था। अत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे

बहुत से यशस्वी चिकित्साशास्त्रियों ने भारत की पावनभूमि पर जन्म लिया। काशी के साथ-साथ नालंदा और तक्षशिला के प्राचीन विश्वविद्यालय भी सैकड़ों वर्षों तक उच्चकोटि की शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहे। यहाँ दूर-दूर से शिक्षार्थी आते और चिकित्सा विज्ञान में निपुण होकर मानव कल्याण की प्रतिज्ञा लेते। चिकित्सा विज्ञान के कुछ इतिहासकारो का तो यह भी कहना है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुत से सिद्धांत प्राचीन भारतीय चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित हैं।

— यतीश अग्रवाल

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. दिवोदास कौन थे, सुश्रुत से उनका क्या संबंध था?
2. 'सुश्रुत सहिता' का परिचय संक्षेप में दीजिए।
3. तीन शल्य यत्रो के नाग देते हुए उनके नामकरण का आधार बताइए।
4 प्राचीनकाल में टाँका लगाने के लिए किन-किन वस्तुओं से बने धागे का प्रयोग किया जाता था?
5. फटी हुई आँतो की चिकित्सा की पद्धति का वर्णन कीजिए।
6. वह कौन-सी अनूठी विधि थी जिससे मानव शरीर के भीतरी अगों की बनावट की जानकारी प्राप्त होती थी?
7 शल्य-चिकित्सा का प्रशिक्षण किस प्रकार दिया जाता था?
8. ईसा से 600 वर्ष पूर्व और सन् 1000 ई तक के समय को भारतीय चिकित्सा विज्ञान का स्वर्णिम युग क्यो कहा गया है?

9. आजकल शल्य चिकित्सक शरीर के भीतरी अगो को जोडने के लिए टॉके लगाते है ·
   (क) रेशम की डोरी से
   (ख) भेड की आँत से
   (ग) सूती धागे से
   (घ) लोहे के बारीक तार से

भाषा-अध्ययन

1. नीचे लिखे शब्दो का शुद्ध उच्चारण कीजिए और इन्हे लिखिए ·
   शल्य चिकित्सा, सुश्रुत, सहस्र, आयुर्वेद, धन्वतरी, कल्पस्थान, हिंस्र, गृध्रमुख, मकमुख, मंडलाग्र

2. नीचे लिखे शब्दो के रेखाकित अंश पर ध्यान दीजिए
   सहस्र = स+ह+स्+र
   शस्त्र = श+स्+त्+र
   नीचे लिखे शब्दो के रेखाकित अंशों का ऊपर दिए उदाहरण के अनुसार विश्लेषण कीजिए
   परिश्रम, शास्त्री, सुश्रुत, हिंस्र, स्तोत्र, स्त्री

3 नीचे लिखे वाक्यो को पढिए
   (क) इस नगरी का अपना सैकडो वर्ष पुराना वैभवशाली इतिहास है।
   (ख) यह नगरी शिक्षा का एक बहुत बडा केंद्र रही है।
   (ग) इस पाठशाला के आचार्य महर्षि सुश्रुत थे।
   (घ) उस मंदिर के द्वार सबके लिए खुले थे।
   (ङ) वे यंत्र आधुनिक शल्य यत्रो से किसी भी तरह कम न थे।

ध्यान दीजिए: रेखाकित पद मूलत सर्वनाम है किंतु यहाँ वे सज्ञा पदो से पूर्व आए है और सज्ञा पद की विशेषता बता रहे है। ऐसे पदों को 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। जब ये सज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो तो सर्वनाम और जब सज्ञा की विशेषता बताएँ तो सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।

यह भी ध्यान दे कि 'यह', 'वह', 'ये', 'वे' के बाद जब परसर्ग आता है तो वे क्रमश 'इस', 'उस', 'इन' और 'उन', मे बदल जाते है।

नीचे लिखे गद्याश मे से सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषणों को छाँटकर लिखिए

इस ग्रथ मे शल्य चिकित्सा की विधियो का वर्णन है। उसमे काम आने वाले यंत्रों के बारे मे व्यापक जानकारी दी गई है। उन्होने इस बारे मे स्पष्ट जानकारी दी है कि किस स्थिति मे चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ।

4 नीचे लिखे वाक्यो के रेखाकित पदो को ध्यान से पढिए

(1) भारत की प्राचीन नगरी वाराणसी है ।

(2) यह शिक्षा का बडा केंद्र रही है ।

(3) गगा की धारा इसके अचल मे बहती रहती है ।

ध्यान दीजिए: ऊपर लिखे वाक्यो मे पहले वाक्य मे 'क्रिया पद' एक है और दूसरे वाक्य मे दो है और तीसरे वाक्य मे तीन है। दूसरे और तीसरे वाक्यो में रेखाकित अश 'क्रिया पदबध' है।

इसी प्रकार के क्रियापदो और पदबधो के पॉच-पॉच उदाहरण पाठ से छॉट कर लिखिए।

5 निम्नलिखित का प्रयोग उपयुक्त वाक्य बनाकर कीजिए

(क) वैभवशाली इतिहास

(ख) सेवा और प्रेम से ओतप्रोत

(ग) प्रेरणा का स्रोत

(घ) गगा की पावन लहर

योग्यता-विस्तार

1. भारतवर्ष मे आजकल चिकित्सा की कौन-कौन-सी पद्धतियाँ प्रचलित है? उनकी जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. प्राथमिक उपचार पर एक लघु निबध लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

शल्य चिकित्सा – चीर-फाड द्वारा इलाज

मचल-मचल कर बहना – चंचलता से बहना

ओतप्रोत – परिपूर्ण, भरपूर

अद्‌वितीय – जिसके समान दूसरा न हो

तकनीक – विधि, तरीका

जीवत – जीता-जागता

विशद – स्पष्ट

हिंस्र – खूँखार, खतरनाक

त्वचा – खाल

ऊतक – शरीर के ततु

सक्षम – प्रभावी

रुग्ण – अस्वस्थ, बीमार

प्रशिक्षण – ट्रेनिग, किसी विशेष कार्य (व्यवसाय) के लिए व्यावहारिक ज्ञान एव आवश्यक कौशल प्राप्त करना

परिपक्व – पूर्णतया कुशल

स्वर्णिम युग – सुनहरा काल

विलक्षण – अद्‌भुत

मशक – भेड या बकरी की खाल को सी कर बनाया हुआ थैला, जिसे पानी लाने और ढोने के लिए प्रयोग किया जाता है

वर्षों तक वन में घूम-घूम,
बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर,
पांडव आए कुछ और निखर।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें, आगे क्या होता है !

मैत्री की राह बताने को,
सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,
भीषण विध्वंस बचाने को,



भगवान् हस्तिनापुर आए।
पांडव का संदेशा लाए–

''दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रखो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खाएँगे,
परिजन पर असि न उठाएँगे।''

दुर्योधन वह भी दे न सका,
आशिष समाज की ले न सका,
उलटे, हरि को बाँधने चला
जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।

हरि ने भीषण हुंकार किया,
अपना स्वरूप-विस्तार किया,
डगमग-डगमग दिग्गज डोले,
भगवान् कुपित होकर बोले–
''ज़ंजीर बढ़ा, अब साध मुझे,
हाँ-हाँ दुर्योधन ! बाँध मुझे।

हित-वचन नहीं तूने माना,
मैत्री का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ,
अंतिम संकल्प सुनाता हूँ।
    याचना नहीं, अब रण होगा,
    जीवन-जय या कि मरण होगा।

टकराएँगे नक्षत्र-निकर,
बरसेगी भू पर वह्नि प्रखर,
फण शेषनाग का डोलेगा,
विकराल काल मुँह खोलेगा।
    दुर्योधन! रण ऐसा होगा,
    फिर कभी नहीं जैसा होगा।

भाई पर भाई टूटेंगे,
विष-बाण बूँद-से छूटेंगे,
वायस-शृगाल सुख लूटेंगे,
सौभाग्य मनुज के फूटेंगे।
    आखिर तू भूशायी होगा,
    हिंसा का पर दायी होगा।"

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1 कृष्ण किस उद्देश्य से हस्तिनापुर आए थे?
2 युद्ध टालने के लिए पाडव किस सीमा तक समझौता करने के लिए तैयार थे?
3 पाडवो के लिए पॉच ग्राम मॉगने पर दुर्योधन की क्या प्रतिक्रिया हुई?
4 कविता की किस पक्ति से पता चलता है कि कवि कथा का वर्णन कर रहा है?
5 कवि ने कृष्ण को बॉधने के प्रयत्न को 'असाध्य' क्यो कहा है?
6 युद्ध के विनाशकारी रूप का वर्णन अपने शब्दो मे कीजिए।
7 निम्नलिखित पक्तियो का भाव स्पष्ट कीजिए
(क) सौभाग्य न सब दिन सोता है।
(ख) याचना नही, अब रण होगा, जीवन-जय या कि मरण होगा।
(ग) विष-बाण बूँद-से छूटेगे।
8 इस कविता के लिए कोई दूसरा उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

योग्यता-विस्तार

1 पौराणिक कथाओ से उदाहरण देते हुए निम्नलिखित कथन की पुष्टि कीजिए
'जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।'
2. एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित 'सक्षिप्त महाभारत' से इस प्रसग को पढिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पाडव आए कुछ और निखर – वनवास के कष्टो को झेलते-झेलते पाडवो की शक्ति और बढ गई

भीषण-विध्वस – भयकर विनाश

परिजन – सबधी, अपने सगे लोग

असि – तलवार

असाध्य – जो साधा न जा सके, असभव

विवेक – उचित-अनुचित परखने की क्षमता

स्वरूप विस्तार किया – विराट रूप धारण किया

दिग्गज – दसो दिशाओ के रक्षक, पौराणिक गाथा के अनुसार वे हाथी, जो दिशाओ की रक्षा करते है।

कुपित – क्रोधित

याचना – प्रार्थना

नक्षत्र-निकर – तारो का समूह

प्रखर-वह्नि – प्रचड आग

वायस – कौआ

शृगाल – गीदड

भूशायी – मर जाना, मृत्यु को प्राप्त होना

दायी – उत्तरदायी, जिम्मेदार

(पहला दृश्य)

(एक मैदान में मगध के सैनिको के शिविर लगे है। बीच मे मगध की पताका फहरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरो में दीपक जल गए है। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिंता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते है।)

अशोक: (स्वत.) आज चार साल से यह युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सकता है। दोनो ओर के लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं पर हम आज भी असफल है। क्या होगा इसका परिणाम?

द्वारपाल: (सिर झुकाकर) राजन्! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक: आने दो।

संवाददाता: (प्रवेशकर) महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर



समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए है!

अशोक (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गए है! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है!

(संवाददाता चुप रहता है।)

अशोक. बोलते क्यों नहीं हो तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता (धीरे से) बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद है। फिर किस मुँह से कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया।

अशोक (उत्तेजित होकर) कलिंग के फाटक आज भी बंद है?

संवाददाता हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद है।

अशोक (उत्तेजित होकर खड़े होते हुए) बंद है तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ। (हाथ से जाने का संकेत करते है।)

(दूसरा दृश्य)

(दूसरे दिन प्रातःकाल। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे है। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसके फाटक बंद है।)

अशोक मेरे वीर सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम कलिंग को जीत नहीं पाए है। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है। कलिंग के महाराज मारे

गए है। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके है, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक: (तलवार खींचकर) मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!!

(सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते है। उनकी तलवारे खिची की खिची रह जाती है। शस्त्र-सज्जित स्त्रियो की विशाल सेना फाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेस मे एक वीरागना है, जो सैनिक भेस मे साक्षात चडी दिखाई देती है। यह कलिग महाराज की लड़की पद्मा है। स्त्रियो की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मत्रमुग्ध-से देखते रह जाते है। अशोक भी चकित रह जाते है।)

पद्मा (आगे बढ़कर अपनी सेना से) बहनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नही कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखे बद कर लोगी।

अशोक: (स्वत) यह कौन है? क्या साक्षात् दुर्गा कलिग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि मे उतर आई है? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ है। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियो का भी वध करना होगा? ना! ना! मै स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नही करूँगा। मै शस्त्र

नहीं चलाऊँगा। (प्रकट) सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (आगे बढ़कर) तुम कौन हो देवी?

पद्मा. मैं कलिग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा? मै उससे द्वद्व–युद्ध करना चाहती हूँ।

अशोक अशोक तो मै ही हूँ राजकुमारी। दोषी मै ही हूँ। परतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मै स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा: क्यो महाराज?

अशोक. शास्त्र की आज्ञा है राजकुमारी!

पद्मा· और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखो माताओ की गोद सूनी कर दो? लाखों स्त्रियों की माँग का सिंदूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मै अपनी बलि चढाकर तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती है।

(अशोक सिर झुका लेते है)।



पद्मा. क्यो, सिर क्यो झुका लिया महाराज? मै युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

अशोक: बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा। कभी युद्ध नहीं करूँगा। (तलवार नीचे फेक देते हैं)।

पद्मा. यह क्या महाराज !

अशोक (अपने सैनिको से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेक दो। आज से अशोक तुम्हे कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेक दो अपनी तलवारे।

(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते है।)

पद्मा: (आगे बढकर) मै भुलावे में नहीं आ सकती महाराज! मै तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक. (सिर झुकाकर) तो लीजिए बदला राजकुमारी। मै अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मै हथियार नहीं उठाऊँगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

(अशोक सिर झुकाकर खडे हो जाते हैं)

पद्मा: तो जाइए महाराज! स्त्रियाँ भी निहत्थे पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए।

(स्त्रियो की अपनी सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

(तीसरा दृश्य)

(अशोक और उनके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए है। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए है।)

बौद्ध भिक्षु· (अशोक से) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि

अशोक. मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि

बौद्ध भिक्षु: जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे

अशोक. जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे

बौद्ध भिक्षु: अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक: अहिसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु: मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक मै सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु: प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियो को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मो को समान दृष्टि से देखूँगा।

अशोक: मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मै शक्तिभर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध भिक्षु: बोलो–

बुद्ध शरणं गच्छामि।
धर्म शरण गच्छामि।
संघं शरण गच्छामि।

सभी: बुद्धं शरण गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

— बशीधर श्रीवास्तव

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1 अशोक ने सेना का सचालन स्वय करने का निश्चय क्यो किया?

2 अशोक ने पद्मा के ललकारने पर भी युद्ध करना स्वीकार क्यो नहीं किया?

3 पद्मा को सामने देखकर अशोक के मन मे क्या-क्या विचार आए?

4 बदले का अच्छा अवसर पाने पर भी पद्मा ने अशोक को क्यो जीवित छोड दिया?

5 बौद्ध भिक्षु ने अशोक से क्या-क्या प्रतिज्ञाएँ कराई?

6 अशोक ने भविष्य मे युद्ध न करने का निश्चय किया, क्योंकि–

(क) उसके सैनिक लडते-लडते बहुत थक गए थे।

(ख) युद्ध मे होने वाली हिंसा को देखकर उसे युद्ध से घृणा हो गई थी।

(ग) उसे पता चल गया था कि वह कलिग पर कभी भी विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा।

(घ) पद्मा और उसकी सखियों को धोखे मे डालकर वह उन्हे बदी बना लेना चाहता था।

भाषा-अध्ययन

1 एक ही सवाद को अलग-अलग प्रकार से पढने पर अर्थ मे अतर आ जाता है। निम्नलिखित सवादो को अलग-अलग ढग से पढिए और अर्थ मे आए अतर को समझिए

(क) कलिग दुर्ग के फाटक आज भी बद है।

कलिग दुर्ग के फाटक आज भी बद है?

हाँ महाराज! कलिग दुर्ग के फाटक आज भी बद है।

(ख) मगध की विजय हुई है।

मगध की विजय हुई है?

मगध की विजय हुई है!

2 निम्नलिखित शब्दो मे अर्थ का अतर समझिए

(क) अस्त्र– फेंककर चलाया जानेवाला हथियार, जैसे बदूक, तीर आदि।

शस्त्र– हाथ मे रखकर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे तलवार, भाला, छुरा, छुरी आदि।

(ख) शस्त्र– हथियार

शास्त्र– ज्ञान, धर्म साहित्य, कला आदि के ग्रथ।

उपर्युक्त शब्दो को वाक्यो मे प्रयोग कीजिए।

3 निम्नलिखित समस्त पदो के विग्रह पर ध्यान दीजिए

सुख-शाति = सुख और शाति (द्वद्व समास)

मातृभूमि = माँ के समान भूमि (कर्मधारय समास)

युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि (तत्पुरुष समास)

जन्मभूमि = जन्म की भूमि (तत्पुरुष समास)

इसी प्रकार निम्नलिखित समस्त पदो का विग्रह कीजिए

सवाददाता, महाराज, आत्मसमर्पण, वीरकन्या, विजय लालसा, राजकुमारी,

4 निम्नलिखित वाक्यो को उदाहरण के अनुसार बदलिए

उदाहरण: फाटक खुल गए। → फाटक खोल दिए गए।

(क) लाखो के सिर कट गए। (ग) शिविरो मे दीपक जल गए।

(ख) अशोक का माथा झुक गया। (घ) जगल उजड गए।

5 नीचे लिखे मुहावरो का वाक्यो मे प्रयोग कीजिए

लोहा लेना, गोद सूनी होना, माँ का सिदूर पोछना, खून की प्यास बुझाना।

योग्यता-विस्तार

1. अपने साथियो के साथ कक्षा मे इस एकाकी का अभिनय कीजिए।
2. इस एकाकी को कहानी के रूप मे लिखिए।

3. 'युद्ध से हानियाँ' विषय पर कक्षा मे दो मिनट का भाषण दीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

शिविर – सैनिक पडाव
पताका – झडा
स्वत – स्वय, अपने आप
सवाददाता – समाचार देने वाला
गुप्तचर – जासूस
आत्मसमर्पण – हथियार डाल देना
वीरागना – वीर स्त्री
मंत्रमुग्ध – वशीभूत
भगिनी – बहन
साक्षात् – सीधे, प्रत्यक्ष, आखो के सामने
लोहा लेना – मुकाबला करना
द्वद्व – कुश्ती, दो व्यक्तियो मे युद्ध
माँग का सिदूर पोछना – विधवा बना देना
पूर्णाहुति – समापन
नत – झुका हुआ
सदाव्रत – प्रसाद
गोद सूनी कर देना – किसी के बच्चो की हत्या कर देना।

इस शब्द-कोश से आपको इस पुस्तक के कठिन शब्दों के अर्थ समझने मे सहायता मिलेगी। नीचे प्रत्येक कॉलम में बाई ओर कठिन शब्द और दाई ओर उसका अर्थ दिया गया है। अनेक स्थानों पर शब्दों को उनके खंडो में तोडकर दिखाया गया है, जिससे आप शब्द-रचना की विधि भी समझ सकेंगे। इससे शब्दार्थ जानने में भी सहायता मिल सकेगी। कहीं-कहीं शब्दो के अनेक पर्याय भी दिए गए है, जिन्हें प्रसंगानुसार प्रयोग करना सीख सकेंगे। कुछ शब्दों के सटीक विलोम भी दिए गए है।

इस शब्द-कोश के उपयोग से आप न केवल शब्दों का सही अर्थ जान सकेगे अपितु उन्हे सही-सही लिखना भी सीख सकेंगे।

शब्द का अर्थ देने से पहले बताया गया है कि वह शब्द सज्ञा (स्त्रीलिंग या पुल्लिंग उल्लेख के साथ) विशेषण, क्रिया, (सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया) क्रिया-विशेषण आदि में से किस कोटि का है। इसके लिए जो संक्षिप्त रूप प्रयोग मे लाए गए हैं, वे इस प्रकार है :

पु	–	पुल्लिग	अ	–	अव्यय
स्त्री.	–	स्त्रीलिग	मु	–	मुहावरा
सर्व.	–	सर्वनाम	अ	–	अंग्रेजी
वि	–	विशेषण	फा	–	फारसी
क्रि	–	क्रिया	अ क्रि	–	अकर्मक क्रिया
क्रि वि.	–	क्रिया विशेषण	स क्रि	–	सकर्मक क्रिया
			ब्रज	–	ब्रजभाषा

अंतर्राष्ट्रीय: (वि०), (अंतस् + राष्ट्रीय), दो या दो से अधिक राष्ट्रों के बीच, संपूर्ण विश्व का

अक्ल ठिकाने आना : (मु०), बात ठीक-ठीक समझ में आना

अक्षय: (वि०), जिसका क्षय न हो, कभी नष्ट न होने वाला

अग्रणी: (वि०), प्रमुख, श्रेष्ठ

अघाना: (क्रि०), तृप्त होना, संतुष्ट होना

अजब: (वि०), अनोखा, अद्भुत

अठिलाना: (क्रि०), अठलाना, इतराना

अड़ंगा डालना: (मु०), रुकावट डालना, बाधा उपस्थित करना

अतिरेक: (पु०), अधिकता, आवश्यकता से अधिक

अदम्य: (वि०), प्रबल, जिसको दबाया न जा सके

अद्वितीय: (वि०), जिसके समान दूसरा न हो, बेजोड़

अनुचर: (पु०), सेवक, नौकर, पीछे चलने वाला

अनुरक्ति: (स्त्री), प्रसन्न, प्रेम

अन्यत्र: (क्रि०वि), और कहीं, किसी और स्थान पर

अन्यमनस्क: (वि०), अनमने भाव से, बिना मन के

अप्रेंटिस: (अं०) (पु०), किसी कार्यालय या कारखाने में काम करने, सीखने आया व्यक्ति, ऐसे व्यक्ति से तरह-तरह के काम कराए जाते हैं, नवसिखुआ

अभिभूत होना: (क्रि०), अधिक प्रभावित होना

अभियुक्त: (पु०), जिसपर न्यायालय में मुकदमा चल रहा हो

अभिलाप: (पु०), अभिलाषा (इच्छा) का पुल्लिंग प्रयोग, चाह

अभूतपूर्व: (वि०), अनोखा, अद्‌भुत, जो पहले न हुआ हो
अभ्यस्त: (वि०), आदत पड़ना, आदी, जिसने किसी काम का अभ्यास किया हो
अमिट: (वि०) (अ+मिट), न मिटने वाला, स्थायी
अयाल: (पु०), सिंह, घोड़े आदि के गरदन के बाल
अरहरी: (स्त्री०), अरहर, दाल के रूप में प्रयुक्त एक अनाज
अरु: (अ०), और
अर्धशतक: (पु०), आधाशतक, अर्थात् पचास
अर्पण: (पु०), भेंट करना, आदरपूर्वक कुछ देना
अलसी: (स्त्री०), तीसी, इसके बीज से तेल निकाला जाता है
अवतारी: (वि०), दैवी गुणों से युक्त, अलौकिक शक्ति वाला
अवरोध: (पु०), रुकावट, अड़चन, बाधा
अविजित: (वि०), बिना आउट हुए, जो जीता न गया हो
अविरोध: (पु०), अड़चन के बिना, बिना विरोध के
अशिष्टता: (स्त्री०), बदतमीजी, असभ्य व्यवहार
असबाब: (पु०), सामान, वस्तु
असाध्य: (वि०), जो साधा न जा सके, असंभव
असि: (स्त्री०), तलवार
अस्त्र-शस्त्र: (पु०), अस्त्र–वह हथियार जो फेंक कर चलाया जाए, जैसे: बाण, गोली। शस्त्र–वह हथियार जो हाथ में रखकर चलाया जाए, जैसे: भाला, तलवार, चाकू
अहाता: (पु०), चारों ओर से घिरा हुआ स्थान

आँखें कौड़ी-सी निकलना: (मु०), झटके के कारण आँखों का उभरकर कौड़ी के समान दिखाई देना

आइंदा: (फ़ा०) (वि०), भविष्य में, आगे
आकांक्षा: (स्त्री०), इच्छा, चाह
आखेट: (पु०), शिकार, मृगया
आग बबूला हो जाना: (मु०), गुस्से से भर जाना
आजानु बाहु: (वि०), जिसके हाथ घुटनों तक लंबे हों (महापुरुषों का एक लक्षण)
आजीविका: (स्त्री०), रोजी-रोटी का साधन
आतिथेय: (पु०), मेज़बान, अतिथि-सत्कार करनेवाला
आतिथ्य: (पु०), अतिथि का सत्कार, मेहमाननवाज़ी
आत्मसमर्पण: (पु०), हथियार डाल देना, अपनी हार मान लेना
आत्मीयता: (स्त्री०), अपनेपन का भाव, स्नेह संबंध
आनंदविभोर: (वि०), खुशी में डूब जाना, आनंद मग्न
आन: (स्त्री०), मर्यादा, गौरव की भावना
आर्द्र: (वि०), नम, गीला, भीगा
आशंका: (स्त्री०), भय, खतरा, अनिष्ट की संभावना
आश्वासन: (पु०), भरोसा, धैर्य देना

इंडस्ट्रियल डायमंड: (पु०), उद्योग-धंधों में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का हीरा
इनकलाब: (पु०), क्रांति

उजड्डपन: (पु०), गँवारपन, उद्दंडता

उपजि: (क्रि०), उत्पन्न
उदधि: (पु०), समुद्र
उबारना: (क्रि०), बचाना, उद्धार करना
उबाल: (पु०), जोश, क्रोध आदि का भड़कना
उर: (पु०), हृदय, छाती
उल्लेखनीय: (वि०), कहने के योग्य, उल्लेख करने योग्य

ऊँघती-सी झोंपड़ी: चहल-पहल से रहित घर,
ऊतक: (पु०), शरीर के तंतु, कोशिकाओं का बना अंग

एमामा: (पु०), साफा, छोटी पगड़ी
एक सौ: (अ०), एक समान

ऐब: (पु०), दोष, बुरा

ओतप्रोत: (पु०), परिपूर्ण, भरपूर
ओदन: (पु०), पका हुआ चावल, भात

कँगला: (वि०), कंगाल, निर्धन
कटुता: (स्त्री०), कड़वापन
कंठ लगायो: (ब्रज०), स्नहे से गले लगा लिया
कथित: (वि०), कहा गया
कनिष्ठ: (वि०), छोटा, उम्र या पद में छोटा
कमरिया: (ब्रज०) (स्त्री०), छोटा कंबल, कमली
करिश्मा: (फ़ा०) (स्त्री०), चमत्कार, करामात
कर्कशता: (स्त्री०), कठोरता
कलसी: (स्त्री०), छोटा घड़ा, गगरी
कलुषित पर्दा: गुलामी का भाव
कसौटी: (स्त्री०), परख, वह पत्थर जिसपर सोना परखा जाता है
काँवरि: (स्त्री०), काँवर, बहँगी, रस्सी में बँधी हुई छोटी मटकी
कारगर: (वि०), सफल, असर करनेवाला
कारनामा: (फ़ा०) (पु०), करतूत, निंदा योग्य काम
कालगति: (स्त्री०), मृत्यु
काहू की: (सर्व०), किसी की
किरकिरी करना: (मु०), रोकना, असफल करना
कीर्तिगायन: (स्त्री०), प्रशंसा के गीत
कीर्तिपताका: (स्त्री०), ख्याति, यश का ध्वज
कीर्तिमान: (पु०), रिकार्ड, प्रसिद्धि
कुपित: (वि०), क्रोधित, नाराज़, अप्रसन्न
कुलाँच: (स्त्री०), छलाँग, चौकड़ी
कुसंग: (पु०), बुरी संगति, बुरों का संग

कुसल: (पु०), कल्याण, भला
कूच करना: (क्रि०), सेना का युद्ध के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना
कृतज्ञता: (स्त्री०), आभार, किए हुए उपकार को मानना
केहिविधि: (ब्रज), किस प्रकार
कोंकणी: (स्त्री०), कोंकण प्रदेश की
कोटि-कोटि कंठों में कूजित: करोड़ों स्वरों में गूँजता हुआ
कोय: (सर्व०), कोई
कोरी: (स्त्री०), यथार्थ से परे, नया
कौतूहल: (पु०) (कुतूहल), लीला, कोलाहल
क्रूरता: (स्त्री०), निर्दयता, कठोरता
क्लेश: (पु०), दुख, कष्ट
क्षेत्ररक्षण: (क्रि०), फील्डिंग

खरहरा: (पु०), घोड़े के रोएँ साफ़ करने के लिए दाँतेदार कंघी
खून उतर आना: (मु०), जोश में आ जाना, अधिक क्रोधित होना
खैहौं: (क्रि०), खाऊँगा
ख्याति: (स्त्री०), प्रसिद्धि

गटकना: (स० क्रि०), पीना
गश: (पु०), बेहोश, मूर्च्छा
गाथा: (स्त्री०), कथा, वृत्तांत

गुप्तचर: (पु०), जासूस, छिपकर टोह लेने वाला
गुमसुम: (वि०), चुपचाप, कुछ भी न बोलना
गुर: (पु०), युक्ति
गोद सूनी करना: (मु०), किसी के सभी बच्चों की हत्या कर देना
गोय: (क्रि०), छिपाकर
ग्रेजुएट: (पु०), स्नातक
ग्रेनाइट: (पु०), कठोर पत्थर का एक प्रकार

घड़ी: (स्त्री०), चौबीस मिनट का समय
घमासान: (पु०), घमसान, भयंकर, भीषण
घरोबा: (पु०), घरेलू संबंध
घिग्घी बँध जाना: (मु०), भयभीत होने पर मुँह से ठीक प्रकार से शब्द न निकलना

चयनकर्ता: (वि०), चुनाव करने वाला
चाप: (स्त्री०), पैरों की आवाज़
चारण: (पु०), भाट, जो राजा का यशोगान करते हैं, बंदीजन
चार्ज: (पु०), अधिकार
चित्ताकर्षक: (वि०), मनमोहक, लुभाने वाला
चित्रा: (स्त्री०), चित्रांगदा, पांडुपुत्र अर्जुन की पत्नी, जो मणिपुर के राजा की पुत्री थी
चुग्गा: (पु०), खाना, दाना, पक्षियों का भोजन

छबीली: (वि०), बाजीराव पेशवा द्वारा लक्ष्मीबाई को प्यार से दिया गया नाम
छापामार युद्ध: अचानक हमला करके दुश्मन को हानि पहुँचाना
छीका: (पु०) (छींका), रस्सी, तार आदि की बनी झोली जैसी चीज़ जिसे छत आदि से लटकाकर उसमें खाने-पीने की सामग्री रखते हैं

ज़ख्मी: (वि०), घायल, जिसको चोट लगी हो
जघन्य: (वि०), नीच, निंदा करने योग्य
जनमत: (क्रि०वि०), जन्म लेते ही
जनश्रुति: (स्त्री०), लोक प्रचलित, अफ़वाह
जनि: (अ०), मत, नहीं
ज़बानी: (वि०), कंठस्थ, मौखिक
जस: (पु०), यश, कीर्ति
जानि: (वि०), जानकर
जायज़ा: (पु०), परख, जाँच-पड़ताल
जायो: (ब्रज), पुत्र, संतान
जिय: (पु०), हृदय, मन
जिस्म: (पु०), शरीर, बदन
जीवंत: (वि०), जीता-जागता, प्राणवान
जु: (ब्रज), जो, यदि
जुझारु: (वि०), संघर्षशील
जौहर: (पु०), कुशलता का प्रदर्शन

ज्योतिर्मय: (वि०), प्रकाशयुक्त

झकोरा: (स० क्रि०), ज़ोर से हिलाया
झरि: (अ० क्रि०), झड़ जाना, नष्ट होना
झेलना: (स०क्रि०), सहन करना, बर्दाश्त करना

टिकना: (अ० क्रि०), ठहरना, कुछ समय के लिए रुकना
टिड्डीदल: (पु०), बड़ा झुंड, एक प्रकार का उड़ने वाले कीड़ों का झुंड, जो लाखों की संख्या में बहुत बड़ा दल बाँधकर चलते हैं और पेड़-पौधों को बड़ी हानि पहुँचाते हैं।
टीका-टिप्पणी: (स्त्री०), आलोचना करना, गुण-दोष आदि का विवेचन
टोटा: (पु०), कमी, घाटा
ट्रस्ट: (पु०), वह धन या संपत्ति जो कुछ विश्वस्त व्यक्तियों को इस दृष्टि से सौंपी गई हो कि वे दाता की इच्छानुसार उसकी उचित देखभाल करेंगे, न्यास

ठिठकना: (अ० क्रि०), स्तब्ध होना, बिलकुल स्थिर हो जाना

डग: (पु०), कदम, पैर

डाँड़: (पु०), चप्पू, नाव खेने का डंडा
डारि: (स०क्रि०), फेंक देना

ढकेलना: (अ०क्रि०), धक्का देना

तकनीक: (स्त्री०), विधि, तरीका
तकियाकलाम: (पु०), वह शब्द या वाक्यांश जो बातचीत के बीच कुछ के मुँह से प्रायः निकला करता है, सखुनतकिया
तन्मयता: (स्त्री०), किसी समय में लीन होने का भाव, तल्लीनता, एकाग्रता
तपस्वी: (पु०), तपस्या करने वाला, साधना करने वाला
तर: (ब्रज), (अ०) नीचे
तिनके: (ब्रज), (सर्व०) उनके
तिलावत: (स्त्री०), कुरान पाठ, धर्मग्रंथ को पढ़ना
त्रस्त: (वि०), डरा हुआ
त्राहि-त्राहि करना: (अ०), बेबस होकर रक्षा के लिए पुकारना
त्रुटि: (स्त्री०), कमी, भूल-चूक
त्वचा: (स्त्री०), खाल, चमड़ा

थाती: (स्त्री०), धरोहर, संचित धन, पूँजी

द

दंपती: (पु०), पति-पत्नी का जोड़ा
दक्षता: (स्त्री०), निपुणता, कुशलता
दत्तक पुत्र: (पु०), अपना पुत्र न होने पर किसी दूसरे के पुत्र को विधि अनुसार अपना पुत्र बना लेना
दधि: (पु०), दही
दहलना: (अ०क्रि०), हिलना, काँपना
दरस: (पु०), दर्शन, मुलाकात, भेंट
दाग लगना: (मु०), कलंक लगना
दायी: (वि०), उत्तरदायी, ज़िम्मेदार
दिग्गज: (पु०), (दिक्+गज): दिशाओं के रक्षक, पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए स्थापित है। इनके नाम हैं– ऐरावत, पुंडरीक, वामन, अंजन, कुमुद, पुष्पदंत, सार्वभौम और सप्रतीक
दिव्य: (वि०), अलौकिक, बहुत ही बढ़िया, भव्य
दीन-हीन: (वि०), आत्म-सम्मान रहित
दुर्भावना: (स्त्री०), (दुः+भावना), बुरे विचार, बुरी भावना
दृष्टिकोण: (पु०), सोचने का ढंग, विचार
दोषारोपण: (पु०), (दोष+आरोपण), किसी पर दोष लगाना
द्वंद्व युद्ध: (पु०), दो व्यक्तियों में युद्ध, कुश्ती

धक्का: (पु०), दुख या शोक का आघात
धनि: (वि०), धन्य
धारी: (क्रि०), धारण की
धावा: (पु०), हमला, आक्रमण
धुन का धनी: (मु०), लगनशील, लगन का पक्का
धुरंधर: (वि०), श्रेष्ठ, प्रधान, अग्रगण्य
धूमकेतु: (पु०), पुच्छलतारा

नक्षत्र निकर: (पु०), तारों का समूह या झुंड
नत: (वि०), झुका हुआ
नहैहौं: (ब्रज), नहाऊँगा
नाईं: (अ०), की तरह, समान
नाकाबंदी: (स्त्री०), घेरा डालना, घेराबंदी
नाकों चने चबवाना: (मु०), बहुत परेशान करना
नाच नचायो: (ब्रज), परेशान किया
नाद विज्ञान: (स्त्री०), ध्वनि विज्ञान
नाना: (वि०), तरह-तरह, अनेक प्रकार के
निंदक: (वि०), बुराई करने वाला, दोष बताने वाला
नि:संग: (वि०), बिना लगाव के, निर्लिप्त
नि:संतान: (वि०), संतानरहित, जिसके बच्चे न हो
निरंतर: (वि०) (नि:+अंतर), लगातार, अविच्छिन्न

निरस्त्र: (वि०) (निः+अस्त्र), बिना हथियार के, निहत्था
निर्जन: (वि०) (निः+जन), सुनसान, जहाँ कोई न हो
निर्दिष्ट: (वि०), बताए हुए, जिसकी ओर निर्देश या संकेत किया गया हो
निर्द्वंद्व: (वि०), (निः+द्वंद्व), स्वच्छंद, बिना किसी रुकावट के, हर्ष, शोक आदि द्वंद्वों से मुक्त
निर्मम: (वि०), (निः+मम), कठोर, जालिम, क्रूर
निष्ठावान: (वि०), विश्वास रखने वाला
निस्संतान: (वि०), (निः+संतान), संतान रहित
नींद हराम करना: (मु०), बहुत परेशान करना, चैन छीन लेना
नुक्ताचीनी: (स्त्री०), दोष निकालना, छिद्रान्वेषण
नेकनामी: (स्त्री०), अच्छाई, यश
नौटंकी: (स्त्री०), उत्तर भारत में खेला जाने वाला एक लोक नाट्य
नौबत खाना: (पु०), द्वार या फाटक के ऊपर का वह स्थान जहाँ बैठकर शुभ अवसरों पर बाजा (शहनाई आदि) बजाया जाता है

पंक: (पु०), कीचड़
पठायो: (ब्रज), भेज दिया
पताका: (स्त्री०), झंडा, ध्वज
पतियायो: (ब्रज), विश्वास कर लिया
पदच्युत: (वि०), जो अपने पद या स्थान से हटाया गया हो
परवाना: (पु०), आज्ञा-पत्र, फरमान
परिजन: (पु०), संबंधी, अपने सगे लोग
परिपक्व: (वि०), पूर्णतया कुशल, पूर्ण विकसित

पर्यटक: (पु०), सैलानी, यात्री, देश-विदेश में घूमने वाला

पांडव आए कुछ और निखर: वनवास के कष्टों को झेलते-झेलते पांडवों की शक्ति और बढ़ गई

पाँव: (पु०), पैर, चरण

पाय: (स०क्रि०), पाने पर, प्राप्त होने पर

पित्त: (पु०), आयुर्वेद ने मानव शरीर में वात, पित्त और कफ़ तीन द्रव माने हैं, उनमें से किसी भी एक का संतुलन बिगड़ जाने पर शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। पित्त भोजन को पचाने में मदद करता है।

पूर्णाहुति: (पु०), (पूर्ण+आहुति), समापन,यज्ञ या किसी अन्य कार्य की समाप्ति के समय किया जाने वाला अंतिम कार्य, बलिदान

पूर्वापर: (वि०), पहले और पीछे का

पैठना: (अ०कि०), घुसना, प्रवेश करना

पैतृक: (वि०), पिता द्वारा दिया गया, पुश्तैनी, पुरखों का

पैहौं: (ब्रज), पाऊँगा

पोखर: (पु०), तालाब

पोहिए: (क्रि०), पिरोइए

प्रकृति: (स्त्री०), स्वभाव, मिजाज़

प्रखर: (वि०), प्रचंड, तेज़

प्रतिध्वनि: (स्त्री०), टकराकर लौटी हुई ध्वनि, गूँज

प्रतिबंध: (पु०), रोक, वह रोक जो किसी काम, बात या व्यक्ति पर लगाई जाए

प्रतिभा: (स्त्री०), विलक्षण बुद्धि, असाधारण योग्यता

प्रतिष्ठित: (वि०), विराजमान, प्रतिष्ठा प्राप्त

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का सूर्यास्त: आज़ादी की पहली लड़ाई जो 1857 में अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध लड़ी गई थी उसकी समाप्ति यानि उसमें हमारी पूरी हार

प्रशिक्षण: (पु०), ट्रेनिंग, किसी विशेष कार्य, व्यवसाय के लिए व्यावहारिक ज्ञान एवं आवश्यक कौशल प्राप्त करना

प्रामाणिक: (वि०) (प्रमाण+इक), जो प्रमाणों से साबित हो, जो प्रमाण के रूप में माना जाता है

फिरंगी: (पु०), अंग्रेज़

फोकस: (पु०), किसी वस्तु को ठीक से देख सकने के लिए डाली गई केंद्रित रोशनी

बंद आँख से देखना: (मु०), देखकर अनदेखा करना

बंदी: (पु०), वंदना करने वाला, भाट, चारण

बँहियन: (ब्रज०), बाँहें, हाथ

बट: (पु०), वट, बरगद का पेड़

बटेर: (स्त्री०), तीतर की जाति का एक पक्षी

बटेरबाज़ी: (स्त्री०), बटेर लड़ाने का खेल,

बड़ेन: (वि०), बड़ों

बधैया: (स्त्री०), बधाई, उत्सव, शुभ अवसर पर गाना-बजाना

बरबस: (क्रि०वि०), बलपूर्वक, जबरदस्ती

बसंती: (वि०), वसंतु ऋतु की

बसि: (अ०क्रि०), बस कर

बस्यो: (क्रि०), बसा था

बाँका: (वि०), अनोखा, सुंदर

बाई: (स्त्री०), महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान में महिलाओं के लिए प्रयुक्त आदर सूचक शब्द, जैसे: लक्ष्मीबाई, जीजाबाई
बाग: (स्त्री०), लगाम, रास
बारीकी से सर्वेक्षण: भलीभाँति छानबीन करना
बावली: (वि०), पगली, विक्षिप्त
बिछोह: (पु०), वियोग, किसी प्रिय से अलग होना
बिथा: (स्त्री०), (व्यथा), पीड़ा, दुख
बिपति: (स्त्री०), विपत्ति, संकट, मुसीबत
बिरानी: (स्त्री०), (वीरानी), पराई, बरबादी और तबाही के कारण वीरान होना
बिहँसि: (अ०क्रि०), हँसकर, प्रफुल्ल होकर
बेजोड़: (वि०), जिसके समान कोई न हो, अतुलनीय
बेदम हो जाना: (मु०), अत्यधिक थक जाना
बेहतर: (वि०), उत्तम, बहुत अच्छा
बैर परे हैं: (ब्रज), (चिढ़ाने के लिए) पीछे पड़े हैं

भगिनी: (स्त्री०), बहन
भटक्यो: (अ०क्रि०), घूमता फिरा
भयो: (ब्रज), हुआ
भरिया फूटा फोड़ा: (पु०), ऐसा फोड़ा, जो बार-बार पके और फूटे
भाना: (अ०क्रि०), अच्छा लगना
भीमकाय: (वि०), विशाल शरीर वाला, भीम जैसे शरीर वाला
भीषण: (वि०), भयानक, डरावना
भुजंग: (पु०), साँप, सर्प
भूशायी होना: (क्रि०), मर जाना, मृत्यु को प्राप्त होना

भेद: (पु०), संदेह, फर्क

भोर: (पु०), प्रातःकाल, सवेरा

भोरी: (वि०), भोली, सीधी-सादी

भ्रांति: (स्त्री), भ्रम, संदेह

मंत्रमुग्ध: (वि०), वशीभूत, वश में किया हुआ

मंदहास: (पु०), धीमी हँसी

मंदाग्नि: (स्त्री०), (मंद+अग्नि), भूख न लगना, एक रोग जिसमें अन्न नहीं पचता

मचल-मचल कर बहना: चंचलता के साथ बहना

मज़ार: (पु०), किसी मुसलमान संत-महात्मा की कब्र

मजाल: (स्त्री०), सामर्थ्य, शक्ति, साहस

मति: (स्त्री०), बुद्धि

मर्द बनी मर्दानों में: वीरों में वीर बनी

मर्दानी: (वि०), पुरुष गुणों से युक्त, बहादुर

मशक: (पु०), भेड़ या बकरी की खाल को सी कर बनाया हुआ थैला, जिसे पानी लाने और ढोने के लिए प्रयोग किया जाता है

मस्तमौला: (वि०), आज़ाद तबियत का, सदा प्रसन्न रहने वाला

महत्त्वाकांक्षी: (वि०), बड़ा बनने की अभिलाषा रखने वाला

महर: (पु०), नंद, ब्रज मंडल में प्रचलित एक आदर सूचक उपाधि, मुखिया

महरौली: (स्त्री०), दिल्ली के दक्षिण में स्थित ऐतिहासिक स्थान जहाँ कुतुब-मीनार है। यहाँ अनेक महल थे जो अब खंडहर-रूप में रह गए है। इन महलों में बहुत-सी महराबें बनी होने के कारण मेहरावली प्राचीन नाम था, जो अब महरौली हो गया है

महिमा: (स्त्री०), यश
महुआ: (पु०), एक विशाल वृक्ष जिसके फूल एवं फल खाने के काम आते हैं
माँग का सिंदूर पोंछना: (मु०), विधवा बना देना
मातम-पुरसी: (स्त्री०), शोक प्रकट करना, किसी के मरने पर मनाया जाने वाला शोक जिसमें लोग मृतक के घर जाते हैं और मृतक के गुणों का वर्णन करते हैं और परिवारजनों को सांत्वना देते हैं
मातहत: (पु०), अधीनस्थ, उच्च अधिकारी के नीचे काम करने वाला
मातृत्व: (पु०), माँ का प्रेम
मार्मिक: (वि०), हृदय को छूने वाला, जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े
माहिर: (वि०), कुशल, निपुण, विशेषज्ञ
मीठी चुटकी लेना: (मु०), हँसी-हँसी में व्यंग्य करना
मीत: (पु०), मित्र, दोस्त
मुँह की खाना: (मु०), हार जाना, पराजित होना
मुँह बोली: (स्त्री०), मानी हुई
मुक्त: (वि०), आज़ाद
मुक्ताहार: (पु०), मोतियों की माला
मुक्ति: (स्त्री०), आज़ादी, स्वतंत्रता
मुदित: (क्रि०), प्रसन्न, खुश
मुसाफिर: (पु०), यात्री, पर्यटक
मूल: (पु०), जड़, आरंभ
मृदुल: (वि०), कोमल, मधुर
मोटा: (वि०), अधिक, पर्याप्त

यंत्र: (पु०), मशीन
यथोचित: (वि०), (यथा+उचित), जितना उचित हो
याचना: (क्रि०), प्रार्थना, माँगना
योगमाया मंदिर: योगमाया यशोदा और नंद की पुत्री थी, जिसे वसुदेव ने कंस को श्रीकृष्ण के स्थान पर दिया था। कंस ने उसे मारने के लिए उछाला था, किंतु योगमाया कंस के हाथों से छूटकर आकाश में उड़ गई थी। उसी देवी का मंदिर महरौली में बना है।

रक्तिम: (वि०), लाल, ललाई के लिए हुए
रस-विष: (पु०), अमृत और विष, सुख और दुख
राजतरंगिणी: (स्त्री०), कश्मीर के प्रसिद्ध संस्कृत कवि कल्हण की रचना
राजद्रोही: (पु०), वह जिसने राजसत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया हो
रात-दिन एक करना: (मु०), निरंतर प्रयत्न करना,
रीत: (स्त्री०), रीति, प्रकार, तरीका
रुग्न: (वि०), रुग्ण, अस्वस्थ, बीमार
रूपांतरण: (पु०), एक रूप से दूसरे रूप में बदलना
रेती: (स्त्री०), घिसने के लिए प्रयुक्त एक तरह का दानेदार औज़ार
रोमांचक: (वि०), आश्चर्य, भय, हर्ष आदि के कारण रोंगटे खड़ा कर देने वाला, रोमांचकारी
रोमावलि: (स्त्री०), (रोम+अवलि), रोमों की पंक्ति

लकुटि: (स्त्री०), छोटी लाठी, छोटा डंडा
लखना: (स०क्रि०), देखना
लट्टू होना: (मु०), मुग्ध होना, किसी वस्तु या व्यक्ति पर पूरी तरह मोहित होना
लट्ठ मारना: (मु०), बोली में कठोरता होना, कर्कश शब्द बोलना।
लावारिस: (पु०), बिना उत्तराधिकारी का
लुप्त: (वि०), समाप्त, गायब
लुभाना: (अ०क्रि०), आकर्षित करना, मोहित होना
लोहा लेना: (पु०), मुकाबला करना, टक्कर लेना

वक्ता: (वि०), बोलने वाला,
वर्जित: (वि०), निसिद्ध, मना
वन-महोत्सव: (पु०), (वन+महा+उत्सव), वृक्षों और वनों के अंधाधुंध काटे जाने से उत्पन्न अभाव को पूरा करने के लिए सरकार ने वृक्षारोपण का व्यापक कार्यक्रम बनाया है, जिसमें प्रत्येक वर्ष जुलाई के प्रथम सप्ताह में देशभर में वृक्ष लगाए जाते है
वमन: (पु०), कै, उल्टी
वह्नि: (स्त्री०), अग्नि, आग
वायस: (पु०), कौआ
वार पर वार: (मु०), हमले पर हमला
वारिस: (पु०), उत्तराधिकारी, मृत्यु के बाद संपत्ति का अधिकारी
विकट: (वि०), भयंकर, कठिन

विकराल: (वि०), भयंकर, भीषण
विधि: (पु०), ईश्वर, (स्त्री०) प्रणाली
विध्वंस: (पु०), विनाश, क्षति
विरुदावलि: (स्त्री०), (विरुद+अवलि), बड़ाई, यशोगान
विलक्षण: (वि०), अद्‌भुत
विवेक: (पु०), उचित-अनुचित परखने की क्षमता
विशद: (वि०), स्पष्ट, साफ़
विषम: (वि०), जटिल, विकट
विहग: (पु०), पक्षी, चिड़िया
वीरगति प्राप्त होना: (मु०), युद्ध में लड़ते-लड़ते प्राण दे देना
वीरांगना: (स्त्री०), वीर स्त्री
वैधव्य: (पु०), विधवापन
वैभव: (पु०), ऐश्वर्य, धन-दौलत
वैभवशाली: (वि०), ऐश्वर्यपूर्ण, अत्यधिक समर्थ
व्यर्थता: (वि०), निरर्थकता, अनुपयोगिता
व्यापना: (अ०क्रि०), व्याप्त होना, प्रभाव डालना

शल्य-चिकित्सा: (स्त्री०), ऑपरेशन, चीर-फाड़ द्‌वारा इलाज
शस्त्र: (पु०), हथियार, हाथ से पकड़कर प्रयोग लिए जाने वाले हथियार
शहतीर: (पु०), लंबी-चौड़ी लकड़ी का बहुत बड़ा और लंबा लट्‌ठा
शहादत: (स्त्री०), गवाही, सबूत
शावक: (पु०), सिंह का बच्चा

शिकारा: (पु०), कश्मीरी ढंग की लंबी नाव जिसके बीच में बैठने का स्थान छायादार होता है

शिविर: (पु०), छावनी, सैनिक पड़ाव

शुल्क: (पु०), फ़ीस, कर

शृंखला: (स्त्री०), कड़ी, सिलसिला

शृंगार: (पु०), शोभा, शरीर आदि पर ऐसी चीज़ें लगाना जिससे सुंदरता और भी बढ़ जाए

शृगाल: (पु०), गीदड़, सियार

संग्रहालय: (पु०), वह स्थान जहाँ विशेष प्रकार की वस्तुओं का संग्रह किया गया हो, अजायबघर, म्यूज़ियम

संचार: (पु०), प्रभाव, फैलना

संवाददाता: (पु०), समाचार देने वाला

सक्षम: (वि०), क्षमता वाला, प्रभावी, समर्थ

सगा: (वि०), अपना सहोदर

सजीव: (वि०), जीता-जागता, जीवंत

सदाव्रत: (पु०), प्रसाद, दीन-दुखियों को मुफ़्त भोजन देना

सद्भाव: (पु०), अच्छी भावना, शुभ भाव

सनद: (पु०), डिग्री, उपाधि, प्रमाणपत्र

सभापतित्व: (पु०), सभा की अध्यक्षता, सभापति का पद या कार्य

समर्पण: (पु०), भेंट करना

समीक्षक: (पु०), समालोचक, समालोचना करने वाला

समृद्धिशाली: (वि०), धनवान, संपन्न

सरना: (अ०क्रि०), हल होना, पूरा होना

सरासर: (अव्य०), पूरी तरह, पूर्णतया

साँझ: (स्त्री०), संध्या, शाम

सांत्वना: (स्त्री०), तसल्ली, संतुलन, दुखी-व्यक्ति के दुख को कम करने के लिए समझाना-बुझाना

सांप्रदायिक एकता का प्रतीक: विभिन्न मतों के मानने वालों के बीच मेल दर्शाने वाला

साखि: (पु०), साक्षी, गवाह

सात्विक: (वि०), नेक, सादा, सत्वगुण संपन्न

साम्य: (पु०), समानता, समान होने का भाव

सीमेंट का काम करना: (मु०), जोड़ने का काम करना

सुभट: (प्र०), वीर, योद्धा

सुमंगल: (वि०), कल्याण

सुहित: (पु०), भलाई, उपकार

सैन्य: (पु०), सेना, सेना की टुकड़ी

सो: (सर्व), वह

सोस: (पु०), अफ़सोस

सौंह देहुँ: (ब्रज), सौगंध, क़सम खाता हूँ

स्निग्ध: (वि०), प्यार, स्नेह

स्रष्टा: (पु०), सृष्टि को रचने वाला, निर्माता, ईश्वर

स्वत: (अव्य०), स्वयं, अपने आप

स्वरूप विस्तार: (पु०), आकार बढ़ाना, छोटे से शरीर को अति विशाल रूप में बढ़ाना

स्वर्णिम: (वि०), (स्वर्ण+इम), सुनहला, सोने की

स्वाँग: (पु०), पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में प्रचलित एक लोक नाट्य

हक्सले: (पु०), एक अंग्रेज़ दार्शनिक, जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था
हठात्: (प्रत्य०), हठपूर्वक, बलपूर्वक
हड़पना: (स०क्रि०), छीनना, जबरदस्ती ले लेना
हरषाया: (अ०क्रि०), प्रसन्न हुआ
हरसूँ: (क्रि०वि०), भरसक, हर प्रकार से, पूरी ताकत से
हरारत: (स्त्री०), बुखार, हलका ज्वर
हरित: (वि०), हरा
हलका: (पु०), इलाका, कई मुहल्लों, गाँवों का समूह जो प्रशासन की दृष्टि से नियत किया जाता है
हलधर: (पु०), हल हो धारण करने वाला, बलराम
हवस: (स्त्री०), अतितीव्र इच्छा, न बुझनेवाली भूख
हाथ धोना पड़ा: (मु०), छोड़ना पड़ा, खो देना पड़ा
हिंस्र: (वि०), खूँखार, खतरनाक
हुंकार: (पु०), गर्जना, ललकार
हृदय पर साँप लोटना: (मु०), ईर्ष्या होना, बेचैन होना
हौं: (सर्व०), मै